مكتبة المدينة
MAKTABA TUL MADINA
MC 1286

SAHABA E KIRAM KA ISHQE RASOOL (HINDI)

तख़रीज शुदा

सह़ाबए किराम رضی اللہ عنہم का इ़श्क़े रसूल صلی اللہ علیہ وسلم

- अ़लामाते मह़ब्बत
- शौक़े दीदार
- ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ का इ़श्क़
- ह़ज़रते ख़ब्बाब رضی اللہ عنہ की जली हुई पीठ
- इ़श्क़ो वफ़ा का अ़जीब मन्ज़र
- ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ عنہ का फ़ैसला
- ग़सीलुल मलाइका
- शौक़े शहादत
- रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم सह़ाबए किराम رضی اللہ عنہم की नज़र में

المدينة العلمية
(دعوتِ اسلامی)
شعبہ تخریج

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

ता़लिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ىُ	ु = وُ	आ = آ	य = ى	ह = ه	व = و	न = ن

सहाबए किराम رضی اللہ تعالیٰ عنہم के इश्के़ रसूल صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم
के वाकि़आत पर मुश्तमिल तालीफ़

सहाबए किराम ﷺ का इश्के़ रसूल ﷺ

-: मुअल्लिफ़ :-
मौलाना मुह़म्मद अकरम रज़वी

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
(शो'बए तख़रीज)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, अह़मदाबाद - 1

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : सहाबए किरामؓ का इश्के रसूलﷺ

मुसन्निफ़ : मौलाना मुहम्मद अकरम रज़्वी

पेशकश : शो 'बए तख़रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

तबाअ़ते अव्वल : जमादिल आख़िर, सि. 1435 हि.

तबाअ़ते दुवुम : रबीउ़ल अव्वल, सि. 1440 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, अहमदाबाद – 1

–: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :–

- ..... अजमेर : **मक्तबतुल मदीना,** 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385
- ..... बरेली : **मक्तबतुल मदीना,** दरगाह आ'ला हज़रत, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994
- ..... गुलबर्गा : **मक्तबतुल मदीना,** फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503
- ..... बनारस : **मक्तबतुल मदीना,** अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101
- ..... कानपुर : **मक्तबतुल मदीना,** मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045
- ..... कलकत्ता : **मक्तबतुल मदीना,** 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212
- ..... नागपुर : **मक्तबतुल मदीना,** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099
- ..... अनंतनाग : **मक्तबतुल मदीना,** मदनी तरबियत गाह, टाउन होंल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438
- ..... सुरत : **मक्तबतुल मदीना,** वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861
- ..... इन्दोर : **मक्तबतुल मदीना,** शोंप नम्बर 13, बोंम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692
- ..... बेंग्लोर : **मक्तबतुल मदीना,** शोंप नं. 13, जामिअ़ा हज़रत बिलाल, 9th मेन पिल्लाना गार्डन, 3rd स्टेज, बेंग्लोर 45, कर्नाटक : 08088264783
- ..... हुबली : **मक्तबतुल मदीना,** ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحۡسَانِہٖ وَبِفَضۡلِ رَسُوۡلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तबलीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का कि़याम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब

(3) शो'बए इस्लाही कुतुब (4) शो'बए तख़रीज

(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तराजिमे कुतुब

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक, 1425 हि.

पेशे लफ़्ज़

हर नबी और रसूल عَلَيْهِ السَّلَام के जां निसारों और ह़वारियों ने अपनी मह़ब्बत व वफ़ादारी का सुबूत देते हुए अपने नबी की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में कोई दक़ीक़ए फ़रोग ज़ाश्त न छोड़ा। लेकिन तारीख़ गवाह है कि रसूले अकरम, नबिये मोह़तरम, सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अपने वालिहाना इश्क़ो मह़ब्बत से सरशार हो कर जिस शानदार अन्दाज़ में अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी अ़क़ीदत का इज़्हार किया उस की नज़ीर नहीं मिल सकती।

जंगे बद्र के मौक़अ़ पर ह़ुज़ूरे अक़्दस, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के साथ मश्वरा फ़रमाया और लश्करे कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में जंगो क़िताल के मुतअ़ल्लिक़ उन की राए त़लब फ़रमाई तो ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा की क़सम आप हमें अ़दन तक ले जाएंगे तो हम अन्सार में से कोई एक शख़्स भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करेगा।

ह़ज़रते मिक़्दाद बिन अ़म्र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने यूं अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम आप के साथ हैं आप जहां चाहें हमें ले जाएं हम कभी भी वोह बात अपने मुंह से न निकालेंगे जो बनी इस्राईल ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से कही थी कि

فَاذْهَبْ اَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾ (پ ۶، المائدۃ: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं।*

क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हक़ के साथ भेजा हम आप के साथ जाएंगे और जहां आप जाएंगे आप के साथ मिल कर मर्दाना वार लड़ेंगे।

(مدارج النبوت،قسم سوم،باب دوم، مذکور جنگ بدر، ج۲،ص۸۳)

इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के दिलों की धड़कन बन चुका था अपने महबूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत व ग़ुलामी में इतने मुन्हमिक और मुस्तग़रक़ हो चुके थे कि उन्हें दुन्या की किसी चीज़ और किसी निस्बत से कोई ग़रज़ न थी। वोह सब कुछ बरदाश्त कर सकते थे लेकिन उन्हें कभी येह गवारा न था कि कोई उन के दिलों के चैन, रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अक़्दस में अदना सी बे अदबी की जुरअत करे चुनान्चे

उ़रवह बिन मसऊ़द (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) कहते हैं कि जब क़ुरैश ने उन्हें (ईमान लाने से पहले) सुल्ह़े हुदैबिया के साल, नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, उन्हों ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे पनाह ता'ज़ीम देखी, उन्हों ने देखा कि नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी वुज़ू फ़रमाते तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان वुज़ू का पानी हासिल करने के लिये बेहद कोशिश करते ह़त्ता कि क़रीब था कि वुज़ू का पानी न मिलने के सबब लड़ पड़ें। उन्हों ने देखा कि नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दहने मुबारक या बीनी मुबारक का पानी डालते तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उसे हाथों में लेते, अपने चेहरे और जिस्म पर मलते और आबरू पाते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई बाल जसदे अत़हर से जुदा नहीं होता था मगर उस के ह़ुसूल के लिये जल्दी करते, जब

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें कोई हुक्म देते तो फ़ौरन ता'मील करते और जब नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू फ़रमाते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ख़ामोश रहते और अज़ राहे ता'ज़ीम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ आंख उठा कर न देखते। (الشفاء، الباب الثالث، ج۲، ص٦٩)

जब उ़रवह बिन मसऊ़द मुश्रिकों के गुरोह में वापस गए तो उन्हें कहा कि ऐ गुरौहे क़ुरैश ! मैं बड़े बड़े मुतकब्बिर व मग़रूर सलात़ीन व बादशाहों की मजलिसों में रहा हूं और उन की सोह़बतें उठाई हैं। मैं क़ैसरो किस्रा और नज्जाशी के दरबारों में गया हूं और रहा हूं लेकिन मैं ने इन में से किसी भी बादशाह के किसी भी ख़िदमत गार को ऐसा अदबो एह़तिराम करते नहीं देखा जैसा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब उन का अदबो एह़तिराम करते हैं। जब वोह अपने दहने मुबारक से लुआ़ब शरीफ़ निकालते हैं तो सह़ाबा (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) उसे अपने हाथों में ले कर अपने रुख़्सारों पर मलते हैं, जब किसी अदना और मा'मूली काम का हुक्म देते हैं तो उस की ता'मील के लिये बुज़ुर्ग तरीन सह़ाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم भी सबक़त करते हैं, जब उन के ह़ुज़ूर कोई बात करता है तो वोह आवाज़ को पस्त कर के बात करता है और जब वोह गुफ़्तगू फ़रमाते हैं तो तमाम लोग इन्तिहाई अदबो एह़तिराम के साथ सुनते हैं और निगाह मिला कर बात नहीं करते, उन के रूए मुबारक पर कोई निगाह नहीं जमा सकता, जब वुज़ू करते हैं तो वुज़ू का पानी ज़मीन पर नहीं गिरता बल्कि सह़ाबा (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم) लपक लपक कर उसे भी अपने हाथों पर ले लेते हैं, जब दाढ़ी शरीफ़ में और सरे अक़्दस में कंघी फ़रमाते हैं और कोई मुए मुबारक जिस्म शरीफ़ से अलग होता है तो उस बाल शरीफ़ को इ़ज़्ज़तो एह़तिराम के

साथ तबर्रुक जान कर ले लेते हैं और उस तबर्रुक की हिफ़ाज़त करते हैं। येह वोह हालात हैं जिन का मैं ने मुशाहदा किया है।

उ़रवह बिन मसऊ़द ने मज़्कूरा बाला बातें कहने के बा'द क़ौमे कुरैश के सामने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की शुजाअ़त, मर्दानगी, यक जेहती, जज़्बए जिहाद, शौक़े शहादत, आपस में एक दूसरे के साथ ईसार व मह़ब्बत का जज़्बा वग़ैरा का ज़िक्र करते हुए अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ऐसा लश्कर देखा है जो तुम से कभी मुंह न मोड़ेगा, मैदाने जंग में येह तुम सब को मार डालेंगे और तुम पर ग़ालिब आ जाएंगे।

(مدارج النبوت، قسم سوم، باب ششم، ج ۲، ص ۲۰۷، ملخصاً)

इन वाक़िआ़त से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जज़्बए सादिक़ इयां हो जाता है। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अपने क़ल्बी लगाव और वालिहाना इश्क़ के आदाब की तक्मील में ईसार व कुरबानी की जो मिसालें पेश कीं वोह हमारे लिये मश्अ़ले राह हैं, आज भी अगर हम उन की पैरवी करें तो सीनों में इश्क़े रसूल की शम्अ़ फ़रोज़ां हो सकती है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ला ज़वाल दौलत से मालामाल फ़रमाए। आमीन।

ज़ेरे नज़र किताब "**सह़ाबए किराम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم **का इश्क़े रसूल** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के उस्वए ह़सना के वोह दरख़्शां वाक़िआ़त पेश करने की कोशिश की गई है जिन में सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे इ़ज़्ज़त

मआब में हाज़िरी का त़रीक़ा, उन की बारगाह का अदब, फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बजा आवरी में पेश क़दमी और जां निसारी की ह़सीनो दिलकश अदाएं बयान की गई हैं और आख़िर में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का बारगाहे रिसालत में "**ख़िराजे अक़ीदत**" पेश किया गया है कि किस त़रह़ इन्हों ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ बयान फ़रमाई है।

इन्हीं ख़ूबियों के पेशे नज़र "**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मौज़ूअ़ पर इस किताब का इन्तिख़ाब किया और त़बाअ़ते जदीदा के लिये इन उमूर का एहतिमाम किया : ★ किताब की नई कम्पोज़िंग ★ मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग ★ दीगर नुस्ख़ों से मुक़ाबला ★ ह़वाला जात की तख़्रीज ★ अ़रबी व फ़ारसी इ़बारात की दुरुस्तगी ★ पैराबन्दी ★ आयात का तर्जमा कन्ज़ुल ईमान के मुत़ाबिक़ और आख़िर में मआख़िज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त भी शामिल की गई है।

इन तमाम उमूर को मुमकिन बनाने के लिये "**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**" के मदनी उ़लमा ने बड़ी मेह़नत व लगन से काम किया और ह़त्तल मक्दूर इस किताब को अह़सन अन्दाज़ में पेश करने की सई की। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की येह मेह़नत और सई क़बूल फ़रमाए, इन्हें जज़ाए जज़ील अ़त़ा फ़रमाए और इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। اٰمِین بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

शो'बए तख़्रीज

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

(दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

नम्बर	उनवान	सफ़हा
1	पेशे लफ़्ज़	5
2	कलिमए आग़ाज़	16
3	मुक़द्दमा	22
4	ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم	27
	ता'ज़ीमो अदब	42
5	अ़लामाते मह़ब्बत	43
6	ता'ज़ीम	43
7	नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे अदबी कुफ़्र है	45
8	इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अबू जा'फ़र मन्सूर से मुकालमा	46
9	सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	47
10	ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और ता'ज़ीमे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	50
11	वाक़िआ़ते ता'ज़ीम	51
12	बे नज़ीर ज़ियाफ़त	53
13	शाहकारे ता'ज़ीम	54
14	अदबे सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	56
15	इ़ज़्ज़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मर मिटने का जज़्बा	57
16	गुस्ताख़ी की सज़ा	58
17	ता'ज़ीमे इरशादे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	60

www.dawateislami.net

18	शौके़ मुवाफ़क़त	67
19	ता'ज़ीमे तबर्रुकात	67
20	मोहरे नबुव्वत चूम ली	67
21	मूए मुबारक	69
22	लुआ़बे मुबारक	69
23	पसीनए मुबारक	70
24	अदब व बरकत अन्दोज़ी	72
25	मस्हे़ दस्त का कमाल	72
26	क़त्अ़ए पैराहन की तासीर	73
27	अ़साए मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बरकात	73
	इश्क़ो महब्बत	75
28	لَا یُؤْمِنُ اَحَدُ کُمْ	76
29	रिज़ाए रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये जज़्बए ईसार	81
30	ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जज़्बए जां निसारी	82
31	हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द दुन्या क़ाबिले दीद न रही	83
32	इज़्तिराबे इश्क़	83
33	**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बस	84
34	ह़ज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ	87
35	ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इश्के़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	88
36	ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और बारगाहे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	91

37	शौक़े रफ़ाक़त	92
38	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत	93
39	शौक़े दीदार	95
40	मह़ब्बत व फ़िदाइयत	97
41	ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मह़ब्बत और फ़िदाइयत	103
42	सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم इश्क़ो वफ़ा की इम्तिह़ान गाह में	106
43	ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का ह़ाल	106
44	ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का जज़्बए इस्लाम	109
45	ह़ज़रते अ़म्मार और उन के वालिदैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم	112
46	ह़ज़रते सुहैब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का इस्लाम	113
47	ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बहनोई और बहन (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا)	115
48	ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते रसूलिल्लाह (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) की हिजरत और वफ़ात	117
49	ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की जली हुई पीठ	119
50	ह़ज़रते अ़म्मार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه आग के कोइलों पर	120
51	हिजरते ह़बशा और शा'बे अबी त़ालिब	120
52	ह़ज़रते अबू सलमह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के ज़न व फ़रज़न्द	125
53	इश्क़ो वफ़ा का अ़जीब मन्ज़र	127
54	ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه तख़्तए दार पर	131
55	ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का इश्क़े रिसालत	132
56	सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कमसिन जांबाज़	135
57	मुजाहिदाना जवाब	137

58	हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दर्दनाक कहानी	138
59	फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़ैसला	145
60	शमशीरे उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मामूं का सर	146
61	बेटे की तलवार बाप का सर	147
62	बाप नापाक, बिस्तर पाक	149
63	मा'रिकए उहुद में सहा़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की जां निसारी	150
64	हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	150
65	ग़सीलुल मलाइका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	151
66	शौक़े शहादत	152
67	क़दमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर शहादत	153
68	अस्सी ज़ख़्म	153
69	हज़रते वह्ब बिन क़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कारनामा	154
70	हज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا	155
71	पयामे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	157
72	हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शौक़ व वारफ़्तगी	157
73	सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	160
74	बरकत अन्दोज़ी	160
75	मुहा़फ़ज़ते यादगारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	163
76	अदबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	169
77	जां निसारी	179
78	ख़िदमते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	186

79	महब्बते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	190
80	क़राबते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इज़्ज़त व महब्बत	199
81	रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इज़्ज़त व महब्बत	203
82	शौक़े ज़ियारते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	205
83	शौक़े दीदारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	207
84	शौक़े सोहबते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	208
85	रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोहबत का असर	209
86	इस्तिक़्बाले रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	211
87	ज़ियाफ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	213
88	ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	216
89	रिज़ाए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	217
90	ग़मे हिज्रे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	222
91	तफ़्वीज़ इलर्रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	224
92	हैबते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	225
93	इत़ाअ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	227
94	पाबन्दिये अह़कामे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	229
95	अदबे ह़रमे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	234
	हुज़ूर ﷺ के विसाल का सहाबा ؓ पर रद्दे अ़मल	236
96	ह़ालते तह़य्युर	236
97	इन्किशाफ़े ह़क़ीक़त	236
98	ग़मो अलम के बादलों का छा जाना	237

www.dawateislami.net

99	फ़िराक़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के तअस्सुरात	240
100	ग़मे हिज्र	245
101	रौज़ए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर	248
102	रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नज़र में	248
	बारगाहे रिसालत में सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ख़िराजे अ़क़ीदत	253
103	ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	253
104	ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	253
105	ह़ज़रते उ़स्मान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	254
106	ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	255
107	ह़ज़रते ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	255
108	ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित अन्सारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	256
109	ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	259
110	ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	260
111	ह़ज़रते अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	260
112	ह़ज़रते मालिक बिन औ़फ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	261
113	ह़ज़रते अबू सुफ़्यान बिन ह़ारिस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ	261
114	आ'राबी	262
115	ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا	263
116	ह़ज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا	263
117	ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا)	264
118	बनाते मदीना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ	264

www.dawateislami.net

कलिमए आग़ाज़

باسمہٖ وحمدہٖ والصلوٰۃ والسلام علٰی نبیّہٖ وجنودہٖ

ھر کہ عشق مصطفٰی سامان اوست
بحر و بر در گوشہ داما ن اوست

इश्क़ की तासीर बड़ी हैरत अंगेज़ है। इश्क़ ने बड़ी बड़ी मुश्किलात में अ़क़्ले इन्सानी की रहनुमाई की है। इश्क़ ने बहुत सी ला इलाज बीमारियों का कामयाब इलाज किया है। इश्क़ के कारनामे आबे ज़र से लिखने के क़ाबिल हैं।

मदीने के पुर आशोब माहोल में जब कि पैग़म्बरे इस्लाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो चुका है। अत़राफ़े मदीना के बहुत से लोग दीने इस्लाम से फिर गए। दुश्मनों ने शहरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ले की तय्यारियां मुकम्मल कर लीं। इस्लामी लश्कर को ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सर कर्दगी में रूम के मुक़ाबले पर ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मरज़े वफ़ात में भेज चुके थे। सियासी ह़ालात ने संगीन रुख़ इख़्तियार कर लिया है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की राए थी कि लश्कर को वापस बुला लिया जाए। लेकिन वोह इश्क़ ही था जिस ने सब के बर ख़िलाफ़ पुकार कर कहा : क़सम उस ज़ात की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, अबू क़ुहाफ़ा के बेटे (अबू बक्र) से हरगिज़ येह नहीं हो सकता कि उस लश्कर को पीछे लौटाए जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे भेजा है। ख़्वाह कुत्ते हमारी टांगें खींच ले जाएं मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का भेजा हुवा लश्कर मैं वापस नहीं बुला सकता और अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बांधा हुवा परचम खोल नहीं सकता।

इश्क़ का फ़ैसला अक़्ल के फ़ैसले से बिल्कुल मुतसादिम था। लेकिन दुन्या ने देखा कि जब इश्क़ का फ़ैसला नाफ़िज़ हो गया तो सारी साज़िशें खुद ब खुद दम तोड़ गईं। दुश्मनों के हौसले शिकस्त खुरदा हो गए और सियासी हालात की काया पलट गई।

مرحبا اے عشق خوش سودائے ما

اے دوائے جملہ علتہائے ما

इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर पूरे तौर पर दिल में जा गुज़ीं हो तो इत्तिबाए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़ुहूर ना गुज़ीर बन जाता है। अह्कामे इलाही की ता'मील और सीरते नबवी की पैरवी आशिक़ के रगो रेशे में समा जाती है। दिलो दिमाग़ और जिस्म व रूह पर किताबो सुन्नत की हुकूमत क़ाइम हो जाती है। मुसलमान की मुआशरत संवर जाती है। आख़िरत निखरती है, तहज़ीब व सक़ाफ़त के जल्वे बिखरते हैं और बे माया इन्सान में वोह क़ुव्वत रूनुमा होती है जिस से जहां बीनी व जहां बानी के जौहर खुलते हैं।

की मुहम्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या लौह़ो क़लम तेरे हैं

इसी इश्क़े कामिल के तुफ़ैल सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को दुन्या में इख़्तियार व इक़्तिदार और आख़िरत में इ़ज़्ज़त व वक़ार मिला। येह उन के इश्क़ का कमाल था कि मुश्किल से मुश्किल घड़ी और कठिन से कठिन वक़्त में भी उन्हें इत्तिबाए रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इन्ह़िराफ़ गवारा न था। वोह हर मर्ह़ले में अपने मह़बूब आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नक़्शे पा ढूंडते और इसी को मश्अ़ले राह बना कर जादह पैमा रहते। यहां तक कि

लह़द में इश्क़े रुख़े शह का दाग़ ले के चले
अंधेरी रात सुनी थी चराग़ ले के चले

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

www.dawateislami.net

सहाबा से ताबेईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने येह गिरां बहा दौलत हासिल की। उन्हों ने सहाबा رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن की रफ़ाक़त व सोहबत में रह कर इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सीखा, दिल में बसाया, सीरत में उतारा, रज़्मो बज़्म में निखारा और अपनी दुन्या व आख़िरत को संवारा।

आज इश्क़ की येह लौ मध्धम होती जा रही है और नई नस्ल जाने आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बजाए कहीं और दिल लगाए बैठी है, जैसे इसे ख़बर ही न हो कि हम क्या हैं और हमारा मर्कज़े इश्को अक़ीदत कहां है? अक़्ले बे माया, इल्मे बे अमल, जह्ले बे समर और लह्वे बे हुनर ने हमारा कारवाने ज़फ़र ताराज कर रखा है। और अपनी बे बसी व बे कसी का ह़ल भी नज़र नहीं आता।

ज़रूरत है कि हम सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की मह़फ़िल में चलें, फ़त्हो ज़फ़र जिन के क़दम चूमती थी, इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन की मताए ज़िन्दगी, इत्तिबाए रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन का सरमायए ह़यात और जहांबानी जिन की तक़्दीर बन चुकी थी। हम उन्हें देखें कि ज़ाते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उन का कैसा वालिहाना तअ़ल्लुक़ था। उन की बारगाह में पहुंच कर उन से दर्से मह़ब्बत ह़ासिल करें।

मगर अब वोह मह़फ़िलें, वोह रफ़ाक़तें, वोह सआ़दतें कहां नसीब? वोह बे बहा दौलत वोह जहां आरा मह़ब्बत, वोह ह़श्रे बद अमां शरारे इश्क़ हमारी ख़ाकिस्तर में आए तो क्यूं कर आए?

मैं कहता हूं हम अपनी निगाहे बसीरत तेज़ करें और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن के वाक़िआत में उन की चलती फिरती ज़िन्दगी देखें, बारगाहे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में

www.dawateislami.net

उन की मुक़द्दस व बा अ़ज़मत अदाओं का मुशाहदा करें। चश्मे तसव्वुर से लौहे दिल पर उन के पाकीज़ा इश्क़ का नक़्शा उतारें। इस त़रह़ गोया हम भी सह़ाबए रसूल رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की मह़फ़िल में होंगे और उन का फ़ैज़ाने इश्क़ कुछ हमारे ऊपर भी जल्वाबार होगा।

"اصحابی کالنجوم فبایھم اقتدیتم اھتدیتم"

(کشف الخفاء، الحدیث ۳۸۱، ج۱، ص۱۱۸)

या'नी मेरे सह़ाबा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن सितारों की मानिन्द हैं

इन में से जिस की भी इक़्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे,

का मुज़्दए जांफ़िज़ा हमारी ख़ाकिस्तर में भी कुछ शो'ले फ़रोज़ां करेगा। इश्क़ और इश्क़ की ह़ैरत अंगेज़ तासीर हमारे क़ाफ़िलए ह़यात को भी इल्मो हुनर, जोह्दो अ़मल और फ़लाह़ो ज़फ़र से आश्ना करेगी।

नहीं मायूस है इक़्बाल अपनी किश्ते वीरां से

ज़रा नम हो तो येह मिट्टी बहुत ज़रख़ेज़ है साक़ी

येही तख़य्युल इस किताब की तरतीब का मुह़र्रिक बना। मौजूदा नस्ल के सीने में इश्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अमानत मुन्तक़िल करने के लिये क़लम ने रसूले गिरामिये वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़फ़िल सजाई। उन की रफ़ाक़तों और सोह़बतों के ताबंदा नुक़ूश ढूंडे और अपनी दौरे उफ़्तादा नस्ल को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोह़बत का यक गोना ह़ज़्ज़ उठाने की राह पैदा की, बारगाहे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की मह़ब्बत व फ़िदाइयत और एह़तिराम व अ़क़ीदत के मो'तबर वाक़िआ़त का एक शानदार गुलदस्ता तय्यार किया और इस

www.dawateislami.net

तवक़्क़ोअ़ के साथ मुसलमानाने आ़लम की ख़िदमत में पेश कर दिया कि वोह अपनी शौकते रफ़्ता को इस दौलते गुम गश्ता या कम गश्ता की फ़रावानी व अफ़्ज़ूनी के ज़रीए़ तलाश करें। इन का ह़ाल व माल दरख़्शन्दा व ताबनाक ज़रूर होगा।

بمصطفی برساں خویش راکہ دیں ہم اوست
و گرباں نرسیدی تمام بولہبی ست

नज़र हो ख़्वाजए कौनो मकां पर गर निसार अब भी
तो हो सकती है नाज़िल रह़मते परवर दगार अब भी
फ़ज़ाए बद्र पैदा कर फ़िरिश्ते तेरी नुस्रत को
उतर सकते हैं ज़मीन पर क़ित़ार अन्दर क़ित़ार अब भी

इस मजमूए़ में मुख़्तलिफ़ किताबों से ज़ियादा तर ह़ालात व वाक़िआ़त के नक़्ल व इक़्तिबास पर इक्तिफ़ा किया गया है और बिल उ़मूम अपनी त़रफ़ से किसी तबसिरे की ह़ाजत मह़सूस न की गई कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ज़िन्दगी के ह़सीन नुक़ूश असरे आफ़्रीनी व किरदार साज़ी के लिये ख़ुद ही काफ़ी हैं।

बड़ी नासपासी होगी अगर इस मौक़अ़ पर अपने उन अह़बाब का तज़्किरा न करूं जिन का करम मवाद की फ़राहमी, किताब की तरतीब, मुसव्वदे पर नज़्रे सानी, मुक़द्दमे की निगारिश, फिर किताबत व तस्ह़ीह़ और त़बाअ़त व इशाअ़त के तमाम मराह़िल में मेरे हमदम व ग़म गुसार साबित हुए। और उन की इनायतों के तुफ़ैल येह किताब जल्द आप के हाथों में पहुंच सकी।

उन अह़बाब से मेरी मुराद है : मौलाना इफ़्तिख़ार अह़मद क़ादिरी, मौलाना यासीन अख़्तर आ'ज़मी, मौलाना मुह़म्मद अह़मद मिस्बाह़ी, मौलाना अ़ब्दुल मुबीन नो'मानी, मौलाना नसरुल्लाह रज़्वी

جزاھم اللہ احسن الجزاء وخصّھم بعظیم نعمہ وجلیل کرمہ فی الدین و الدنیا و الاخرۃ۔

www.dawateislami.net

येह दा'वा नहीं कि ज़ेरे नज़र किताब इस मौज़ूअ़ पर ह़र्फ़े आख़िर है बल्कि अभी इज़ाफ़े की बहुत गुन्जाइश बाक़ी है। लेकिन क़वी उम्मीद है कि जिस नेक जज़्बे और अहम मक़्सद के पेशे नज़र येह मज्मूअ़ा मा'रिज़े वुजूद में आया है वोह ان شاء الله المولى القدير बड़ी ह़द तक इस से ह़ासिल होगा।

रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ मुसलमानों के सीने इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बह़रे बेकरां से भर दे और उन्हें इत्तिबाए ह़बीब व इत्तिबाए फ़िदायाने ह़बीब से दोनों जहां में सरफ़राज़ी व सुर्ख़ रूई नसीब करे। उन्हें जीने और मरने का सलीक़ा अ़त़ा करे और ग़ैरों के बजाए रसूले अकरम, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे उम्मत नवाज़ से हर लम्ह़ा व हर आन वाबस्ता रहने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए। आमीन।

फिर के गली गली तबाह ठोकरें सब की खाए क्यूं
दिल को जो अ़क़्ल दे ख़ुदा तेरी गली से जाए क्यूं ?
जान है इश्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं ?
संगे दरे हुज़ूर से हम को ख़ुदा न सब्र दे
जाना है सर को जा चुके दिल को क़रार आए क्यूं ?

मुह़म्मद अकरम रज़वी

जुमुआ़ यकुम जुमादिल आख़िरा

सि. 1405 हि. ब मुत़ाबिक़ 22 फ़रवरी सि. 1985 ई.

www.dawateislami.net

मुक़द्दमा

نحمده ونصلی علی رسوله الكريم وعلى اله وصحابه اجمعین

मुह़म्मद की मह़ब्बत दीने ह़क़ की शर्ते़ अव्वल है
इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है
मुह़म्मद की मह़ब्बत है सनद आज़ाद होने की
ख़ुदा के दामने तौह़ीद में आबाद होने की

क़ुरआन नातिक़ है :

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَ عَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَ مَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَاۤ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِىْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِىَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ (پ ۱۰،التوبة:۲٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान येह चीज़ें* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल और उस की राह में लड़ने से ज़ियादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहां तक कि* ***अल्लाह*** *अपना हुक्म लाए और* ***अल्लाह*** *फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।*

इन्सान के अन्दर वालिदैन, औलाद, भाई, बीवी, ख़ानदान और माल, तिजारत और मकान इन सब चीज़ों से मह़ब्बत फ़ित़री चीज़ है, लेकिन रब तआ़ला अपने बन्दों को आगाह फ़रमाता है कि

www.dawateislami.net

अगर तुम्हारे अन्दर इन सब चीज़ों की मह़ब्बत मेरी और मेरे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत से बढ़ जाए तो तुम गोया ख़त़रे की ह़द में दाख़िल हो चुके हो और बहुत जल्द तुम को मेरा ग़ज़ब व अ़ज़ाब अपनी लपेट में ले लेगा। इस से पता चलता है कि एक मोमिन के लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत न सिर्फ़ येह कि फ़र्ज़ है बल्कि सब से क़रीबी रिश्तेदारों और सब से क़ीमती मताअ़ पर मुक़द्दम है। ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं :

لَایُؤْمِنُ اَحَدُکُمْ حَتّٰی اَکُوْنَ اَحَبَّ اِلَیْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِیْنَ۔

(صحیح البخاری، کتاب الایمان ، باب حب الرسول....الخ،الحدیث:۱۵،ج۱،ص۱۷)

या'नी तुम में का कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उस के वालिद, औलाद और तमाम लोगों से मह़बूब न हो जाऊं।

एक रोज़ ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप मेरी जान के इ़लावा हर चीज़ से ज़ियादा मह़बूब हैं। तो नबिये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है तुम में से कोई (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस की जान से भी ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप पर किताब नाज़िल फ़रमाई आप मेरी जान से भी ज़ियादा मह़बूब हैं। इस पर ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां अब ! ऐ उ़मर !

(صحیح البخاری ، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کانت.....الخ، الحدیث: ۶۶۳۲،ج۴،ص۲۸۳)

जंगे उहुद में एक सहाबिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बाप, भाई और शोहर परवाना वार लड़ते लड़ते शहीद हो गए। उन्हें जब येह मा'लूम हुवा तो इस का कुछ ग़म न किया बस येह पूछा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब उन को बताया गया कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बखै़रो सलामत हैं तो बोलीं कि मुझे हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दिखा दो, आप को देख कर (और एक रिवायत में है कि बे ताबाना आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कपड़ा पकड़ कर) कहने लगीं : "كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَل" या'नी आप के होते हुए हर मुसीबत हेच है।

(السیرة النبویة لابن ھشام، غزوۃ احد،شأن المرأۃ الدیناریۃ، ج۳،ص۸٦)

येह था महब्बते रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जज़्बए सादिक़ ! क्या इस की नज़ीर मिल सकती है ?

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान फ़रमाती हैं कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप यक़ीनन मेरे नज़्दीक मेरी जान और मेरी औलाद से भी ज़ियादा महबूब हैं, लेकिन जिस वक़्त आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم याद आ जाते हैं तो जब तक आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर आप को देख न लूं क़रार नहीं आता, लेकिन इस दुन्या से रुख़्सत होने के बा'द जन्नत में दाख़िल हो कर आप अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ बुलन्द मक़ाम में होंगे और मैं नीचे दरजे में होने के सबब अन्देशा करता हूं कि कहीं आप को न देख सकूं। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, इतने में हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام येह आयत ले कर हाज़िर हुए :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِکَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ج وَحَسُنَ اُولٰٓئِکَ رَفِيْقًا ۝ (پ ٥، النساء:٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग येह क्या ही अच्छे साथी हैं।*

(حلية الاولياء، الحديث:٥٥١٦، ج٤، ص٢٦٧)

इसी लिये सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक लम्हे के लिये भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेचैन देखना गवारा न करते। फ़त्हे मक्का से पहले मश्हूर सहाबी ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दुश्मनाने इस्लाम के नर्गे में आ गए, सफ़्वान बिन उमय्या ने उन को क़त्ल करने के लिये अपने गुलाम निस्त़ास के साथ तन्ईम भेजा। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को हुदूदे ह़रम से बाहर ले जाया गया, तो अबू सुफ़्यान ने (जो अभी इस्लाम न लाए थे) उन से पूछा : ज़ैद ! मैं तुम को ख़ुदा की क़सम दे कर पूछता हूं क्या तुम पसन्द कर सकते हो कि इस वक़्त हमारे पास तुम्हारी जगह मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हों और हम उन को क़त्ल करें और तुम आराम व सुकून से अपने अह्ल में रहो। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जवाब दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तो येह भी पसन्द नहीं करता कि इस वक़्त मेरे हुज़ूर जहां कहीं भी हों उन को एक कांटा भी चुभे और मैं आराम व सुकून से अपने अह्ल में रहूं। येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने कहा : मैं ने ऐसा कहीं नहीं देखा कि किसी से ऐसी मह़ब्बत की जाती हो, जैसी मह़ब्बत मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से उन के अस्ह़ाब करते हैं। इस के बा'द ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद कर दिया गया। (شرح الشفاء للقاضی عياض، باب الثانی، فصل فيما روی عن السلف، ج٢، ص٤٤)

www.dawateislami.net

हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत में पहुंचने के बा'द आप के लिये अपना चैन, चैन न समझा अपनी राहत, राहत न समझी अपनी जान, जान न समझी, बल्कि येह सब कुछ आप ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान कर दिया था । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में होते तो हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को हर तरह का आराम पहुंचाने में कोई दक़ीक़ए फ़रोग ज़ाश्त न करते । धूप का वक़्त होता तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये साए का इन्तिज़ाम करते, पड़ाव डाला जाता तो ख़ैमा नस्ब करते, मा'रिकों में होते तो येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुहाफ़िज़ होते । जब हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल का वक़्त आ गया तो उन की ज़ौजा ने कहा وَاحُزْنَاهُ (हाए ग़म) । हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : नहीं बल्कि "وَاطَرَبَاهُ اَلْقٰى غَدًا الْاَحِبَّهْ مُحَمَّدًا وَّ صَحْبَه"

(شرح الشفاء للقاضی عیاض،باب الثانی ، فصل فیما روی عن السلف،ج۲،ص۴۳)

वाह ख़ुशी ! कल हम मुहम्मद और उन के अस्हाब से मिलेंगे और जिस से महब्बत होती है उस की हर चीज़ से महब्बत होती है उस की हर अदा से महब्बत, उस की रफ़्तार से महब्बत, उस की गुफ़्तार से महब्बत, उस के लिबास व तआ़म से महब्बत, ग़रज़ उस की हर चीज़ से महब्बत होती है ।

हज़रते उ़बैद बिन जुरैज ने हज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : मैं ने देखा आप बैल के दबाग़त किये हुए चमड़े का बे बाल जूता पहनते हैं । हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप ऐसा ही जूता पहना करते थे जिस में बाल न हों इसी लिये मैं भी ऐसा ही जूता पहनना पसन्द करता हूं ।

(صحیح البخاری، کتاب الوضوء ، باب غسل الرجلین.....الخ،الحدیث ۱۶۶، ج۱،ص ۸۰)

www.dawateislami.net

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं कि एक दर्ज़ी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की खाने की दा'वत की, मैं भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ गया, जव की रोटी और शोरबा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने लाया गया जिस में कद्दू और खुश्क किया हुवा नमकीन गोश्त था, खाने के दौरान मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि प्याले के कनारों से कद्दू की क़ाशें तलाश कर रहे हैं, इसी लिये मैं उस दिन से कद्दू पसन्द करने लगा।

(صحیح البخاری ، کتاب الاطعمۃ، باب الدباء، الحدیث ٥٤٣٣، ج٣،ص٥٣٦)

इमाम अबू यूसुफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (शागिर्दे इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के सामने इस रिवायत का ज़िक्र आया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कद्दू पसन्द फ़रमाते थे, मजलिस के एक शख़्स ने कहा : लेकिन मुझे पसन्द नहीं। येह सुन कर इमाम अबू यूसुफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तल्वार खींच ली और फ़रमाया : جَدِّدِ الْاِیْمَانَ وَ اِلَّا لَاَقْتُلَنَّکَ तजदीदे इमान कर, वरना तुझ को क़त्ल किये बिग़ैर न छोड़ूंगा।

(الشفاللقاضی، باب الثانی،فصل فی علامۃ صحبتہ صلی اللہ علیہ وسلم ، ج٢،ص٥١)

ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم

जिस बड़े से महब्बत होती है उस की अ़ज़मत दिलो दिमाग़ पर छा जाती है, फिर येह चाहने वाला अपने महबूब की ता'ज़ीम और उस की अ़ज़मत का कलिमा पढ़ने लगता है, इस्लाम ने तो हर बड़े की ता'ज़ीम का दर्स दिया है।

مَنْ لَمْ یَرْحَمْ صَغِیْرَنَا وَلَمْ یُوَقِّرْ کَبِیْرَ نَا فَلَیْسَ مِنَّا

(سنن الترمذی، کتاب البروالصلۃ، باب ماجاء فی رحمۃ الصبیان، الحدیث١٩٢٦، ج٣،ص٣٦٩)

जो हमारे छोटे पर शफ़्क़त न करे और हमारे बड़े की ता'ज़ीम न करे तो वोह हम में से नहीं।

और नबिये आख़िरुज़्ज़मां मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो सारे बड़ों में सब से बड़े हैं और इतने बड़े हैं कि आज तक इतना बड़ा पैदा न हुवा और न ही पैदा होगा, इस लिये आप की ता'ज़ीम भी सब से बढ़ कर होनी चाहिये। क़ुरआन नातिक़ है।

اِنَّآ اَرۡسَلۡنٰکَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِیۡرًا ۙ لِّتُؤۡمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ وَتُعَزِّرُوۡهُ وَتُوَقِّرُوۡهُ ؕ وَتُسَبِّحُوۡهُ بُكۡرَةً وَّاَصِیۡلًا ۝ (پ۲۶، الفتح: ۸،۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक हम ने तुम्हें भेजा हाज़िरो नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम* ***अल्लाह*** *और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और सुब्हो शाम* ***अल्लाह*** *की पाकी बोलो।*

आप ग़ौर करें इस आयत में पहले ईमान बिल्लाह और ईमान बिर्रसूल का मुतालबा किया गया है और इस के मअ़न बा'द रसूले मुअ़ज़्ज़म व मुकर्रम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर का हुक्म दिया गया है और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी तस्बीह़ का हुक्म इर्शाद फ़रमाया है। रब तआ़ला ने अपनी तस्बीह़ पर अपने रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर को मुक़द्दम कर के ता'ज़ीमे ह़बीब की अहम्मिय्यत व अ़ज़मत में किस क़दर इज़ाफ़ा कर दिया है। गोया आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शाहिदो मुबश्शिर और नज़ीर बना कर इसी लिये भेजा गया है कि लोग **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाएं और रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करें और फिर रब عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ करें। एक मक़ाम पर क़ुरआने ह़कीम नबिये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करने वालों की कामरानी का इस त़रह़ ए'लान कर रहा है :

فَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بِهٖ وَعَزَّرُوۡهُ وَ نَصَرُوۡهُ وَاتَّبَعُوا النُّوۡرَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓئِکَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ۠ (پ۹،الاعراف:۱۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो वोह जो उस पर ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुए।*

इस आयते करीमा में भी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व नुसरत करने वालों को कामयाबी की ज़मानत दी गई है।

येह इर्शादाते रब्बानी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पेशे नज़र थे, इस लिये उन्हों ने अपने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऐसी ता'ज़ीम की, कि दुन्या के किसी शहनशाह की भी इस तरह ता'ज़ीम न की जा सकी। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता'ज़ीमो तौक़ीर का हाल देख कर सुल्हे हुदैबिया के मौक़अ़ पर क़ुरैश के नुमाइन्दे उ़रवा बिन मसऊ़द ने जो अभी ईमान न लाए थे, येह तअस्सुर पेश किया था, गोया येह अपने का नहीं ग़ैर का तअस्सुर है। आप ने कहा :

"ऐ लोगो ! ख़ुदा की क़सम ! मैं बादशाहों के दरबारों में भी पहुंचा हूं। क़ैसरो किस्रा और नज्जाशी की डेवढ़ियों पर भी ह़ाज़िरी दे चुका हूं। ख़ुदा की क़सम ! किसी बादशाह की इतनी ता'ज़ीम होते नहीं देखी, जितनी ता'ज़ीम मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उन के अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان करते हैं। जब कभी भी उन के दहने अक़्दस से लुआ़बे मुबारक निकला वोह किसी न किसी शैदाई के हाथ में पड़ा जिसे उस ने अपने चेहरे और जिस्म पर मल लिया और जब वोह अपने अस्ह़ाब को किसी बात का हुक्म देते हैं तो वोह उस की ता'मील में दौड़ पड़ते हैं और जब वोह वुज़ू करते हैं तो वुज़ू के पानी के लिये एक दूसरे पर पेश क़दमी करते हैं और जब वोह

गुफ़्त्गू फ़रमाते हैं तो वोह लोग ख़ामोश और पुर सुकून रहते हैं और ता'ज़ीमो तौक़ीर में उन की त़रफ़ नज़र भर कर देखते तक नहीं।" (السیرۃ النبویۃلابن ھشام،ج٣،ص٢٦٨)

येह था सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان का अन्दाज़े ता'ज़ीमो तौक़ीर का इजमाली ख़ाका जिसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक बेगाने ने पेश किया था, ख़ुद सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने वाक़िआत की दुन्या में ता'ज़ीमो तौक़ीरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कैसी कैसी मिसालें पेश की हैं उन्हें तो आप अस्ल किताब में मुलाहज़ा करेंगे, यहां पर बस बा'ज़ मिसालों पर इक्तिफ़ा किया जाएगा।

﴾1﴿ ग़ज़्वए ख़ैबर की वापसी में मक़ामे सहबा पर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के ज़ानू पर सर मुबारक रख कर आराम फ़रमाया, ह़ज़रते अ़ली ने नमाज़े अ़स्र न पढ़ी थी, अपनी आंख से देख रहे थे कि वक़्त जा रहा है मगर इस ख़याल से कि ज़ानू सरकाता हूं तो मबादा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़्वाब मुबारक में ख़लल आ जाए, ज़ानू न हटाया यहां तक कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया। जब चश्मे मुबारक खुली तो ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने अपनी नमाज़ का ह़ाल अ़र्ज़ किया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई तो आफ़्ताब पलट आया, ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने नमाज़े अ़स्र अदा की फिर सूरज डूब गया।

(الشفاء،ج١،ص٥٩٤،شواھدالنبوۃ، رکن سادس،ص٢٢٠)

ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर अफ़्ज़लुल इबादात नमाज़ और वोह भी सलातुल वुस्त़ा (नमाज़े अ़स्र) मौला अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने क़ुरबान कर दी। चश्मे फ़लक ने ऐसा मन्ज़र कभी न देखा होगा रब तआ़ला के एक बन्दे की दरख़्वास्त पर उस के एक फ़िदाई के लिये सूरज को पलटाया गया हो और एक

www.dawateislami.net

फ़िदाई ने महज़ ता'ज़ीमो तौक़ीरे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र इतनी अज़ीम क़ुरबानी दी हो। इसी को इमामे अहले सुन्नत قُدِّسَ سِرُّهُ इस त़रह़ बयान फ़रमाते हैं :

मौला अ़ली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वोह भी अ़स्र सब से जो आ'ला ख़त़र की है

﴿2﴾ हिजरत के मौक़अ़ पर यारे ग़ार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जो जां निसारी की मिसाल क़ाइम की है वोह भी अपनी जगह बे मिसाल है कि जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه दोनों ग़ार के क़रीब पहुंचे तो पहले सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उतरे, सफ़ाई की, ग़ार के तमाम सूराख़ों को बन्द किया, एक सूराख़ को बन्द करने के लिये कोई चीज़ न मिली तो आप ने अपने पाउं का अंगूठा डाल कर उस को बन्द किया, फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलाया और हुज़ूर तशरीफ़ ले गए और ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़ानू पर सर रख कर आराम फ़रमाने लगे इतने में सांप ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पाउं को काट लिया, मगर सिद्दीक़े अक्बर, शिद्दते अलम के बा वुजूद महज़ इस ख़याल से कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आराम में ख़लल न वाक़ेअ़ हो, ब दस्तूर साकिनो सामित रहे, आख़िर जब पैमानए सब्र लबरेज़ हो गया तो आंखों से आंसू जारी हो गए, जब आंसू के क़त़रे चेहरए अक़्दस पर गिरे तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार हुए, अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने डसे हुए ह़िस्से पर अपना लुआ़बे दहन लगा दिया फ़ौरन आराम मिल गया। एक रिवायत में है कि सांप का येह ज़हर हर साल औद करता, बारह साल तक ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इस में मुबतला रहे फिर आख़िर इस ज़हर के असर से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत हुई। (مدارج النبوت، ج۲، ص۵۸)

www.dawateislami.net

﴾3﴿ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जुल क़ा'दा सि. 6 हि. में सहाबा के साथ उ़मरह के इरादे से मक्कए मुकर्रमा के लिये रवाना हुए। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुदैबिया पहुंचे तो कुरैश पर ख़ौफ़ो हिरास त़ारी हुवा इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को मक्का भेजा और उन को येह हिदायात दीं कि तुम कुरैश को येह बताना कि हम जंग के लिये नहीं, उ़मरह की अदाएगी के लिये आए हैं और उन को इस्लाम की दा'वत भी देना और वोह मुसलमान मर्द व औ़रत जो मक्के में है उन को फ़त्ह़ की खुश ख़बरी सुनाना। ह़ज़रते उस्मान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मक्के की त़रफ़ बढ़ रहे थे कि उन से ह़ज़रते अ़बान बिन सा'द उमवी मिले जो अभी ईमान न लाए थे उन्हों ने ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को अपनी पनाह व ज़मानत दी और अपने घोड़े पर सुवार कर के उन को मक्कए मुकर्रमा लाए। ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने लोगों तक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम पहुंचाया। उधर हुदैबिया में सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कहने लगे कि उस्मान खुश नसीब हैं कि उन को त़वाफ़े बैतुल्लाह नसीब हो चुका होगा। येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरा ख़याल है कि उस्मान (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) मेरे बिग़ैर त़वाफ़ न करेंगे। इस दौरान येह अफ़्वाह उड़ गई कि ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मक्के में क़त्ल कर दिये गए, इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बैअ़त ली, जो बैअ़ते रिज़्वान के नाम से मश्हूर है। ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه चूंकि उस वक़्त मक्के में थे इस लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद अपना दायां हाथ बाएं हाथ पर रख कर उन को बैअ़त के शरफ़ में दाख़िल किया। इस त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हाथ ह़ज़रते उस्मान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का हाथ क़रार पाया।

www.dawateislami.net

बैअ़ते रिज़्वान के बा'द जब ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों ने उन से कहा आप खुश नसीब हैं कि आप ने त़वाफ़े बैतुल्लाह कर लिया। आप ने जवाब दिया, तुम ने येह मेरे बारे में दुरुस्त अन्दाज़ा न लगाया, उस की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर मैं मक्के में एक साल तक भी पड़ा रहता और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हुदैबिया में होते तब भी मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर त़वाफ़ न करता। क़ुरैश ने मुझ से त़वाफ़ करने के लिये कहा था मगर मैं ने इन्कार कर दिया।

(مدارج النبوت،ذکر سال ششم آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم،فرضیت حج،ج۲، ص۲۰۹)

ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अन्दर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व अदब का येह पास क़ाबिले मुलाह़ज़ा है कि कुफ़्फ़ार आप से पेशकश कर रहे हैं कि त़वाफ़ तन्हा कर लो मगर आप जवाब देते हैं मुझ से ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर त़वाफ़ कर लूं। इधर मुसलमानों का येह तअस्सुर कि ह़ज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खुश नसीब हैं कि उन को त़वाफ़े का'बा नसीब हो गया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुन कर फ़रमाया : "उस्मान हमारे बिग़ैर ऐसा नहीं कर सकते।" गोया हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी अपने फ़िदाई पर पूरा ए'तिमाद था। **आक़ा** हो तो ऐसा और **ग़ुलाम** हो तो ऐसा।

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस क़िस्म की ता'ज़ीम और इस त़रह़ का अदब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का अपना कोई ईजाद कर्दा या इख़्तेराई न था बल्कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम और मजलिस के आदाब खुद बयान फ़रमाए हैं। दुन्या का शहनशाह आता है तो अपने दरबार के आदाब खुद बनाता है और जब जाता है तो अपने निज़ामे आदाब को भी ले जाता है। मगर शहनशाहे इस्लाम हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबार का आ़लम ही निराला है, जब

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाते हैं तो ख़ालिके़ काएनात عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार का अदब नाज़िल फ़रमाता है और किसी ख़ास वक़्त तक के लिये नहीं बल्कि हमेशा हमेशा के लिये अदब के क़वानीन मुक़र्रर फ़रमाता है। इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (پ٢٦،الحجرات:١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनता जानता है।

बा'ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बक़र ईद से पहले ही कुरबानी कर ली थी या कुछ हज़राते सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने रमज़ानुल मुबारक के रोज़े एक दिन पहले ही से शुरूअ़ कर दिये उन को हिदायत की गई कि ऐसा न करें, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे बढ़ने की कोशिश न करें, ऐसा करना ख़त़रनाक है। आयत पर ग़ौर करने से एक बात येह भी निकलती है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे अदबी है, जिन लोगों ने पेश क़दमी की थी उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर की थी, लेकिन हुक्म उतरा तो येह कि तुम अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर पेश क़दमी न करो। दूसरे येह कि किसी क़ौल, किसी फ़े'ल में पेश क़दमी मन्अ़ है क्यूंकि आयत में येह हुक्म बिला क़ैद है। इसी त़रह़ जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी जगह के लिये तशरीफ़ ले जाएं तो बिग़ैर किसी ख़ास मस्लह़त के आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से आगे चलना भी मन्अ़ है। अगर कोई हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मजलिस में सुवाल करे तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले किसी और को उस का जवाब भी न देना चाहिये, इसी त़रह़ जब खाना ह़ाज़िर हो तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले खाना शुरूअ़ न किया जाए।

www.dawateislami.net

फिर येह भी देखिये कि जिन सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने पेश क़दमी की थी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में की थी, रोज़े रखने या कुरबानी करने में की थी, ऐसा करना ब ज़ाहिर कोई जुर्म नहीं मा'लूम होता, मगर आस्मान से तम्बीह उतर रही है कि ऐ ईमान वालो ! जलीलुल क़द्र इबादतों में भी तुम मेरे नबी से आगे न बढ़ना और इस मुआमले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी हर नक़्लो ह़रकत और निशस्तो बरख़ास्त को सुनता जानता है। इसी सूरह में आगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ अपने नबी की ता'ज़ीम की ता'लीम दे रहा है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ۝ (پ٢٦،الحجرات:٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और उन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो।*

इस आयते करीमा में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अह्ले ईमान को अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक अ़ज़ीम अदब सिखाया है कि तुम मेरे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने बोलने में भी बा अदब रहो, उन के हुज़ूर हल्की आवाज़ में बातें करो, अगर तुम ने ज़ोर ज़ोर से चीख़ कर उन के हुज़ूर बात की तो तुम्हारे अ़मल राएगां कर दिये जाएंगे। ग़ौर करें बड़े से बड़े जुर्म का इर्तिकाब इन्दल्लाह मुआ़फ़ हो सकता है मगर रब तआ़ला अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी और गुस्ताख़ी मुआ़फ़ न फ़रमाएगा।

ادب گاہیست زیر آسماں از عرش نازک تر
نفس گم کردہ می آید جنید و با یزید ایں جا

www.dawateislami.net

हज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बुलन्द आवाज़ थे इस आयत के बा'द उन्हें हुक्म हुवा कि इस बारगाह में अपनी आवाज़ पस्त करें वोह इन्तिहाई अदब और ख़ौफ़ की वज्ह से ख़ाना नशीन हो गए, बारगाहे नबवी में जब हाज़िर न हुए तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की ग़ैर हाज़िरी का सबब हज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त किया, येह हज़रते साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पडोसी थे इन्हों ने जा कर हज़रते साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा तो कहा : मैं तो दोज़ख़ी हो गया मेरी ही आवाज़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने सब से ज़ियादा बुलन्द होती थी। हज़रते सा'द ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ौल नक़्ल कर दिया, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नहीं, उन से कह दो वोह जन्नती हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन लोगों को सराह रहा है जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं।

اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝

(پ۲۶،الحجرات:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास वोह हैं जिन का दिल अल्लाह ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।*

आयते करीमा "لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ" के नाज़िल होने के बा'द हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरे सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان इस क़दर धीमी आवाज़ से बातें करते कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दोबारा दरयाफ़्त करने की ज़रूरत पेश आती।

हज़रते सिद्दीके अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तो क़सम खा ली थी कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस तरह बातें करूंगा जैसे सरगोशी की जाती है। इन हज़रात के बारे में येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इन को सराहा गया जो बा अदब हैं और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आवाज़ें पस्त रखते हैं।

सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाबे पाक में किस क़दर बा अदब रहते थे। हज़रते मौला अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं : जिस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू शुरूअ़ फ़रमाते आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब इस तरह सर झुका लेते जैसे उन के सरों पर परन्दे हों।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को **"या मुहम्मद ! या मुहम्मद !"** कह कर पुकारने वालों की रब तआ़ला मज़म्मत करते हुए फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَکَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَکْثَرُھُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ○ وَلَوْ اَنَّھُمْ صَبَرُوْا حَتّٰی تَخْرُجَ اِلَیْھِمْ لَکَانَ خَیْرًا لَّھُمْ ط وَاللّٰہُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ○ (پ۲۶، الحجرات:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था और* ***अल्लाह*** *बख़्शने वाला मेहरबान है।*

क़बीलए बनी तमीम का एक वफ़्द ऐन दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलने पहुंचा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मकान शरीफ़ के अन्दर आराम फ़रमा रहे थे, उन्हों ने हुजरों के बाहर से **"या मुहम्मद ! या मुहम्मद !"** कह कर पुकारना शुरूअ़ कर दिया।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। मगर ख़ुदाए तआ़ला ने अपने मह़बूब की ऐसी बे अदबी गवारा न फ़रमाई और ऐसा सख़्त हुक्म नाज़िल फ़रमाया कि "ऐसा करने वाले बे अ़क़्ल हैं" और फिर अदब की ता'लीम दी कि जब लोग दरे दौलत पर पहुंचे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आवाज़ न दें और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाहर तशरीफ़ लाने का इन्तिज़ार करें।

रब तआ़ला एक मक़ाम पर अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अदब इस त़रह़ इर्शाद फ़रमा रहा है :

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (پ ۱۸، النور:٦٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।*

इस आयते करीमा के दो पहलू हैं एक तो येह कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम को बुलाएं तो उन के बुलाने को कोई मा'मूली बुलाना न समझ बैठना बल्कि मेरे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बुलाने की शान तो येह है कि अगर वोह किसी को ऐन नमाज़ में भी आवाज़ दें फ़ौरन नमाज़ ही की ह़ालत में ह़ाज़िर होना फ़र्ज़ है जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस में है कि ह़ज़रते अबू सईद बिन मुअ़ल्ला رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था कि मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आवाज़ दी। मैं चूंकि नमाज़ पढ़ रहा था इस लिये जवाब न दिया फिर नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ कर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं नमाज़ पढ़ रहा था (इस लिये ह़ाज़िर न हो सका) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, क्या अल्लाह तआ़ला का येह हुक्म नहीं सुना है !

www.dawateislami.net

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ (پ۹،الانفال:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** और रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं जो तुम्हें ज़िन्दगी बख़्शेगी ।

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب ما جاء فی فاتحۃ الکتاب، الحدیث:۴۴۷۴، ج۳، ص۱۶۳)

इस क़िस्म का वाक़िआ़ ह़ज़रते अबी बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में भी मरवी है । येह है रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बुलाने की अ़ज़मत कि नमाज़ जैसा अ़ज़ीम फ़रीज़ा भी तर्क कर के ता'मीले हुक्म को पहुंचना फ़र्ज़ क़रार दिया गया ।

आयत की दूसरी तफ़्सीर येह है कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ न पुकारना जिस त़रह़ बाहम एक दूसरे को नाम ले कर पुकारते हो । इन को या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह, या ख़ैर ख़ल्क़िल्लाह वग़ैरा सिफ़ाती नामों से पुकार सकते हो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अह्ले ईमान को ऐसा हुक्म क्यूं न देता कि उस ने ख़ुद अपने पूरे कलामे अ़ज़ीम में कहीं भी या मुह़म्मद कह कर नहीं पुकारा है जब कि दूसरे अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को उन के ज़ाती नामों से ख़ित़ाब फ़रमाया है ।

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पेशे नज़र रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ के मज़्कूरा बाला इर्शादात व फ़रामीन थे । उन्हों ने इन अह़काम को ख़ूब समझ लिया था और इधर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शख़्सिय्यत को अपने सर की आंखों से और बहुत क़रीब से देखा था, इस लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत व जलालत फ़ित़री तौर पर उन के क़ुलूबो अज़्हान में रच बस गई थी इस लिये उन्हों ने अ़क़ीदतो मह़ब्बत और एह़तिराम व अदब के ऐसे ऐसे नमूने

पेश किये जिन की मिसाल मिलनी मुश्किल है। आप इस किताब में इस क़िस्म के वाक़िआत पढ़ेंगे जिन से रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان का ग़ायत दरजा एह़तिराम व अदब वाज़ेह़ होगा और फिर आप के क़ुलूब भी मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ज़ूज़ हुए बिग़ैर न रहेंगे और येही इस किताब का मक़्सदे अस्ली है।

मुअल्लिफ़ साह़िब मुतअ़द्दद इन्फ़िरादी ख़ुसूसिय्यात व इम्तियाज़ात के मालिक हैं। उन के ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ले अ़ज़ीम है। दीनी और दुन्यवी दोनों क़िस्म की ता'लीम से बहरा वर हैं। पंजाबी इन की मादरी ज़बान है मगर उर्दू, अंग्रेज़ी, अ़रबी और फ़ारसी में भी महारत रखते हैं, ख़िदमते इस्लाम का भी जज़्बए बेकरां पाया है। अक्सर अवक़ात इशाअ़ते इस्लाम की फ़िक्र में सरगर्दां रहते हैं। गुज़श्ता मौसिमे ह़ज (सि. 1403 हि.) में सूफ़ी साह़िब ने तब्लीग़े दीन के लिये यूरोप का सफ़र किया था। आप का येह तब्लीग़ी दौरा मिस्र, इंग्लेन्ड, हॉलेन्ड, तुर्की और जर्मनी पर मुश्तमिल था। वहां के इस्लामी मराकिज़ के अफ़राद से मुलाक़ात और तबादलए ख़यालात के इलावा बा'ज़ नए मराकिज़ की भी दरयाफ़्त हुई और ख़िदमते इस्लाम की राहें हमवार हुईं।

अन्जुमने ख़ुद्दामे अह़मद रज़ा लाहोर के आप सद्र हैं जिस ने थोड़े अ़रसे में मुतअ़द्दद व मुफ़ीद कार आमद किताबें शाएअ़ करने का एक रिकॉर्ड क़ाइम कर दिया है।

इधर दो साल से मुक़ाबलए मक़ाला निगारी, इमाम अह़मद रज़ा एवॉर्ड और तक़्सीमे इन्आ़मात का भी सूफ़ी साह़िब एहतिमाम करते हैं जो हिन्द व पाक और बंग्लादेश सत़्ह़ पर मुन्अ़क़िद होता है, मुफ़ीद और अहम किताबों की इशाअ़त में भी आप ख़ुसूसी

www.dawateislami.net

दिलचस्पी का सुबूत देते हैं। तर्जमा "अन्वारुल ह़क़्क़ फ़िस्सलाति अ़ला सय्यिदिल ख़ल्क़" और "तआ़रुफ़े इमाम अह़मद रज़ा" आप ही के जज़्बए दीन परवरी का समरा है। अव्वलुज़्ज़िक्र अ़ल्लामा यूसुफ इस्माईल नब्हानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अ़रबी तस्नीफ़ का तर्जमा है जो दुरूदो सलाम के मौज़ूअ़ पर एक शानदार किताब है। जब कि दूसरी किताब आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा बरेल्वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ालात पर एक मुख़्तसर मगर जामेअ़ किताब है जिस के मुरत्तिब भी खुद सूफ़ी साहिब हैं।

ज़ेरे नज़र किताब "**सह़ाबा** (رضی اللہ عنہم) **का इश्के रसूल** (صلی اللہ علیہ وسلم)" भी आप के ज़ौक़े तस्नीफ़ का एक आ'ला नमूना है जो आप के सोज़े पिन्हां और इश्क़े रिसालत का पता देती है। येह किताब आप के हाथों में है इस को पढें और लुत्फ़ अन्दोज़ हों और मुअल्लिफ़ और मुतअ़ल्लिक़ीन को दुआ़एं दें।

रब तआ़ला सूफ़ी साहिब की येह ख़िदमत क़बूल फ़रमाए और मज़ीद इस क़िस्म की ख़िदमात की तौफ़ीक़ बख़्शे और फ़लाहे़ दारैन से नवाज़े। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इफ़्तिख़ार अह़मद क़ादिरी (रियाज़)
रुक्ने अल मज्मउ़ल इस्लामी मुबारक पूर (हिन्द)
8 जुमादिल उला सिन 1404 हि.
9 फ़रवरी सि. 1984 ई.

ता'ज़ीम व अदब

नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत के बिग़ैर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना मुतसव्वर नहीं है, मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी जान, बाप, बेटे और मख़्लूक़ से ज़ियादा महबूब रखे, जैसे कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है :

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰی بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ
(پ ۲۱،الاحزاب:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है।*

और सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : तुम में से कोई एक हरगिज़ (कामिल) ईमानदार नहीं होगा जब तक कि मैं उसे उस की जान से ज़ियादा महबूब न होऊं।"

(المسند لامام احمد بن حنبل،حدیث عبداللّٰہ بن ربیعۃ السلمی، الحدیث۱۸۹۸۳، ج۷،ص۹)

येह भी फ़रमाया : तुम में से कोई (कामिल) ईमानदार नहीं होगा जब तक मैं उसे बाप, बेटे और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न होऊं। (صحیح البخاری،کتاب الایمان،باب حب الرسول من الایمان، الحدیث۱۵، ج۱،ص۱۷)

अ़लामाते महब्बत

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत की बहुत सी अ़लामतें और आसार हैं जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत के इम्तिहान के लिये कसौटी की हैसिय्यत रखते हैं। उन में से एक अ़लामत हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ब कस्रत ज़िक्र करना है। ह़दीस शरीफ़ में है : "مَنْ اَحَبَّ شَیْأً اَکْثَرَ ذِکْرَہٗ" जो शख़्स किसी से महब्बत रखता है, उस का ज़िक्र ब कस्रत करता है।

(کنزالعمال،کتاب الاذکار،الباب الاول،الحدیث۱۸۲۵،ج۱،ص۲۱۷)

ता'ज़ीम

कस्रते ज़िक्र के साथ साथ एक अ़लामत येह भी है कि ता'ज़ीमो तकरीम का कोई दक़ीक़ए फ़रोग ज़ाश्त न किया जाए

www.dawateislami.net

और हुज़ूर सय्यिदुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे पाक कमाले ता'ज़ीमो तकरीम और सलातो सलाम के साथ ले और नामे पाक लेते वक़्त ख़ौफ़ो ख़शिय्यत इज्ज़ो इन्किसारी और ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ का इज़्हार करे।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا (پ۱۸،النور:٦٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा न ठहरा लो जैसा तुम में एक दूसरे को पुकारता है।*

तफ़्सीरे कबीर में है :

لاتنادوه كما ينادى بعضكم بعضا لا تقولوا يامحمد يا اباالقاسم ولكن قولوا يا رسول الله يا نبى الله .(التفسيرالكبير،ج۸،ص٤٢٥،پ ۱۸ ،النور:٦٣)

"नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ न पुकारो जैसे तुम एक दूसरे को पुकारते हो। यूं न कहो : या मुह़म्मद ! या अबल क़ासिम ! बल्कि अ़र्ज़ करो या रसूलल्लाह, या नबिय्यल्लाह"(या'नी नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नाम या कुन्यत से न पुकारो बल्कि औसाफ़ और अल्क़ाब से याद करो)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ (پ۲٦،الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो इस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और इन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कि कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत न हो जाएं और तुम्हें ख़बर न हो।*

अबू मुह़म्मद मक्की رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

اى لاتسابقوه بالكلام ولاتغلظوا له بالخطاب ولاتنادوه باسمه نداء بعضكم بعضا ولكن عظموه ووقروه ونادوه باشرف مايحب ان ينادى به يارسول الله! يا نبى الله. (الشفاء،الباب الثالث،ج۲،ص٦٥)

www.dawateislami.net

या'नी कलाम में नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सबक़त न करो और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हम कलाम होते हुए सख़्ती से बात न करो और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम ले कर न पुकारो जिस त़रह़ तुम एक दूसरे को पुकारते हो बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और अशरफ़ तरीन औसाफ़ से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को निदा करो जिन से निदा किये जाने को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पसन्द फ़रमाएं और यूं कहो या रसूलल्लाह ! या नबिय्यल्लाह !" (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَलَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी कुफ़्र है

अल्लाह तआ़ला ने अह्ले ईमान को नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आवाज़ बुलन्द करने और ता'ज़ीमो तौक़ीर के बिग़ैर बुलाने से मन्अ़ फ़रमाया और ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस बे अदबी को रवा नहीं रखा और इस अ़ज़ीम जुर्म के मुर्तकिब को आ'माल के बरबाद हो जाने की वईद सुनाई, मा'लूम हुवा कि बारगाहे रिसालत की बे अदबी आ'माल के ज़ाएअ़ हो जाने का सबब है और तमाम उ़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि कुफ़्र के सिवा कोई गुनाह आ'माल के ज़ाएअ़ होने का सबब नहीं है और जो चीज़ आ'माल के ज़ियाअ़ का सबब हो, कुफ़्र है ।

अब ग़ौर करना चाहिये कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी आ'माल के ज़ाएअ़ होने का सबब है और जो ज़ियाए़ आ'माल का सबब हो कुफ़्र है, नतीजा येह हुवा कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे अदबी कुफ़्र है । येह भी पेशे नज़र रहे कि ह़याते ज़ाहिरी में और विसाल के बा'द नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान ता'ज़ीमो तकरीम के सिल्सिले में यक्सां है ।

www.dawateislami.net

इमामे मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का अबू जा'फ़र मन्सूर से मुकालमा

अबू जा'फ़र मन्सूर बादशाह मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से एक मस्अले में गुफ़्तगू कर रहा था, इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से फ़रमाया :

يا اميرالمؤمنين لاترفع صوتك فى هذا المسجد فان اللّٰه عزوجل ادب قوما فقال: **لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ**...الآية و مدح قوما فقال: **اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ**...الآية وذم قوما فقال: **اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ**... الآية وان حرمته ميتا كحرمته حيا فاستكان لها ابو جعفر وقال يا اباعبدالله استقبل القبلة وادعو ام استقبل رسول الله؟ فقال ولم تصرف وجهك عنه وهو وسيلتك ووسيلة ابيك آدم عليه السلام الى اللّٰه تعالٰى يوم القيامة بل استقبله واستشفع به فيشفعه اللّٰه.

(شرح الشفاء، الباب الثالث، ج٢، ص٧٢)

"ऐ मुसलमानों के अमीर ! इस मस्जिद में आवाज़ बुलन्द न कर क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने एक जमाअ़त को अदब सिखाया और फ़रमाया :

لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ (پ٢٦، الحجرات:٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपनी आवाज़ें ऊंची न करो इस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से।*

और एक जमाअ़त की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِیۡنَ یَغُضُّوۡنَ اَصۡوَاتَهُمۡ عِنۡدَ رَسُوۡلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ امۡتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوۡبَهُمۡ لِلتَّقۡوٰی ؕ لَهُمۡ مَّغۡفِرَةٌ وَّاَجۡرٌ عَظِیۡمٌ ۝ (پ٢٦،الحجرات:٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।*

और एक जमाअ़त की मज़म्मत करते हुए फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِیۡنَ یُنَادُوۡنَکَ مِنۡ وَّرَآءِ الۡحُجُرٰتِ (پ٢٦،الحجرات:٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उन में अक्सर बे अ़क़्ल हैं।*

बेशक बाद अज़ विसाल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त ऐसी है जैसी आप की ह़याते ज़ाहिरी में थी। (येह सुन कर) अबू जा'फ़र ने फ़रोतनी का इज़्हार किया और कहा ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की कुन्यत) क़िब्ला रू हो कर दुआ करूं या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुख़ करूं ? इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : तू हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से क्यूं रुख़ फेरता है हालांकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में तेरे और तेरे जद्दे अमजद आदम عَلَیْہِ السَّلَام के वसीला हैं, तू हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रुख़ कर और शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त कर, **अल्लाह** तआ़ला तेरे लिये शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा।

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم और ता'ज़ीमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

उ़रवा बिन मसऊ़द कहते हैं कि जब क़ुरैश ने उन्हें सुल्ह़े हुदैबिया के साल, नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में भेजा, उन्हों ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे पनाह ता'ज़ीम देखी, उन्हों ने देखा कि

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब भी वुज़ू फ़रमाते तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان वुज़ू का पानी ह़ासिल करने के लिये बेह़द कोशिश करते ह़त्ता कि क़रीब था कि वुज़ू का पानी न मिलने के सबब लड़ पड़ें। उन्हों ने देखा कि नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दहने मुबारक या बीनी मुबारक का पानी डालते तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे हाथों में लेते, अपने चेहरे और जिस्म पर मलते और आबरू पाते, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई बाल जसदे अत़हर से जुदा नहीं होता था मगर उस के हुसूल के लिये जल्दी करते, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें कोई हुक्म देते तो फ़ौरन ता'मील करते और जब नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुफ़्त्गू फ़रमाते तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने ख़ामोश रहते और अज़ राहे ता'ज़ीम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ आंख उठा कर न देखते।

जब उ़रवा बिन मसऊ़द कुरैश के पास वापस गए तो उन्हें कहा : ऐ क़ौमे कुरैश ! मैं किस्रा, क़ैसर और नज्जाशी (या'नी शाहे फ़ारस, शाहे रूम और शाहे ह़बशा) के पास उन की हुकूमत में गया हूं, ब ख़ुदा मैं ने हरगिज़ कोई बादशाह अपनी क़ौम में इतना मोह़तरम नहीं देखा जिस क़दर मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अपने अस्ह़ाब में मुअ़ज़्ज़ज़ हैं। एक रिवायत में है : "मैं ने कभी ऐसा बादशाह नहीं देखा कि उस के रफ़ीक़ उस की इस क़दर ता'ज़ीम करते हों जितनी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप की ता'ज़ीम करते हैं। तह़क़ीक़ कि मैं ने ऐसी क़ौम देखी है जो कभी भी नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं छोड़ेगी और हमेशा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम करती रहेगी।"

ह़ज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं चाहता था कि किसी अम्र के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल करूं लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैबत के सबब दो साल तक मुअख़्ख़र करता रहा।" (الشفاء، الباب الثالث، ج ٢، ص ٧١)

www.dawateislami.net

हज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे नबिये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा न तो कोई महबूब था और न मेरी निगाह में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा कोई मोहतरम था इस के बा वुजूद आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एहतिराम के सबब मैं आंख भर कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जमाल की ज़ियारत न कर सकता था। अगर मुझ से हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़त पूछी जाए तो मैं बयान नहीं कर सकूंगा क्यूंकि मैं आंख भर कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जमाल से बहरह नहीं हो सकता था।" (الشفاء، الباب الثالث، ج۲، ص۶۸)

हज़रते उसामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं बारगाहे रिसालत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में इस हाल में हाज़िर हुवा कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द इस त़रह़ बैठे हुए थे गोया उन के सरों पर परन्दे बैठे हुए हैं। (الشفاء، الباب الثالث، ج۲، ص۶۹)

(या'नी वोह अपने सरों को ह़रकत नहीं दे रहे थे क्यूंकि परन्दा उस जगह बैठता है जो साकिन हो।)

हज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इत्तिलाअ़ मिली कि काबिस बिन रबीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के (सूरतन) मुशाबे हैं जब हज़रते काबिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर के दरवाज़े से दाख़िल हुए तो हज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने तख़्त से उठ खड़े हुए उन का इस्तिक़्बाल किया, उन की आंखों के दरमियान बोसा दिया और उन्हें मिरग़ब (एक मक़ाम) इनायत फ़रमाया (येह सब कुछ इस लिये था कि) उन की सूरत नबिये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिलती जुलती थी (الشفاء، الباب الثالث، ج۲، ص۸۸)

www.dawateislami.net

अगर अजल्ला सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता'ज़ीम और इस बा बरकत बारगाह के एहतिराम में मुबालग़ा करने और हर बाब में आदाब की रिआयत करने की रिवायात का इहाता किया जाए तो कलाम तवील हो जाएगा। तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस ज़ाते करीम को बेहतरीन अल्क़ाब, कमाले तवाज़ोअ और मर्तबा व मक़ाम की इन्तिहाई रिआयत से ख़िताब करते थे और इब्तिदाए कलाम में सलात के बा'द "فَدَيْتُکَ بِاَبِیْ وَ اُمِّی" मेरे वालिदैन भी आप पर फ़िदा हों, या "بِنَفْسِیْ اَنْتَ یَارَسُوْلَ!" मेरी जान आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर निसार है, जैसे कलिमात इस्ति'माल करते थे और फ़ैज़े सोहबत की फ़रावानी के बा वुजूद, महब्बत की शिद्दत के तक़ाज़े की बिना पर ता'ज़ीमो तौक़ीर में कोताही और तक्सीर के मुर्तकिब नहीं होते थे बल्कि हमेशा हुज़ूर सय्यिदिल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व इजलाल में इज़ाफ़ा करते थे।

ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم और ता'ज़ीमे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

इसी तरह ताबेईन और तबए ताबेईन भी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता'ज़ीमे आसार के मुआमले में उन्हीं के नक़्शे क़दम पर थे। हज़रते मुस्अब बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जब इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ के सामने नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया जाता तो उन के चेहरे का रंग मुतग़य्यर हो जाता उन की पुश्त झुक जाती यहां तक कि येह अम्र उन के हमनशीनों पर गिरां गुज़रता।

एक दिन हाज़िरीन ने इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से उन की इस कैफ़िय्यत के बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया : जो कुछ मैं ने

www.dawateislami.net

देखा है, तुम देखते तो मुझ पर ए'तिराज़ न करते। मैं ने क़ारियों के सरदार ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर को देखा कि मैं ने जब भी उन से कोई ह़दीस पूछी तो वोह रो देते यहां तक कि मुझे उन के ह़ाल पर रह़्म आता था। (الشفاء،الباب الثالث،ج٢،ص٧٣)

वाक़िआते ता'ज़ीम

सि. 5 हि. में ग़ज़्वए बनी अल मुस्त़लक़ से वापसी के वक़्त क़ाफ़िला क़रीबे मदीना एक पड़ाव पर ठहरा तो उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़रूरत के लिये किसी गोशे में तशरीफ़ ले गईं, वहां आप का हार टूट गया उस की तलाश में मश्ग़ूल हो गईं इधर क़ाफ़िले ने कूच किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मह़मिल शरीफ़ ऊंट पर कस दिया और उन्हें येही ख़याल रहा कि उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस में हैं और क़ाफ़िला चल दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आ कर क़ाफ़िले की जगह बैठ गईं और आप ने ख़याल किया कि मेरी तलाश में क़ाफ़िला ज़रूर वापस होगा।

क़ाफ़िले के पीछे गिरी पड़ी चीज़ उठाने के लिये एक साह़िब रहा करते थे। इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस काम पर थे, जब वोह आए और उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को देखा तो बुलन्द आवाज़ से اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ पुकारा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कपड़े से पर्दा कर लिया, उन्हों ने अपनी ऊंटनी बिठाई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उस पर सुवार हो कर लश्कर में पहुंची। मुनाफ़िक़ीने सियाह बात़िन ने अवहामे फ़ासिदा फैलाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शान में बदगोई शुरूअ़ की, बा'ज़ मुसलमान भी उन के फ़रेब में आ गए और उन की ज़बान से भी कोई कलिमए बे जा सरज़द हुवा। उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बीमार हो गईं और एक माह तक बीमार रहीं, इस ज़माने में उन्हें इत्तिलाअ़ न हुई कि मुनाफ़िक़ीन उन की निस्बत क्या बक रहे हैं।

www.dawateislami.net

एक रोज़ उम्मे मस्त़ह़ से उन्हें येह ख़बर मा'लूम हुई, इस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का मरज़ और बढ़ गया और इस सदमे में इस क़दर रोईं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के आंसू न थमते थे और न एक लम्ह़े के लिये नींद आती थी । इस ह़ाल में सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर वह़ी नाज़िल हुई और ह़ज़रते उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़हारत में आयाते क़ुरआनी नाज़िल हुईं जिन से आप का शरफ़ व मर्तबा बढ़ाया गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़हारत व फ़ज़ीलत अज़् ह़द बयान हुई ।

सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बर सरे मिम्बर ब क़सम फ़रमा दिया था कि मुझे अपने अहल की पाकी व ख़ूबी बिल यक़ीन मा'लूम है, तो जिस शख़्स ने उन के ह़क़ में बदगोई की है, उस की त़रफ़ से मेरे पास कौन मा'ज़िरत पेश कर सकता है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ किया : मुनाफ़िक़ीन बिल यक़ीन झूटे हैं, उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا बिल यक़ीन पाक हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे पाक को मख्खी के बैठने से मह़फ़ूज़ रखा कि वोह नजासतों पर बैठती है, कैसे हो सकता है कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बद औ़रत की सोह़बत से मह़फ़ूज़ न रखे ।

ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने भी इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़हारत बयान की और अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साया ज़मीन पर न पड़ने दिया, ताकि उस साए पर किसी का क़दम न पड़े, तो जो परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साए को मह़फ़ूज़ रखता है किस त़रह़ मुमकिन है कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहल को मह़फ़ूज़ न फ़रमाए ।

ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने अ़र्ज़ किया कि : एक जूं का ख़ून लगने से परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ना'लैन उतार देने का हुक्म दिया, जो

परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ना'लैन की इतनी सी बात रवा न फ़रमाए, मुमकिन नहीं कि वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह्ल की आलूदगी गवारा करे। इसी त़रह़ बहुत से सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और सह़ाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ ने क़समे खाईं।

(مدارج النبوت،قسم سوئم،باب پنجم،ازھجرت آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم،ج۲،ص۱۵۹)

ह़ज़रते उस्मान बिन अफ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में रिवायत है कि जब नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुदैबिया के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुरैश के पास भेजा तो कुरैश ने ह़ज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को त़वाफ़े का'बा की इजाज़त दे दी लेकिन ह़ज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह कह कर इन्कार कर दिया कि :

مَا كُنْتُ لِاَفْعَلَ حَتّٰى يَطُوْفَ بِهٖ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

मैं उस वक़्त तक त़वाफ़ नहीं कर सकता जब तक कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم *त़वाफ़ नहीं करते।* (الشفاء،الباب الثالث،ج۲،ص۷۰)

बे नज़ीर ज़ियाफ़त

एक मरतबा ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियाफ़त की और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे ग़रीब ख़ाने पर अपने दोस्तों समेत तशरीफ़ लाएं और मा ह़ज़र तनावुल फ़रमाएं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दा'वत क़बूल फ़रमा ली और वक़्त पर मअ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर तशरीफ़ ले चले, ह़ज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे चलने लगे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक एक क़दम मुबारक जो उन के घर की त़रफ़ चलते हुए ज़मीन पर पड़ रहा था गिनने लगे, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ उस्मान ! येह मेरे क़दम क्यूं गिन रहे हो ? ह़ज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां–बाप आप पर कुरबान हो, मैं चाहता हूं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एक एक क़दम के इवज़ मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीमो तौक़ीर की ख़ातिर एक एक ग़ुलाम आज़ाद करूं। चुनान्चे ह़ज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर तक हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस क़दर क़दम पड़े उसी क़दर ग़ुलाम ह़ज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आज़ाद किये।

(جامع المجزات،ص۲۵۷)

शाहकारे ता'ज़ीम

ग़ज़्वए ख़ैबर से वापसी में मन्ज़िले सहबा पर नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ कर मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के ज़ानू पर सर मुबारक रख कर आराम फ़रमाया : मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने नमाज़े अ़स्र न पढ़ी थी, आंख से देख रहे थे कि वक़्त जा रहा है मगर इस ख़याल से कि ज़ानू सरकाऊं तो शायद ख़्वाबे मुबारक में ख़लल आए ज़ानू न हटाया यहां तक कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया। जब चश्मे अक़्दस खुली मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपनी नमाज़ का ह़ाल अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की, डूबा हुवा सूरज पलट आया, मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने नमाज़े अ़स्र अदा की, फिर डूब गया, इस से साबित हुवा कि अफ़्ज़लुल इ़बादात नमाज़, वोह भी नमाज़े वुस्ता या'नी अ़स्र मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नींद पर कुरबान कर दी कि इ़बादतें भी हमें हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के सदक़े में मिलीं।

(الشفاء،ج۱،ص۵۹۴۔شواھدالنبوۃ،رکن سادس،ص۲۲۰)

ब वक़्ते हिजरत ग़ारे सौर में पहले ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ गए। अपने कपड़े फाड़ फाड़ कर उस के सूराख़ बन्द

किये, एक सूराख़ बाक़ी रह गया, उस में पाउं का अंगूठा रख दिया, फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलाया, तशरीफ़ ले गए और उन के ज़ानू पर सरे अक़्दस रख कर आराम फ़रमाया, इस ग़ार में एक सांप मुश्ताक़े ज़ियारत रहता था, उस ने अपना सर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पाउं पर मला, उन्हों ने इस ख़याल से कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नींद में फ़र्क़ न आए पाउं न हटाया। आख़िर उस ने पाउं में काट लिया, जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के आंसू चेहरए अन्वर पर गिरे चश्मे मुबारक खुली, अ़र्ज़े ह़ाल किया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लुआ़बे दहन लगा दिया फ़ौरन आराम हो गया। हर साल वोह ज़ह्र औद करता, बारह बरस बा'द इसी से शहादत पाई। सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जान भी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नींद पर कुरबान की।

(مدارج النبوت، ج۲، ص۵۸)

इन्ही निकात को आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा बरेल्वी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपने इन अश्आ़र में बयान फ़रमाया है :

मौला अ़ली ने वारी तेरी नींद पर नमाज़
और वोह भी अ़स्र सब से जो आ'ला ख़त़र की है

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जान इस पे दे चुके
और ह़िफ़्ज़े जां तो जान फ़ुरूज़े ग़ुरर की है

हां तू ने उन को जान उन्हें फेर दी नमाज़
पर वोह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है

साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं
अस्लल उसूल बन्दगी इस ताजवर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

www.dawateislami.net

अदबे सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सहीह् बुख़ारी में सहल बिन साअ़दी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि एक रोज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़बीलए बनी अ़म्र बिन औ़फ़ में सुल्ह् कराने के वासिते़ तशरीफ़ ले गए। जब नमाज़ का वक़्त हुवा मुअज़्ज़िन ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा : क्या आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे ताकि मैं इक़ामत कहूं, फ़रमाया : हां ! और उन्हों ने इमामत की, इस अ़र्से में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ ले आए और सफ़ में क़ियाम फ़रमाया, जब नमाज़ियों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो तस्फ़ीक़ की (बाएं हाथ की पुश्त पर दाएं हाथ की उंगलियां इस त़रह़ मारना कि आवाज़ पैदा हो, तस्फ़ीक़ कहलाता है।) इस ग़रज़ से कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ख़बरदार हो जाएं क्यूंकि उन की आ़दत थी कि नमाज़ में किसी त़रफ़ तवज्जोह न करते थे, जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने तस्फ़ीक़ की आवाज़ सुनी तो गोशए चश्म से देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमां है, लिहाज़ा पीछे हटने का क़स्द किया। इस पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इशारे से फ़रमाया कि अपनी ही जगह पर क़ाइम रहो, सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दोनों हाथ उठाए इस नवाज़िश पर कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इमामत का हुक्म फ़रमाया, **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा किया और पीछे हट कर सफ़ में खड़े हो गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आगे बढ़े। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया कि अबू बक्र ! जब मैं ख़ुद तुम्हें हुक्म कर चुका था तो तुम को अपनी जगह पर खड़े रहने से कौन सी चीज़ मानेअ़ थी ? अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

अबू क़ुहाफ़ा का बेटा इस लाइक़ नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आगे बढ़ कर नमाज़ पढ़ाए।

(صحیح البخاری، کتاب الاذان،باب من دخل لیؤم الناس...الخ، الحدیث ٦٨٤، ج ١، ص ٢٤٤)

इज़्ज़ते रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मर मिटने का जज़्बा

हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मशहूर और बड़े सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم में से हैं। फ़रमाते हैं कि मैं बद्र की लड़ाई में मैदान में लड़ने वालों की सफ़ में खड़ा था। मैं ने देखा कि मेरे दाईं और बाईं जानिब अन्सार के दो कम उ़म्र लड़के हैं। मुझे ख़याल हुवा कि मैं अगर क़वी और मज़बूत़ लोगों के दरमियान होता तो अच्छा था कि ज़रूरत के वक़्त एक दूसरे की मदद कर सकते, मेरे दोनों जानिब बच्चे हैं येह क्या मदद कर सकेंगे ! इतने में उन दोनों लड़कों में से एक ने मेरा हाथ पकड़ कर कहा : चचा जान तुम अबू जहल को पहचानते हो ? मैं ने कहा : हां पहचानता हूं तुम्हारी क्या ग़रज़ है ? उस ने कहा कि मुझे मा'लूम हुवा है कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में गालियां बकता है। उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मैं उस को देख लूं तो मैं उस से जुदा नहीं होऊंगा यहां तक कि वोह मर जाए या मैं मर जाऊं, मुझे उस के सुवाल और जवाब पर तअ़ज्जुब हुवा। इतने में दूसरे ने येही सुवाल किया और जो पहले ने कहा था वोही उस ने भी कहा, इत्तिफ़ाक़न अबू जहल मैदान में मुझे दौड़ता हुवा नज़र आ गया, मैं ने उन दोनों से कहा कि तुम्हारा मत़्लूब जिस के बारे में तुम मुझ से सुवाल कर रहे थे वोह जा रहा है। दोनों येह सुन कर तल्वारें हाथ में लिये हुए एक दम भागे चले गए और जा कर उस पर तल्वार चलानी शुरूअ़ कर दी यहां तक कि उस को गिरा दिया।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ١٠، الحدیث ٣٩٨٨، ج٣، ص ١٤)

www.dawateislami.net

गुस्ताख़ी की सज़ा

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक बेटी हज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا थीं जो अपनी बहन हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से तीन बरस बा'द पैदा हुईं जब कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ 33 बरस थी। और बा'ज़ ने हज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से बड़ी बताया है । लेकिन सहीह़ येही है कि वोह हज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से छोटी थीं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू लहब के बेटे उ़त्बा से निकाह़ हुवा था। जब सूरए तब्बत नाज़िल हुई तो अबू लहब ने उस से और उस के दूसरे भाई उ़तैबा, जिस के निकाह़ में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तीसरी शहज़ादी हज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا थीं, से येह कहा कि मेरी मुलाक़ात तुम से ह़राम है अगर तुम मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बेटियों को त़लाक़ न दे दो, इस पर दोनों ने त़लाक़ दे दी। येह दोनों निकाह़ बचपन में हुए थे रुख़्सती की नौबत भी नहीं आई थी। इस के बा'द फ़त्ह़े मक्का पर हज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के ख़ावन्द मुसलमान हो गए थे मगर बीवी को पहले ही त़लाक़ दे चुके थे, हज़रत रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का निकाह़ हज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़रसा हुवा हो चुका था और हज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने दोनों मरतबा ह़बशा की हिजरत की।

(المواھب اللدنیۃ،المقصد الثانی،الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام،ج۲،ص۶۱)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तीसरी शहज़ादी हज़रते उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا थीं, इस में इख़्तिलाफ़ है कि इन में और हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا में से कौन बड़ी थीं अक्सर की राए येह है कि उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बड़ी थीं। अव्वल उ़तैबा बिन अबी लहब से निकाह़ हुवा मगर रुख़्सती नहीं हुई थी कि सूरए

www.dawateislami.net

तब्बत के नाज़िल होने पर त़लाक़ की नौबत आई जैसा कि ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बयान में गुज़रा लेकिन उन के ख़ाविन्द तो मुसलमान हो गए थे जैसा कि गुज़र चुका और उन के ख़ाविन्द उ़तैबा ने त़लाक़ दी और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में आ कर निहायत गुस्ताख़ी व बे अदबी से पेश आया और ना मुनासिब अल्फ़ाज़ भी ज़बान से निकाले। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ए ज़रर दी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने कुत्तों में से एक कुत्ता इस पर मुसल्लत़ फ़रमा, अबू त़ालिब उस वक़्त मौजूद था बा वुजूद मुसलमान न होने के सहम गया और कहा कि इस दुआ़ए ज़रर से तुझे ख़लासी नहीं। चुनान्चे उ़तैबा एक मरतबा शाम के सफ़र में जा रहा था, उस का बाप अबू लहब बा वुजूद सारी अ़दावत और दुश्मनी के कहने लगा कि मुह़म्मद की दुआ़ए ज़रर की फ़िक्र है, क़ाफ़िले के सब लोग हमारी ख़बर रखें। एक मन्ज़िल पर पहुंचे, वहां शेर ज़ियादा थे, रात को तमाम क़ाफ़िले का सामान एक जगह जम्अ़ किया और उस का टीला सा बना कर उस पर उ़तैबा को सुलाया और क़ाफ़िले के तमाम आदमी चारों त़रफ़ सोए। रात को एक शेर आया और सब के मुंह सूंघे इस के बा'द एक जस्त लगाई और उस टीले पर पहुंच कर उ़तैबा का सर बदन से जुदा कर दिया, उस ने एक आवाज़ दी मगर साथ ही काम तमाम हो चुका था। बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि येह मुसलमान हो चुका था और येह क़िस्सा पहले भाई के साथ पेश आया। बहर ह़ाल ह़ज़रते रुक़य्या और ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) के पहले शोहरों में से एक मुसलमान हुए दूसरे के साथ येह इ़ब्रत का वाक़िआ़ पेश आया।

(المرجع السابق،ص ٦٢)

ता'ज़ीमे इरशादे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को निकाल कर फेंक दिया और फ़रमाया : क्या तुम में से कोई चाहता है कि आग का अंगारा अपने हाथ में डाले। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने के बा'द किसी ने उस शख़्स से कहा : तू अपनी अंगूठी उठा और बेच कर उस से फ़ाएदा उठा, उस ने जवाब दिया : नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं इसे कभी नहीं लूंगा, जब रसूले खुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे फेंक दिया है तो मैं इसे कैसे ले सकता हूं ? (مشکوٰۃ، کتاب اللباس،باب الخاتم، الفصل الاول، الحدیث۴۳۸۵، ج۲، ص۴۸۱)

﴾2﴿ ह़ज़रते अ़म्र बिन शोऐ़ब कहते हैं कि एक मरतबा सफ़र में हम लोग हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ थे। मैं हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। मेरे ऊपर एक चादर थी जो कुसुम के रंग में हल्की सी रंगी हुई थी। हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देख कर फ़रमाया : येह क्या ओढ़ रखा है ? मुझे इस सुवाल से हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना गवारी के आसार मा'लूम हुए। घर वालों के पास वापस हुवा तो उन्हों ने चुल्हा जला रखा था मैं ने वोह चादर उस में डाल दी। दूसरे रोज़ जब ह़ाज़िर हुवा तो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह चादर क्या हुई ? मैं ने क़िस्सा सुना दिया, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : औ़रतों में से किसी को क्यूं न पहना दी, औ़रतों के पहनने में तो कोई मुज़ायक़ा न था।

(سنن ابی داود، کتاب اللباس،باب فی الحمرۃ،الحدیث۴۰۶۶،ج۴،ص۷۳)

﴾3﴿ हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा दौलत कदे से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में एक कुब्बा (गुम्बददार हुजरह) देखा जो ऊपर बना हुवा था। सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से दरयाफ़्त किया, येह क्या है? उन्हों ने अ़र्ज़ किया: फुलां अन्सारी ने कुब्बा बनाया है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुन कर ख़ामोश रहे किसी दूसरे वक़्त वोह अन्सारी हाज़िरे ख़िदमत हुए। सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'राज़ फ़रमाया, सलाम का जवाब भी न दिया, उन्हों ने इस ख़याल से कि शायद ख़याल न हुवा हो दोबारा सलाम अ़र्ज़ किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर ए'राज़ फ़रमाया और जवाब नहीं दिया, वोह इस के कैसे मुतहम्मिल हो सकते थे, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से जो वहां मौजूद थे कहा: ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो मुझे ना पसन्द फ़रमा रहे हैं! उन्हों ने कहा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए थे रास्ते में तुम्हारा कुब्बा देखा था और दरयाफ़्त फ़रमाया था कि किस का है?

येह सुन कर वोह सहाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़ौरन गए और उस को तोड़ कर ऐसा ज़मीन के बराबर कर दिया कि नामो निशान भी न रहा और फिर आ कर अ़र्ज़ भी नहीं किया। इत्तिफ़ाक़न हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही का उस जगह किसी दूसरे मौक़अ़ पर गुज़र हुवा तो देखा कि वोह कुब्बा वहां नहीं है, दरयाफ़्त फ़रमाया, सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने अ़र्ज़ किया: अन्सारी ने आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ए'राज़ को कई रोज़ हुए ज़िक्र किया था, तो हम ने कह दिया था तुम्हारा कुब्बा देखा है तो उन्हों ने आ कर इस को बिल्कुल तोड़ दिया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि हर ता'मीर आदमी पर वबाल है मगर वोह ता'मीर जो सख़्त ज़रूरत और मजबूरी की हो। (سنن ابی داود، کتاب الادب،باب ماجاء فی البناء،الحدیث۵۲۳۷، ج۴، ص۴۶۰)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ ह़ज़रते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं एक मरतबा हम लोग एक सफ़र में हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम रिकाब थे और हमारे ऊंटों पर चादरें पड़ी हुई थीं जिन में सुर्ख़ डोरे थे। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं देखता हूं कि येह सुर्ख़ी तुम पर ग़ालिब होती जाती है। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद फ़रमाना था कि हम लोग एक दम ऐसे घबरा के उठे कि हमारे भागने से ऊंट भी इधर उधर भागने लगे और हम ने फ़ौरन सब चादरें ऊंटों से उतार लीं। (سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی الحمرۃ، الحدیث ٤٠٧٠، ج٤، ص٧٤)

﴾5﴿ वाइल बिन ह़जर कहते हैं कि मैं एक मरतबा ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा, मेरे सर के बाल बहुत बढ़े हुए थे, मैं सामने आया तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ज़बाब, ज़बाब" मैं येह समझा कि मेरे बालों को इर्शाद फ़रमाया, वापस गया और उन को कटवा दिया। जब दूसरे दिन ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : मैं ने तुझे नहीं कहा था, लेकिन येह अच्छा किया।

(سنن ابی داود، کتاب الترجل، باب فی تطویل الجمۃ، الحدیث ٤١٩٠، ج٤، ص١١٢)

﴾6﴿ अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक नौ उ़म्र भतीजा ख़ज़फ़ से खेल रहा था, उन्हों ने देखा और फ़रमाया, बरादर ज़ादे ऐसा न करो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि इस से फ़ाएदा कुछ नहीं न शिकार हो सकता है न दुश्मन को नुक़्सान पहुंचाया जा सकता है और इत्तिफ़ाक़न किसी को लग जाए तो आंख फूट जाए, दांत टूट जाए। भतीजा कम उ़म्र था इस लिये जब चचा को ग़ाफ़िल देखा तो फिर खेलने लगा। उन्हों ने देख लिया, फ़रमाया कि मैं तुझे हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुनाता हूं कि इस से उन्हों ने मन्अ़ फ़रमाया है और तू फिर इस काम को करता है? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम तुझ से कभी बात नहीं करूंगा। एक दूसरे

क़िस्से में इस के बा'द है कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तेरे जनाज़े की नमाज़ में शरीक न होऊंगा और न तेरी इयादत करूंगा ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب تعظیم حدیث رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم ...الخ، الحدیث ۱۷، ج۱، ص۱۹)

नोट : ख़ज़्फ़ येह है कि अंगूठे पर छोटी सी कंकरी रख कर उंगली से फेंकी जाए येह बच्चों का एक बेकार और अन्देशा नाक खेल है । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भतीजे ने इर्शादे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुन लेने के बा'द भी पाबन्दी न की जिसे सहाबिये रसूल बरदाश्त न कर सके और तर्के कलाम की क़सम खा ली । आज मुसलमान अपने ह़ालात पर ग़ौर करें कि अह़ादीसे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इर्शादाते सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाबन्दी हम में कितनी है ?

﴾8﴿ ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सह़ाबी हैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, कुछ त़लब किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़त़ा फ़रमाया, फिर किसी मौक़अ़ पर कुछ मांगा, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर मर्ह़मत फ़रमाया, तीसरी दफ़्आ़ फिर सुवाल किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़त़ा फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि : ऐ ह़कीम ! येह माल सब्ज़ बाग़ है ज़ाहिर में बड़ी मीठी चीज़ है मगर इस का दस्तूर येह है कि अगर दिल के इस्तिग़ना से मिले तो इस में बरकत होती है और अगर त़म्अ़ और लालच से ह़ासिल हो तो इस में बरकत नहीं होती ऐसा हो जाता है (जैसे जूउ़ल बक़र की बीमारी हो) कि हर वक़्त खाते जाए और पेट न भरे । ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के बा'द अब किसी से कुछ क़बूल नहीं करूंगा ह़त्ता कि दुन्या से रुख़्सत हो जाऊं । इस के बा'द ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में ह़कीम

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बैतुल माल से कुछ अ़ता करने का इरादा फ़रमाया तो उन्हों ने इन्कार कर दिया इस के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में बार बार इसरार किया मगर उन्हों ने इन्कार ही किया। (صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ،باب الاستعفاف عن المسألۃ،الحدیث۱۴۷۲، ج۱،ص۴۹۷)

﴾8﴿ ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बड़ी सख़ी थीं। अव्वल जो कुछ ख़र्च करती थीं अन्दाज़े से नाप तोल कर ख़र्च करती थीं मगर जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि बांध बांध कर न रखा करो और ह़िसाब न लगाया करो जितना भी कुदरत में हो ख़र्च किया करो तो फिर ख़ूब ख़र्च करने लगीं। अपनी बेटियों और घर की औ़रतों को नसीह़त किया करती थीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में ख़र्च करने और सदक़ा करने में ज़रूरत से ज़ियादा होने और बचने का इन्तिज़ार न किया करो कि अगर ज़रूरत से ज़ियादती का इन्तिज़ार करती रहोगी तो होने का ही नहीं (कि ज़रूरत ख़ुद बढ़ती रहती है) और अगर सदक़ा करती रहोगी तो सदक़े में ख़र्च कर देने से नुक़्सान में न रहोगी। (الطبقات الکبری، ج۸،ص۱۹۸)

﴾9﴿ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने शागिर्द से फ़रमाया कि मैं तुम्हें अपना और फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से ज़ियादा लाडली बेटी थीं, क़िस्सा सुनाऊं ! शागिर्द ने अ़र्ज़ किया ज़रूर, फ़रमाया कि वोह अपने हाथ से चक्की पिसती थीं जिस की वज्ह से हाथों में निशान पड़ गए थे और ख़ुद पानी की मश्क भर कर लाती थीं जिस की वज्ह से सीने पर मश्क की रस्सी के निशान पड़ गए थे और घर में झाड़ू वग़ैरा ख़ुद ही देती थीं जिस की वज्ह से तमाम कपड़े मैले हो जाया करते थे। एक मरतबा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास कुछ गुलाम बांदियां आईं, मैं ने फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से कहा तुम भी जा कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एक ख़िदमतगार मांग लो ताकि

www.dawateislami.net

तुम को कुछ मदद मिल जाए। वोह हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, वहां मज्मअ़ था और ह़या मिज़ाज में बहुत ज़ियादा थी इस लिये ह़या की वज्ह से सब के सामने बाप से भी मांगते हुए शर्म आई, वापस आ गईं। दूसरे रोज़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद तशरीफ़ लाए, इर्शाद फ़रमाया कि फ़ातिमा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! कल तुम किस काम के लिये गई थीं ? वोह ह़या की वज्ह से चुप हो गईं। मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन की येह ह़ालत है कि चक्की की वज्ह से हाथों में गठ्ठे पड़ गए और मश्क की वज्ह से सीने पर रस्सी के निशान हो गए, हर वक़्त के काम काज की वज्ह से कपड़े मैले रहते हैं। मैं ने कल इन से कहा था कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ख़ादिम आए हुए हैं एक येह भी मांग लें इस लिये गई थीं।

बा'ज़ रिवायात में आया है कि ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे और अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास एक ही बिस्तर है और वोह भी मेंढे की एक खाल है रात को उस को बिछा कर सो जाते हैं सुब्ह़ को उसी पर घास दाना डाल कर ऊंट को खिलाते हैं। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि बेटी सब्र करो ! ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام और उन की बीवी के पास दस बरस तक एक ही बिछोना था वोह भी ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का चौग़ा था रात को बिछा कर उसी पर सो जाते थे, तो तक़्वा ह़ासिल करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का फ़रीज़ा अदा करती रहो और घर के काम काज को अन्जाम देती रहो और जब सोने के वासिते लेटा करो तो سُبْحٰنَ اللہ 33 मरतबा और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ 33 मरतबा और اَللہُ اَکْبَر 34 मरतबा पढ़ लिया करो येह ख़ादिम से ज़ियादा अच्छी चीज़ है।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अ़र्ज़ किया : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से राज़ी हूं।

(سنن ابی داود، کتاب الادب،باب فی التسبیح عند النوم، الحدیث٥٠٦٣، ج٤، ص٤٠٩)

《10》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के भान्जे थे और वोह उन से बहुत मह़ब्बत फ़रमाती थीं। उन्हों ने ही गोया भान्जे को पाला था। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इस फ़य्याज़ी से परेशान हो कर कि ख़ुद तकलीफ़ें उठातीं और जो आए फ़ौरन ख़र्च कर देतीं एक मरतबा कह दिया कि ख़ाला का हाथ किस त़रह़ रोकना चाहिये ? ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को भी येह फ़िक़रा पहुंच गया। इस पर नाराज़ हो गईं कि मेरा हाथ रोकना चाहता है और उन से न बोलने की नज़्र के त़ौर पर क़सम खाई। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ख़ाला की नाराज़ी से बहुत सदमा हुवा, बहुत लोगों से सिफ़ारिश कराई मगर उन्हों ने अपनी क़सम का उ़ज़्र फ़रमा दिया।

आख़िर जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बहुत ही परेशान हुए तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नन्हियाल के दो ह़ज़रात को सिफ़ारिशी बना कर साथ ले गए, वोह दोनों ह़ज़रात इजाज़त ले कर अन्दर गए , येह भी छुप कर साथ हो लिये, जब वोह दोनों से पर्दे के अन्दर बैठ कर बातचीत फ़रमाने लगीं तो येह जल्दी से पर्दे में चले गए और जा कर ख़ाला से लिपट गए और बहुत रोए और ख़ुशामद की, वोह दोनों ह़ज़रात भी सिफ़ारिश करते रहे और मुसलमान से बोलना छोड़ने के मुतअ़ल्लिक़ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्शादात याद दिलाते रहे और अह़ादीस में जो मुमानअ़त इस की आई है वोह सुनाते रहे। जिस की वज्ह से ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उन की ताब न ला सकीं और रोने लगीं, आख़िर मुआ़फ़ फ़रमा दिया और बोलने लगीं, लेकिन अपनी

www.dawateislami.net

क़सम के कफ़्फ़ारे में बार बार ग़ुलाम आज़ाद करती थीं ह़त्ता कि चालीस ग़ुलाम आज़ाद किये और जब भी इस क़सम के तोड़ने का ख़याल आ जाता इतना रोतीं कि दूपट्टा तक आंसूओं से भीग जाता।

(صحیح البخاری، کتاب الادب،باب الھجرۃ،الحدیث۶۰۷۳،ج۳،ص۱۱۹)

शौक़े मुवाफ़क़त

ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी वफ़ात से चन्द घन्टे पेशतर अपनी साहिबज़ादी ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से दरयाफ़्त किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कफ़न में कितने कपड़े थे ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात शरीफ़ किस दिन हुई ? इस सुवाल की वज्ह येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आरज़ू थी कि कफ़न व यौमे वफ़ात में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुवाफ़क़त हो। ह़यात में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ था ही। वोह ममात में भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की इत्तिबाअ़ चाहते थे।

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز،باب موت یوم الاثنین،الحدیث۱۳۸۷،ج۱،ص۴۶۸)

अल्लाह अल्लाह येह शौक़े इत्तिबाअ़ क्यूं न हो, सिद्दीक़े अक्बर थे

ता'ज़ीमे तबर्रुकात

﴾1﴿ **मोहरे नबुव्वत चूम ली :** ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाने से पहले मुख़्तलिफ़ दीनी व मज़हबी राहनुमाओं के पास आते जाते रहे। हर मज़हबी रहनुमा उन्हें वसिय्यत किया करता कि मेरे बा'द फ़ुलां के पास जाना, येह भी पूछ लिया करते कि उन की ज़िन्दगी के बा'द किस के पास रहना चाहिये, जब आप ने आख़िरी राहिब से पूछा कि अब मुझे किस की ख़िदमत में रहना होगा ? उस ने कहा : अब दुन्या में कोई ऐसा शख़्स नज़र नहीं आता

www.dawateislami.net

जिस की सोह्बत में तुम्हें अम्न व सलामती नसीब हो, हां ! अन क़रीब नबिये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ला रहे हैं जो दीने इब्राहीमी पर होंगे, उन की हिजरत गाह ऐसा मक़ाम होगा जो दो पहाड़ों के दरमियान होगा और उस में खजूर के दरख़्त कस्रत से पाए जाएंगे, नबिये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत होगी, आप हदिय्या क़बूल करेंगे, सदक़ा नहीं खाएंगे।

हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस नसीहत को पेशे नज़र रखा और मुल्के अ़रब की त़रफ़ रुख़ किया, जूं ही वोह मदीने पहुंचे तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत कर के क़ुबा तशरीफ़ ला चुके थे। सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में कुछ चीज़ें ले कर ह़ाज़िर हुए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : येह सदक़ा है, हुज़ूर क़बूल फ़रमाइये ! आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाया : तुम खा लो। लेकिन खुद न खाया। ह़ज़रते सलमान ने दिल में कहा एक निशानी तो पूरी हो गई। सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं : बा'दे अज़ां मैं सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم की जमाअ़त में मिल गया। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुबा से मदीने तशरीफ़ लाए तो मैं कुछ चीज़ें ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा और अ़र्ज़ की ! हुज़ूर येह हदिय्या है क़बूल फ़रमाइये। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के साथ मिल कर खा लिया। मैं ने अपने आप से कहा : दो अ़लामतें पूरी हो गईं।

इस के बा'द मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस वक़्त ह़ाज़िर हुवा जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जन्नतुल बक़ीअ़ में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का जनाज़ा पढ़ाने के लिये तशरीफ़ ले गए थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कन्धों पर दोशाला था

जिसे आप चादर और ईज़ार के त़ौर पर इस्ति'माल कर रहे थे। मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे हो लिया। जब कपड़े का दामन एक त़रफ़ हुवा तो मैं ने मोहरे नबुव्वत को वैसा ही पाया जैसे मुझे बताया गया था, मैं जज़्बात से इस क़दर मग़लूब हुवा कि बे इख़्तियार मोहरे नबुव्वत को बढ़ कर चूम लिया और रोने लगा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने पास बुला लिया। मैं ने अपनी सारी सर गुज़श्त हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुनाई, आप ने इसे पसन्द फ़रमाया, सह़ाबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने भी मेरी सर गुज़श्त सुनी। (شواهد النبوة، رکن رابع، ص٨٤)

﴾2﴿ **मूए मुबारक :** मक़ामे हुदैबिया में आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बाल बनवा कर तमाम बाल मुबारक एक सब्ज़ दरख़्त पर डाल दिये। तमाम अस्ह़ाब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم उसी दरख़्त के नीचे जम्अ़ हो गए और बालों को एक दूसरे से छीनने लगे। ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं कि मैं ने भी चन्द बाल ह़ासिल कर लिये। आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द जब कोई बीमार होता तो मैं उन मुबारक बालों को पानी में डिबो कर पानी मरीज़ को पिलाती तो रब्बुल इ़ज़्ज़त उसे सिह़्ह़त अ़त़ा कर देता।

(مدارج النبوت، قسم سوئم، باب ششم، ج٢، ص٢١٧)

﴾3﴿ **लुआ़बे मुबारक :** उ़तबा बिन फ़रक़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जिन्हों ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के अ़हद में मोसल को फ़त्ह़ किया उन की बीवी उम्मे आ़सिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا बयान करती हैं कि उ़तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के हां हम चार औ़रतें थीं हम में से हर एक ख़ुश्बू लगाने में कोशिश करती थीं ताकि दूसरी से अत़यब हो और उ़तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कोई ख़ुश्बू न लगाते थे मगर अपने हाथ से तेल मल

कर दाढ़ी को मल लेते थे और हम में सब से ज़ियादा ख़ुश्बूदार थे, जब वोह बाहर निकलते तो लोग कहते कि हम ने उ़त्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ुश्बू से बढ़ कर कोई ख़ुश्बू नहीं सूंघी। एक दिन मैं ने उन से पूछा कि हम इस्ति'माले ख़ुश्बू में कोशिश करती हैं और तुम हम से ज़ियादा ख़ुश्बूदार हो, इस का सबब क्या है ? उन्हों ने जवाब दिया कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में मेरे बदन पर आबले नमूदार हुए। मैं ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उस बीमारी की शिकायत की। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि कपड़े उतार दो। मैं ने सत्र के इ़लावा कपड़े उतार दिये और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठ गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़ब अपने दस्ते मुबारक पर डाल कर मेरी पीठ और पेट पर मल दिया उस दिन से मुझ में ख़ुश्बू पैदा हो गई।

(الاستیعاب،باب حرف العین ،عتبہ بن فرقد،ج۳،ص۱۴۸)

﴾5﴿ **पसीनए मुबारक :** हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे यहां तशरीफ़ लाए और क़ैलूला फ़रमाया। ह़ालते ख़्वाब में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसीना आया, मेरी मां उम्मे सुलैम ने एक शीशी ली और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसीना मुबारक उस में डालने लगीं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुए और फ़रमाने लगे : उम्मे सुलैम तुम येह क्या करती हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पसीना है हम उस को अपनी ख़ुश्बू में डालते हैं और वोह सब ख़ुश्बूओं से उ़म्दा ख़ुश्बू है।

दूसरी रिवायत मुस्लिम में है कि उम्मे सुलैम ने यूं अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम अपने बच्चों के लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़रक़े मुबारक की बरकत के उम्मीदवार हैं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तू ने सच कहा। सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़रक़े मुबारक को चेहरे और बदन पर मल दिया करते थे और वोह तमाम बलाओं से मह़फ़ूज़ रहा करते थे। (صحیح مسلم،کتاب الفضائل،باب طیب عرق النبی،الحدیث:۲۳۳۱،ص۱۲۷۲)

﴾5﴿ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि एक शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने अपनी बेटी का निकाह़ कर दिया है, मैं उसे उस के ख़ावन्द के घर भेजना चाहता हूं, मेरे पास कोई ख़ुश्बू नहीं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ इनायत फ़रमाएं। सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पास मौजूद नहीं मगर कल सुब्ह़ एक चौड़े मुंह वाली शीशी और किसी दरख़्त की लकड़ी मेरे पास ले आना। दूसरे रोज़ वोह शख़्स शीशी और लकड़ी ले कर ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों बाज़ूओं से उस में अपना पसीनए मुबारक डालना शुरूअ़ किया यहां तक कि वोह भर गई फिर फ़रमाया इसे ले जा कर अपनी बेटी से कह देना कि इस लकड़ी को शीशी में तर कर के मल लिया करें। पस जब वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पसीनए मुबारक को लगाती तो तमाम अह्ले मदीना को उस की ख़ुश्बू पहुंचती यहां तक कि उस के घर का नाम "**बैतुल मुत़य्यिबीन**" (या'नी ख़ुश्बू वालों का घर) हो गया। (شواھد النبوۃ،رکن خامس،ص۱۸۱)

वल्लाह जो मिल जाए मेरे गुल का पसीना मांगे न कभी इ़त्र न चाहे दुल्हन फूल

﴾6﴿ **अदब व बरकत अन्दोज़ी :** ह़दीस शरीफ़ में मरवी है कि अबू मह़्ज़ूरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पेशानी में बाल इस क़दर दराज़ थे कि जब वोह बैठते और उन बालों को छोड़ देते तो ज़मीन पर पहुंचते। लोगों ने उन से पूछा कि आप ने बालों को इतना क्यूं बढ़ाया ? उन्हों ने कहा कि इस वज्ह से इन को नहीं कटवाता कि एक वक़्त इन पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दस्ते मुबारक लगा था इस लिये मैं ने तबर्रुकन इन बालों को छोड़ रखा है।

(مدارج النبوت، باب نہم، واجبات حقوق آنحضرت صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم ...الخ، ج۱، ص۳۱۶)

﴾7﴿ **मस्ह़े दस्त का कमाल :** ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम मुतवफ़्फ़ा (सि. 430 हि.) ने ब रिवायते उ़ब्बाद बिन अ़ब्दुस्समद नक़्ल किया है। उन्हों ने कहा कि हम ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के यहां आए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कनीज़ से कहा कि दस्तरख़्वान लाओ ताकि हम चाश्त का खाना खाएं, वोह ले आई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि वोह रूमाल लाओ, वोह एक मैला रूमाल ले आई। आप ने फ़रमाया कि तन्नूर गर्म कर, उस ने तन्नूर गर्म किया, फिर आप के हुक्म से रूमाल उस में डाल दिया गया। वोह ऐसा सफ़ेद निकला गोया कि दूध है। हम ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि येह क्या है ? उन्हों ने फ़रमाया कि येह वोह रूमाल है जिस से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रूए मुबारक को मस्ह़ फ़रमाया करते थे। जब येह मैला हो जाता है तो इसे हम यूं साफ़ कर लेते हैं क्यूंकि आग उस शै पर असर नहीं करती जो अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के रूए मुबारक पर से गुज़री हो।

(شواھد النبوۃ، رکن خامس، ص ۱۸۱)

هرچه اسباب جمال است رخ خوب ترا
همه بروجه کمال است کما لا یخفی

www.dawateislami.net

﴿8﴾ **क़त्अ़ए पैराहन की तासीर :** ह़ज़रते मुह़म्मद बिन जाबिर के दादा सिनान इब्ने त़लक़ अल यमामी वफ़्द बनी ह़नीफ़ा में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और ईमान लाए । उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे अपने कुरते का एक टुकड़ा इनायत फ़रमाइये मैं इस से उन्स रखता हूं । हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की दरख़्वास्त मन्ज़ूर फ़रमा कर अपने कुरते का एक टुकड़ा इनायत फ़रमा दिया । मुह़म्मद बिन जाबिर का बयान है कि मेरे वालिद ने मुझ से बयान किया, वोह क़त्अ़ा हमारे पास था हम उसे धो कर ब ग़रज़े शिफ़ा अपने बीमारों को पिलाया करते थे ।

(الخصائص الکبریٰ،باب ما وقع فی وفد بنی حنیفۃ من الآیات،ج۲،ص۲٦)

﴿9﴾ **अस़ाए मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की बरकात :** जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मेरे पास ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ में एक ऊंट था जिस का घुटना टूटा हुवा था । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे मगर ऊंट की सुस्त रवी इस बात की इजाज़त न देती थी कि मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साथ दे सकूं । मुझ से पूछा गया तो मैं ने सारा माजरा सुनाया । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़सा ले कर ऊंट पर तीन मरतबा घसा और फिर पानी का चुल्लू भर कर उस पर छिड़का और हुक्म दिया कि सुवार हो जाओ । मुझे क़सम है उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की जिस ने हम पर एक सच्चा रसूल मबऊ़स फ़रमाया, आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस क़दर तेज़ चलाते थे मेरा ऊंट पीछे न रहता और मैं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह ही रहता था ।

(الخصائص الکبریٰ،کتاب ذکر معجزاتہ فی ضروب الحیوانات، باب قصۃ الجمل و الناقۃ،ج۲،ص۹۷)

﴾10﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मन्कूल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना हाथ मिम्बरे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठा करते थे रखा और फिर फ़र्ते़ महृब्बत से अपने चेहरे पर फेर लिया।

﴾11﴿ मस्जिदे नबवी (علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) से मुल्हि़क़ ह़ज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मकान था जिस का परनाला बारिश में आने जाने वाले नमाज़ियों पर गिरा करता था। ह़ज़रते उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को उठवा दिया, ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पास आए और कहने लगे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस परनाले को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से मेरी गरदन पर सुवार हो कर लगाया था। येह सुन कर ह़ज़रते उ़मरे फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया कि आप मेरी गरदन पर सुवार हो कर इस को फिर उसी जगह लगा दें, चुनान्चे ऐसा ही हुवा।

(وفاالوفاء،الفصل الثانی عشر،باب بین عمرو العباس،ج۱،ص۴۸۷)

इ़श्क़ो मह़ब्बत

لَا يُؤْمِنُ اَحَدُكُم

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन न होगा जब तक कि मैं उसे उस के बाप, उस की औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊं।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب حب الرسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم...الخ، الحدیث۱۵،ج۱،ص۱۷)

इसी त़रह़ एक दूसरी ह़दीस में नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस में होंगी वोह ह़लावते ईमान पा जाएगा। पहली बात तो येह कि उस मर्दे मोमिन के नज़्दीक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस का रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) सब से ज़ियादा मह़बूब हों। और दूसरी बात येह कि वोह किसी से मह़ब्बत करे तो सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये करे। और तीसरी बात येह कि कुफ़्र से नजात पा लेने के बा'द उस की त़रफ़ पलट कर आने को इस त़रह़ ना पसन्द करे जिस त़रह़ वोह आग में डाले जाने को ना पसन्द करता है।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب حلاوۃ الایمان،الحدیث۱۶،ج۱،ص۱۷)

इस ह़दीस में ईमान की बुन्याद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत को बताया गया। और इस मह़ब्बत को ईमान की दूसरी ह़लावतों पर मुक़द्दम कर के इस की ग़ैर मा'मूली अहम्मिय्यत भी बता दी गई जिस से वाज़ेह़ हो जाता है कि मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जाने ईमान है।

www.dawateislami.net

﴿1﴾ एक रोज़ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि बेशक आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिवाए मेरी जान के जो मेरे दो पहलूओं में है, मेरे नज़्दीक हर शै से ज़ियादा मह़बूब हैं। आं ह़ज़रत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से कोई हरगिज़ मोमिन (कामिल) नहीं बन सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस की जान से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।" येह सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर किताब नाज़िल फ़रमाई। बेशक आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे नज़्दीक मेरी जान से जो मेरे दोनों पहलूओं के दरमियान है ज़ियादा मह़बूब हैं। इस पर हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اَلْاٰن یا عمر या'नी हां अब ! ऐ उ़मर !"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان والنذور، باب کیف کانت یمین النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم، الحدیث ۶۶۳۲، ج۴، ص۲۸۳)

﴿2﴾ ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात का वक़्त आया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने साह़िबज़ादे से अपनी तीन ह़ालतें बयान कीं। दूसरी ह़ालत बयान करते हुए फ़रमाते हैं :

"कोई शख़्स मेरे नज़्दीक रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मह़बूब और मेरी आंखों में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा जलालत व हैबत वाला न था। मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हैबत के सबब से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ नज़र भर कर न देख सकता था।" (الشفاء، الباب الثالث، ج۲، ص۶۸)

﴿3﴾ जब फ़त्हे़ मक्का के दिन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिद अबू क़ुह़ाफ़ा ईमान लाए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश हुए। इस पर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ने अ़र्ज़ किया : "क़सम है उस ज़ात की जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दीने ह़क़ के साथ भेजा है, इन (अबू क़ुह़ाफ़ा) के इस्लाम की निस्बत (आप के चचा) अबू त़ालिब का इस्लाम (अगर वोह इस्लाम लाते) मेरी आंखों को ज़ियादा ठन्डा करने वाला था ।" (الشفاء بتعريف حقوق المصطفى صلى الله عليه وسلم،الباب الثاني،ج٢،ص٤١)

﴾4﴿ ह़ज़रते समामा बिन उसाल यमामी जो अहले यमामा के सरदार थे ईमान ला कर कहने लगे :

"ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़्दीक रूए ज़मीन पर कोई चेहरा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे से ज़ियादा मबग़ूज़ न था । आज वोही चेहरा मुझे सब चेहरों से ज़ियादा मह़बूब है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम ! मेरे नज़दीक कोई दीन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन से ज़ियादा बुरा न था अब वोही दीन मेरे नज़दीक सब दीनों से ज़ियादा मह़बूब है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे नज़दीक कोई शह्र आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शह्र से ज़ियादा मबग़ूज़ न था । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अब वोही शह्र मेरे नज़दीक सब शह्रों से ज़ियादा मह़बूब है ।"

(صحيح البخارى، كتاب المغازى، باب وفد بنى حنيفة، الحديث ٤٣٧٢،ج٣،ص ١٣١)

﴾5﴿ ह़ज़रते हिन्द बिन्ते उ़त्बा (ज़ौजए अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब) जो ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कलेजा चबा गई थीं, ईमान ला कर कहने लगीं : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा मेरी निगाह में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मबग़ूज़ न थे । लेकिन आज मेरी निगाह में रूए ज़मीन पर कोई अहले ख़ैमा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले ख़ैमा से ज़ियादा मह़बूब नहीं ।"

(صحيح البخارى، كتاب مناقب الانصار، باب ذكر هند بنت عتبة، الحديث ٣٨٢٥،ج٢،ص٥٦٧)

www.dawateislami.net

﴾6﴿ ह़ज़रते सफ़वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि हुनैन के दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे माल अ़त़ा फ़रमाया, ह़ालांकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मबग़ूज़ तरीन ख़ल्क़ थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे अ़त़ा फ़रमाते रहे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र में मह़बूब तरीन ख़ल्क़ हो गए। (جامع الترمذی، کتاب الزکاۃ،باب ماجاء فی اعطاء المؤلفۃ قلوبھم،الحدیث٦٦٦،ج٢،ص١٤٧)

﴾7﴿ फ़त्ह़े मक्का में ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अबू सुफ़्यान बिन ह़र्ब को जो अब तक ईमान न लाए थे, अपने पीछे ख़च्चर पर सुवार कर के रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : अगर इजाज़त हो तो इस दुश्मने ख़ुदा की गरदन उड़ा दूं ? ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने अबू सुफ़्यान को पनाह दी है। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्रार किया तो ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ इब्ने ख़त़्त़ाब ! अगर अबू सुफ़्यान क़बीलए बनू अ़दी में से होते तो आप ऐसा न कहते। इस पर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! जिस दिन आप इस्लाम लाए, आप का इस्लाम मेरे नज़्दीक ख़त़्त़ाब के इस्लाम से (अगर वोह इस्लाम लाता) ज़ियादा मह़बूब था, क्यूंकि आप का इस्लाम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक ज़ियादा मह़बूब था।

(الشفاء بتعریف حقوق المصطفی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم،الباب الثانی،ج٢،ص٤١)

﴾8﴿ जंगे उहुद में एक अ़फ़ीफ़ा के बाप, भाई और शोहर शहीद हो गए। उसे येह ख़बर मिली तो कुछ परवाह न की और पूछा येह बताओ कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब उसे

www.dawateislami.net

बता दिया गया कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) بِحَمْدِ اللّٰہِ تَعَالٰی ब ख़ैर हैं तो बोली कि मुझे दिखा दो। हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर कहने लगी : كُلُّ مُصِيبَةٍ بَعْدَكَ جَلَل आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के होते हर मुसीबत हेच है। (المرجع السابق،ص ٤٢)

बढ़ कर उस ने रुख़े अक़्दस को जो देखा तो कहा
तू सलामत है तो फिर हेच हैं सब रन्जो अलम
मैं भी और बाप भी, शोहर भी, बरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं तेरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम

﴾9﴿ ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का पाउं सुन हो गया। उन से येह सुन कर एक शख़्स ने कहा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक जो सब से ज़ियादा मह़बूब है उसे याद कीजिये। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : या मुह़म्मदाह ! (और आप का पाउं अच्छा हो गया) (المرجع السابق،ص ٤٣)

﴾10﴿ ह़ज़रते बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त आया तो उन की ज़ौजा ने कहा : (हाए ग़म !) येह सुन कर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : واطرباه القى غداً الاحبة محمداً وحزبه वाह ख़ुशी ! मैं कल दोस्तों या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मिलूंगा। (المرجع السابق)

﴾11﴿ जब सि. 7 हि. में क़बीलए अशअ़रिय्यीन में से ह़ज़रते अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरा मदीना शरीफ़ को आए तो ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने से पहले पुकार पुकार कर यूं कहने लगे : غداً نلقى الاحبة محمداً وصحبه

हम कल दोस्तों या'नी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मिलेंगे। (المرجع السابق،ص ٤٨)

रिज़ाए रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये जज़्बए ईसार

जिस रोज़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आज़िमे मौज़ए तबूक हुए, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ैसमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने घर आए। उन की दो ह़सीनो जमील बीवियां थीं जिन्हों ने उस रोज़ ख़स के पर्दों को पानी में बसा कर उन से निहायत उ़म्दा फ़र्श तैयार किये और फिर उन पर अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये निहायत उ़म्दा और लज़ीज़ खाने चुने। जूं ही अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन खानों को देखा तो कहा वोह रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिसे परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ ने आयिन्दा व गुज़श्ता तमाम गुनाहों से मुनज़्ज़ा पैदा फ़रमाया, इस शदीद गर्मी के मौसिम में कुफ़्फ़ार से क़िताल के लिये तशरीफ़ ले जाएं और अ़ब्दुल्लाह रंगा रंग खानों से सेर हो कर इन बीवियों से मुबाशरत करे, ऐसा नहीं हो सकता। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं जब तक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में न पहुंचूं इन बीवियों से कलाम नहीं करूंगा।

घर से निकले और अपने ऊंट पर सुवार हो कर एक त़रफ़ चल दिये। बीवियों ने हर चन्द कलाम की कोशिश की लेकिन आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुल्तफ़ित न हुए। जूं ही अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मक़ामे तबूक के नज़्दीक पहुंचे तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बताया गया कि एक ऊंट सुवार दूर से इस त़रफ़ आता हुवा दिखाई देता है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वोह इब्ने ख़ैसमा होगा। नज़्दीक पहुंचे तो देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान के मुत़ाबिक़ वोह इब्ने ख़ैसमा ही थे। उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंच कर सलाम अ़र्ज़ किया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाबन फ़रमाया : ऐ इब्ने ख़ैसमा ! رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه क्या ही अच्छी बात है तुम फ़ानी नाज़ो ने'मत को छोड़ कर रिज़ाए ह़क़ में खो गए जो तुम्हारे लिये बेहतर है। (شرح العلامة الزرقانی، باب غزوة تبوک، ج٤، ص٨٢)

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **का जज़्बए जां निसारी :** हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब ग़ज़वए तबूक के लिये रवाना हुए तो मेरा ऊंट बहुत लाग़र और ज़ईफ़ था। मेरा ख़याल था कि चन्द रोज़ मज़ीद ठहर कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जा मिलूंगा। मैं ने कई रोज़ तक अपने ऊंट को चारा खिलाया, बा'दे अज़ां मैं आज़िमे सफ़र हुवा। जब एक जगह पहुंचा तो मेरे ऊंट की टांग टूट गई जिस के बाइस वोह आगे न चल सका, मैं ने अपना मालो मताअ़ अपनी पुश्त पर रखा और चल दिया। रास्ते में सख़्त गर्मी से दो चार होना पड़ा। लश्करे इस्लाम के पास पहुंचा तो लोगों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : कोई शख़्स पैदल चला आ रहा है। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अबू ज़र गिफ़ारी होंगे। जब मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ियाम की हालत में फ़रमाया : ख़ुश रहो अबू ज़र ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तुम तन्हा सफ़र करते हो तन्हा ही इस दुन्या से जाओगे और तन्हा ही बरोज़े हश्र उठोगे।

कहते हैं जब अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हुवा तो आप तन्हा ही थे। अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ब हालते वफ़ात पाया तो कहा : सच फ़रमाया था ख़ुदा के सादिक़ो मस्दूक़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने। साहिबे मुस्तक़्सी ने लिखा है कि मैं ने हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मज़ार की ज़ियारत की है। मुझे वहां वोह कैफ़ो जज़्ब हासिल हुवा जो दूसरे सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मज़ार पर न पा सका। मैं ने उन की क़ब्र के पास नमाज़ अदा की, जूं ही मैं सर ब सुजूद हुवा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तुर्बते अन्वर से मुश्को अ़म्बर की ख़ुश्बू निकली जिस ने मेरे मशामे जां तक को मुअ़त्तर व मुअ़म्बर कर दिया। (شواھد النبوۃ،رکن رابع،ص۱۲۵)

شدیم خاک ولیکن زتربت ما   تواں شناخت کزیں خاک مردے خیزد

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द दुन्या क़ाबिले दीद न रही : जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी की ख़बर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुअज़्ज़िन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुनी तो वोह इस क़दर ग़मज़दा हुए कि नाबीना होने की दुआ़ मांगने लगे कि मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर येह दुन्या मेरे लिये क़ाबिले दीद न रही। आप उसी वक़्त नाबीना हो गए। लोगों ने कहा : तुम ने येह दुआ़ क्यूं मांगी ? फ़रमाया : लज़्ज़ते निगाह तो देखने में है मगर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अब मेरी आंखें किसी के दीदार का ज़ौक़ ही नहीं रखतीं। (المرجع السابق،ص ١٣٩)

इज़्तिराबे इ़श्क़ : एक दिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े ज़ार हज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हाज़िर हुए तो उन का चेहरा उतरा हुवा और रंग उड़ा हुवा देख कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वज्ह पूछी तो दर्दमन्द आ़शिक़ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! न कोई जिस्मानी तक्लीफ़ है और न कहीं दर्द। बात येह है कि रुख़े अन्वर जब आंखों से ओझल होता है तो दिल बेताब हो जाता है फ़ौरन ज़ियारत से इस को तसल्ली देता हूं। अब रह रह कर मुझे येह ख़याल सता रहा है कि जन्नत में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मक़ामे बुलन्द कहां होगा और येह मिस्कीन किस गोशे में पड़ा होगा। अगर रूए ताबां की ज़ियारत न हुई तो मेरे लिये जन्नत की सारी लज़्ज़तें ख़त्म हो जाएंगी, फ़िराक़ो हिज्र का येह जांका सदमा तो इस दिले ना तवां से बरदाश्त न हो सकेगा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह माजरा सुन कर ख़ामोश हो गए। यहां तक कि जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام येह मुज़्दा ले कर तशरीफ़ लाए।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا (پ٤،النساء:٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग ।

(الجامع لاحكام القرآن،الحديث٢٣٠٩،ج٥،ص٢٦١)

इताअ़त गुज़ार उ़श्शाक़ को जन्नत में जुदाई का सदमा नहीं पहुंचेगा बल्कि उन को अपने मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत व रूयत मुयस्सर होगी । ह़क़ीक़त येह है कि इश्के़ मुस्त़फ़वी में सिर्फ़ ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ही की येह कैफ़िय्यत न थी बल्कि सब सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का येही ह़ाल था ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बस :

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सदक़ा करने का हुक्म फ़रमाया । इत्तिफ़ाक़न उस ज़माने में मेरे पास कुछ माल मौजूद था । मैं ने कहा : आज इत्तिफ़ाक़ से मेरे पास माल मौजूद है, अगर मैं अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कभी बढ़ सकता हूं तो आज बढ़ जाऊंगा । येह सोच कर मैं खु़शी खु़शी घर गया और जो कुछ घर में था उस में से आधा ले आया । हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि घर वालों के लिये क्या छोड़ा, मैं ने अ़र्ज़ किया कि छोड़ आया, हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आख़िर क्या छोड़ा ? मैं ने अ़र्ज़ किया कि आधा छोड़ आया । और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जो रखा था सब ले आए । हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अबू बक्र ! घर वालों के लिये क्या छोड़ा । उन्हों ने अ़र्ज़ किया : उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को छोड़ आया हूं ।

परवाने को चराग़ है तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम की बरकत, उन की रिज़ा और ख़ुशनूदी को छोड़ आया हूं। हज़रते उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने कहा : मैं हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कभी नहीं बढ़ सकता। येह क़िस्सा ग़ज़्वए तबूक के लिये फ़राहमिये मालो अस्बाब का है।

(شرح العلامة الزرقانی،باب غزوة تبوك،ج٤،ص٦٩)

हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सहीफ़ए अख़्लाक़ में हुब्बे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इत्तिबाए सुन्नत के निहायत नुमायां अब्वाब हैं उन्हों ने होश की आंखें खोलीं तो इस्लाम को अपने घराने पर शुरूअ़ दिन ही से पर तव फ़िगन देखा। उन की वालिदा हज़रते उम्मे सुलैम, सौतीले वालिद हज़रते अबू त़ल्हा, चचा हज़रते अनस बिन नज़्र, भाई हज़रते बरा बिन अल मलक, ख़ाला उम्मे हिराम और सभी सरवरे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुख़्लिस शैदाई थे। (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)

ख़ानदान में हर वक़्त ज़ाते रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की दा'वते ह़क़ का चर्चा होता रहता था। इस पाकीज़ा माहोल ने कमसिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत का बीज बो दिया। इस के बा'द उन को मुसल्सल दस बरस तक रहमते दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करने की सआदत नसीब हुई। इस दौरान उन को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बे मिस्ल अख़्लाक़े आली ने इतना मुतअस्सिर किया कि वोह अपने शफ़ीक़ आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आशिक़े सादिक़ बन गए।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब विसाल फ़रमाया तो ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुन्या अन्धेर हो गई। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद उन को हर वक़्त तड़पाती रहती थी। उन की कोई मह़फ़िल ऐसी न होती थी जिस में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर न हो। अ़ह्दे रिसालत का कोई वाक़िआ़ किसी से सुनते या खुद बयान करते तो आंखें नम हो जातीं और शिद्दते तअस्सुर से आवाज़ भर्रा जाती। कई दफ़्आ़ ऐसा होता की अपने आप पर क़ाबू न रहता और सख़्त बे चैनी के आ़लम में मह़फ़िल से उठ खड़े होते और जब तक घर पहुंच कर तबर्रुकाते नबवी की ज़ियारत न कर लेते कल न पड़ती थी।

एक दिन सरवरे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुल्या बयान कर रहे थे कि "मैं ने कभी कोई रेशम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हथेली से ज़ियादा नर्म नहीं छुवा और न कभी कोई खुश्बू हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बदने मुबारक से ज़ियादा खुश्बूदार सूंघी।"

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم، الحدیث ۳۵۶۱، ج۲، ص۴۸۹)

इसी त़रह़ बयान करते करते फ़र्ते़ मह़ब्बत से इतने बे क़रार हो गए कि गिर्या त़ारी हो गया और ज़बान पर बे इख़्तियार येह अल्फ़ाज़ आ गए।

"क़ियामत के दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब होगी तो अ़र्ज़ करूंगा या रसूलल्लाह! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप का अदना गुलाम अनस ह़ाज़िर है।" हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बे पनाह मह़ब्बत और अ़क़ीदत का येह असर था कि उन्हें अक्सर ख़्वाब में सय्यिदुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हो जाती थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन को दुन्या की हर शै से मह़बूब तर थे। (المسند لامام احمد بن حنبل، مسندانس بن مالک بن النضر، الحدیث ۱۳۳۱۵، ج۴، ص۴۴۲)

www.dawateislami.net

सहीह़ बुख़ारी में ख़ुद इन से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीन बातें ऐसी हैं जो किसी शख़्स में पाई जाएं तो गोया उस ने ईमान की ह़लावत पा ली। एक येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **अल्लाह** का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस को सारी दुन्या से अ़ज़ीज़ तर हों, दूसरे येह कि जिस से मह़ब्बत करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर करे, तीसरे येह कि इस्लाम लाने के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ लौट जाने को ऐसा ना पसन्द करे जैसा कि आग में पड़ जाने को करता है।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب حلاوۃ الایمان، الحدیث ١٦، ج ١، ص ١٧)

ह़ज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **:** एक बदवी सह़ाबी ज़ाहिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो ब ज़ाहिर ह़सीन न थे, जंगल के फल सब्ज़ी वग़ैरा आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बत़ौरे हदिय्या लाया करते थे। जब वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रुख़्सत होते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शहर की चीज़ें कपड़ा वग़ैरा उन को दे दिया करते थे। सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन से मह़ब्बत थी और फ़रमाया करते थे कि ज़ाहिर हमारा रू सताई है और हम उस के शहरी हैं।

एक रोज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाज़ार की त़रफ़ निकले तो देखा कि ज़ाहिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी मताअ़ बेच रहे हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पीठ की त़रफ़ जा कर उन की आंखों पर अपना दस्ते मुबारक रखा और उन को गोद में ले लिया, वोह बोले कौन है? मुझे छोड़ दो। उन्हों ने मुड़ कर देखा तो आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे। अपनी पीठ (ब क़स्दे बरकत) और भी हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सीने से लिपटाने लगे। हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कोई है जो ऐसे ग़ुलाम को ख़रीदे। वोह बोले या रसूलल्लाह! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर आप बेचते हैं

तो मुझे कम क़ीमत पाएंगे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तू ख़ुदा के नज़्दीक गिरां क़दर है।"

(جامع الترمذی،شمائل محمدیۃ صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم ،باب ماجاء فی صفۃ مزاح...الخ،الحدیث۲۳۸،ج۵،ص۵۴۵)

हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :

हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मानए जाहिलिय्यत में अपनी वालिदा के साथ नन्हियाल जा रहे थे, बनू क़ैस ने वोह क़ाफ़िला लूटा जिस में ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे। उन को मक्के में ला कर बेचा। हकीम बिन हिज़ाम ने अपनी फूफी हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये उन को ख़रीद लिया। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का निकाह हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हुवा तो उन्हों ने ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बतौरे हदिय्या पेश किया। ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद को उन के फ़िराक़ का बहुत सदमा था और होना भी चाहिये था कि औलाद की महब्बत फ़ित्री चीज़ है। वोह ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़िराक़ में रोते और अश्आर पढ़ते फिरा करते थे, अक्सर जो अश्आर पढ़ते थे उन का मुख़्तसर तर्जमा येह है कि "मैं ज़ैद की जुदाई में रो रहा हूं और येह भी नहीं जानता कि वोह ज़िन्दा है कि उस की उम्मीद रखूं या मौत ने उस का काम तमाम कर दिया कि उस से मायूस हो जाऊं, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मुझे येह भी मा'लूम नहीं कि तुझे ऐ ज़ैद नर्म ज़मीन ने हलाक किया या किसी पहाड़ ने हलाक किया। काश मुझे येह मा'लूम हो जाता कि तू उम्र भर में कभी भी वापस आएगा या नहीं, सारी दुन्या में मेरी इन्तिहाई ग़रज़ तेरी वापसी है। जब आफ़्ताब तुलूअ़ होता है तो मुझे ज़ैद ही याद आता है और जब बारिश होने को आती है तो भी उसी की याद मुझे सताती है और जब हवाएं चलती हैं तो वोह भी उस की याद को भड़काती हैं। हाए मेरा ग़म और मेरी फ़िक्र किस क़दर त़वील हो गई मैं उस की तलाश और

www.dawateislami.net

कोशिश में सारी दुन्या में ऊंट की तेज़ रफ़्तारी को काम में लाऊंगा और दुन्या का चक्कर लगाने से न उक्ताऊंगा, ऊंट चलने से उक्ता जाएं तो उक्ता जाएं लेकिन मैं कभी भी न उक्ताऊंगा। अपनी सारी ज़िन्दगी इसी में गुज़ार दूंगा। हां मेरी मौत ही आ गई तो ख़ैर कि मौत हर चीज़ को फ़ना कर देने वाली है आदमी ख़्वाह कितनी ही उम्मीदें लगाए मगर मैं अपने बा'द फ़ुलां फ़ुलां रिश्तेदारों और आल व औलाद को वसिय्यत कर जाऊंगा कि वोह भी इसी त़रह़ ज़ैद को ढूंडते रहें।"

ग़रज़ वोह येह अश्आ़र पढ़ते और रोते हुए ढूंडते फिरा करते थे। इत्तिफ़ाक़ से उन की क़ौम के चन्द लोगों का ह़ज को जाना हुवा और उन्हों ने ज़ैद को पहचाना। बाप का ह़ाल सुनाया, शे'र सुनाए, उन की याद व फ़िराक़ की दास्तान सुनाई। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के हाथ तीन शे'र कह भेजे जिन का मत़लब येह था कि "मैं यहां मक्के में हू।" उन लोगों ने जा कर ज़ैद की ख़ैरो ख़बर उन के बाप को सुनाई और वोह अश्आ़र सुनाए जो ज़ैद ने कहे थे और पता बताया। ज़ैद के बाप और चचा फ़िदये की रक़म ले कर उन को गुलामी से छुड़ाने की ख़ात़िर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे, तह़क़ीक़ की, पता चलाया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे और अ़र्ज़ किया : ऐ हाशिम की औलाद ! अपनी क़ौम के सरदार ! तुम लोग ह़रम के रहने वाले हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घर के पड़ोसी, तुम ख़ुद क़ैदियों को रिहा कराते हो, भूकों को खाना खिलाते हो। हम अपने बेटे की त़लब में तुम्हारे पास पहुंचे हैं हम पर एह़सान फ़रमाओ और करम करो। फ़िदया क़बूल करो और इस को रिहा कर दो बल्कि जो फ़िदया हो उस से ज़ियादा ले लो। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बस इतनी सी बात है ! अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! बस येही अ़र्ज़ है।

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : उस को बुलाओ और उस से पूछ लो अगर वोह तुम्हारे साथ जाना चाहे तो बिग़ैर फ़िदया ही के वोह तुम्हारी नज़्र है और अगर न जाना चाहे तो मैं ऐसे शख़्स पर जब्र नहीं कर सकता जो ख़ुद न जाना चाहे। उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिह़क़ाक़ से भी ज़ियादा एह़सान फ़रमाया येह बात ख़ुशी से मन्ज़ूर है। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बुलाए गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम इन को पहचानते हो ? अ़र्ज़ किया : जी हां पहचानता हूं येह मेरे बाप हैं और येह मेरे चचा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मेरा ह़ाल भी तुम्हें मा'लूम है। अब तुम्हें इख़्तियार है कि मेरे पास रहना चाहो तो मेरे पास रहो, इन के साथ जाना चाहो तो इजाज़त है। ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले में भला किस को पसन्द कर सकता हूं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये बाप की जगह भी हैं और चचा की जगह भी हैं।

उन दोनों बाप-चचा ने कहा कि ज़ैद ! ग़ुलामी को आज़ादी पर तरजीह देते हो ? बाप-चचा और सब घर वालों के मुक़ाबले में ग़ुलाम रहने को पसन्द करते हो ? ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि हां मैं ने इन में (हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ इशारा कर के) ऐसी बात देखी है जिस के मुक़ाबले में किसी चीज़ को भी पसन्द नहीं कर सकता। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह जवाब सुना तो उन को गोद में ले लिया और फ़रमाया कि मैं ने इस को अपना बेटा बना लिया। ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाप और चचा भी येह मन्ज़र देख कर बहुत ख़ुश हुए और ख़ुशी से उन को छोड़ कर चले गए। (الاصابة فی تمییز الصحابة، زید بن حارثة،ج۲،ص۴۹۵)

हज़रते ज़ैद उस वक़्त बच्चे थे, बचपन की हालत में भी सारे घर को, अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को गुलामी पर कुरबान कर देना जिस अ़ज़ीमो जलील महब्बत का पता देता है वोह ज़ाहिर है।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और बारगाहे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द बा'ज़ लोगों ने येह ख़याल ज़ाहिर किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शुहदा के दरमियान दफ़्न कर दें और बा'ज़ कहते थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न किया जाए। मैं ने कहा कि मैं तो उन्हें अपने हुजरे में अपने महबूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास दफ़्न करूंगी। अभी हम इस इख़्तिलाफ़ में थे कि मुझ पर नींद ग़ालिब आ गई मैं ने किसी को येह कहते सुना कि महबूब को महबूब की त़रफ़ ले आओ। जब मैं बेदार हुई तो पता चला कि तमाम हाज़िरीन ने इस आवाज़ को सुन लिया था यहां तक कि मस्जिद में मौजूद लोगों ने भी इस आवाज़ को गोशे होश से सुना।

वफ़ात से पहले सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मेरे ताबूत (जनाज़े) को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के पास ला कर रख देना और السلام علیک یارسول اللّٰہ कह कर अ़र्ज़ करना कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आस्तानए आ़लिया पर हाज़िर हुवा है। अगर इजाज़त हुई तो दरवाज़ा खुल जाएगा और मुझे अन्दर ले जाना वरना जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न कर देना। रावी का बयान है कि जब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वसिय्यत पर अ़मल किया गया तो अभी वोह कलिमात पायए इख़्तिताम को न पहुंचे थे कि पर्दा उठ गया। और आवाज़ आई कि "ह़बीब को ह़बीब की त़रफ़ ले आओ।"

(شواھد النبوۃ،رکن سادس،ص ۲۰۰)

जाए ग़ौर है कि अगर अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़िन्दा न जानते तो हरगिज़ ऐसी वसिय्यत न फ़रमाते कि रौज़ए अक़्दस के सामने मेरा जनाज़ा रख कर इजाज़त त़लब की जाए। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत की और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उसे अ़मली जामा पहनाया जिस से साबित होता है कि ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का अ़क़ीदा था कि रसूले अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बादे विसाल भी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा और साह़िबे इख़्तियार व तसर्रुफ़ हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ

शौक़े रफ़ाक़त : ह़ज़रते रबीआ़ बिन का'ब अस्लमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं रात को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में रहा करता था, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वुज़ू के लिये पानी लाया करता था और दीगर ख़िदमत भी बजा लाया करता था। एक रोज़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : سَل (मांगो)। मैं ने अ़र्ज़ किया : اَسْئَلُكَ مُرَافَقَتَكَ فِی الْجَنَّةِ मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बिहिश्त में आप का साथ मांगता हूं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस के इ़लावा और कुछ ? ह़ज़रते रबीआ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि मेरा मक़्सूद तो वोही है। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया तू कस्रते सज्दा से मेरी मदद कर।

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ،باب فضل السجود، الحدیث ۴۸۹،ص ۲۵۲)

मत़लब येह है कि ख़ुद भी इस मक़ामे बुलन्द की शान पैदा करो, मेरी अ़त़ा के नाज़ पर कस्रते इ़बादत से ग़ाफ़िल न हो जाओ। अशिअ़्अ़तुल्लम्आ़त में इस ह़दीस के तह़त है :

"واز اطلاق سوال کہ فرمودہ سل بخواہ و تخصیص نہ کرد وبمطلوبی خاص معلوم می شود کہ کا رھمہ بدست ہمت و کرامت اوست صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم ہر چہ خواھدو ہرکرا خواھد باذن پروردگار خود بدھد"

(اشعۃ اللمعات، کتاب الصلاۃ،باب السجود وفضلہ،ج۱،ص۴۲۵)

तर्जमा : सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मांगो ! इस में किसी ख़ास मत़लब की तख़्सीस नहीं की। इस से मा'लूम होता है कि सारे काम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते इ़ज़्ज़त व कुव्वत में हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जो चाहें जिसे चाहें अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ के इज़्न से अ़ता फ़रमाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत :

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि एक रोज़ मैं दोपहर के वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौलत ख़ाने पर ह़ाज़िर हुवा। नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा न थे। मैं ने ख़ादिम से दरयाफ़्त किया, उस ने कहा कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में हैं, मैं वहां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठे हुए थे और कोई आदमी आप के पास न था। मुझे उस वक़्त येह गुमान होता था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वह़ी की ह़ालत में हैं। मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सलाम का जवाब दिया, फिर फ़रमाया : तुझे क्या चीज़ यहां लाई है ? मैं ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत।

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि बैठ जा, मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में बैठ गया, न मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ पूछता और न आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से कुछ फ़रमाते। मैं थोड़ी देर ठहरा कि इतने में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्दी जल्दी चलते हुए आए। उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया फिर फ़रमाया : तुझे क्या चीज़ यहां लाई ? ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हाथ से इशारा फ़रमाया कि बैठ जा। वोह एक बुलन्द जगह पर नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़ाबिल बैठ गए। फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए उन्हों ने भी ऐसा ही किया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वैसा ही फ़रमाया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में बैठ गए।

फिर इसी त़रह़ ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में बैठ गए। इस के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सात या नव के क़रीब संगरेज़े लिये। इन संगरेज़ों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ में तस्बीह़ पढ़ी यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ में शहद की मख्खी के मानिन्द आवाज़ सुनाई दी। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन संगरेज़ों को ज़मीन पर रख दिया और वोह चुप हो गए।

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह संगरेज़े मुझे छोड़ कर अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिये। उन संगरेज़ों ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में तस्बीह़ पढ़ी। यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खियों की त़रह़ उन से आवाज़ सुनी, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह कंकर ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से

ले कर ज़मीन पर रख दिये वोह चुप हो गए और वैसे ही संगरेज़े बन गए। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिये उन के हाथ में भी उन्हों ने तस्बीह़ पढ़ी जैसा कि अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में पढ़ी थी। यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खी की मानिन्द उन की आवाज़ सुनी फिर आप ने ज़मीन पर रख दिये, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिये उन के हाथ में भी उन्हों ने तस्बीह़ पढ़ी जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में पढ़ी थी यहां तक कि मैं ने शहद की मख्खी की मानिन्द उन की आवाज़ सुनी। फिर उन को ज़मीन पर रख दिया गया। वोह चुप हो गए। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह नबुव्वत की ख़िलाफ़त की शहादत है।

(الخصائص الکبریٰ، ذکر معجزاتہ فی انواع الجمادات،باب تسبیح الحصی،ج۲،ص۱۲۴)

शौक़े दीदार : जब ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआन की तिलावत और इस्लाम की तफ़्सीर कर रहे थे ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर सुन रहे थे। इस दौरान जब भी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र आता तो अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का शौक़े दीदार चमक उठता और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात के लिये वोह बेचैन हो जाते। एक बार अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का किस क़दर इश्तियाक़ है कब साल जाएगा और मौसिमे ह़ज आएगा और हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होंगे। ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुस्कुराए और फ़रमाया : अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! सब्र करो, दिन जल्द ही गुज़र जाएंगे।

इब्ने मस्लमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीद के बिग़ैर मुझे सुकून मुयस्सर नहीं कब येह दिन गुज़रेंगे, फिर वोह कुछ देर ख़ामोश रहे और फ़रमाया मुझे अन्देशा है कि किसी वज्ह से हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरी मुलाक़ात न हो सके इस लिये क्या आप हमारे सामने हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरापा ही बयान कर सकते हैं ? आप, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत में रहे हैं और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरए अक़्दस की ज़ियारत से बहरह वर हुए हैं। सभी हाज़िरीन ने बयक ज़बान कहा : इब्ने मस्लमा ! तुम ने हमारे दिल की बात कह दी। इब्ने उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरापा बयान कीजिये।

हज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ा'दे से (दो ज़ानू हो कर) बैठ गए, अपना सर झुकाया, नज़रें नीची कीं जैसे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सरापा अपने ज़ेह्न में ला रहे हों। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना सर उठाया और फ़रमाया : रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रंग में सफ़ेदी और सुर्ख़ी का हसीन इम्तिज़ाज है, चश्माने मुबारक बड़ी ही ख़ूबसूरत हैं, भवें मिली हुई हैं, बाल सीधें हैं, घुंघरियाले नहीं है। दाढ़ी घनी है, दोनों मूंढों के बीच फ़ासिला है, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गरदन मुबारक जैसे चांदी की छागल, हथेली और क़दम मोटे हैं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब चलते हैं तो ऐसा लगता है जैसे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऊंचाई से नीचे आ रहे हों और जब खड़े होते हैं तो ऐसा मा'लूम होता है जैसे आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी चट्टान से निकल पड़े हों, जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी की त़रफ़ रुख़ फ़रमाते तो मुकम्मल त़ौर पर मुतवज्जेह होते हैं।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक पर पसीना मोती के मानिन्द होता है, न आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पस्त क़द हैं न दराज़ क़ामत, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दोनों कन्धों के दरमियान मोहरे नबुव्वत है। जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को यकायक देखता है मरऊब हो जाता है। और जो आश्ना हो कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सोह़बत में रहता है वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करने लगता है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा सख़ी और सब से ज़ियादा जुर्अत मन्द हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े तकल्लुम सब से सच्चा, ईफ़ाए अह़द में सब से पक्के, सब से नर्म त़ब्अ़ और रहन सहन में सब से अच्छे हैं। मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा किसी को न पहले देखा और न ही बा'द में।

जिस वक़्त ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه येह बयान कर रहे थे सह़ाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की उस जमाअ़त पर सुकूत छाया हुवा था, वोह सभी ह़ज़रात पूरी तवज्जोह के साथ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस सरापाए अक़्दस को समाअ़त कर रहे थे अभी ह़ज़रते मुस्अ़ब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अपना बयान मुकम्मल भी न कर सके थे कि अह्ले मह़फ़िल बयक ज़बान पुकार उठे : صلی اللہ علیک یارسول اللہ

मह़ब्बत व फ़िदाइयत : जब मदीनए त़य्यिबा के अन्दर इस्लाम से वाबस्ता होने वालों की ता'दाद ख़ासी बढ़ गई क़बीलए औस व ख़ज़रज के लोग जौक़ दर जौक़ इस्लाम क़बूल करने लगे तो अह्ले मदीना ने अपने हादी व आक़ा नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने वत़न मदीनए मुक़द्दसा तशरीफ़ लाने की दा'वत दी, इस के बा'द अन्सार के लोग बड़ी बे चैनी से रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिज़ार की घड़ियां गिनने लगे। उस वक़्त उन के शौक़े दीदार का आ़लम क्या था इसे बयान नहीं किया जा सकता। जिस लम्ह़े येह बिशारत मिली कि अब

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने के क़रीब आ चुके हैं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उ़श्शाक़ व मुहि़ब्बीन इस्तिक़्बाल के लिये "सनियतुल वदाअ़" तक पहुंच गए कि कब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़ल्अ़ते ज़ेबा से उन की मे'राज होने वाली है और जिस वक़्त उन ह़ज़रात ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा मरह़बा की सदाओं से पूरी फ़ज़ा गूंज उठी, इन इस्तिक़्बाल करने वालों में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़िदाइये रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी थे। येह तो वुफ़ूरे मसर्रत से बे क़ाबू हो रहे थे। येही वोह सह़ाबिये रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक इशारे पर इस्लाम के एक बहुत बड़े दुश्मन अबू राफ़ेअ़ सलाम बिन अबुल हुक़ैक़ को उस के क़ल्ए़ के अन्दर घुस कर क़त्ल किया था।

वाक़िए़ की थोड़ी तफ़्सील यूं है कि सलाम बिन अबुल हुक़ैक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सख़्त दुश्मन था। उस ने बनू नज़ीर के यहूदियों को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़त्ल पर बर अंगेख़्ता किया था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने जब येह सूरते ह़ाल लाई गई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस दुश्मने दीन को कैफ़रे किरदार तक पहुंचाने के लिये सह़ाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की एक जमाअ़त मुन्तख़ब की उन में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी थे। इस दस्ते की क़ियादत ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़तीक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को सोंपी गई। येह दस्ता इस मुहिम के लिये रवाना हुवा। रात में चलता और दिन में कमीन गाहों में छुपा रहता। ता आन कि येह दस्ता सलाम बिन अबुल हुक़ैक़ के क़ल्ए़ के अन्दर दाख़िल हो गया। रात का वक़्त था, क़ल्ए़ के सब लोग सो गए, सलाम बिन अबुल हुक़ैक़ क़ल्ए़ के एक बालाख़ाने पर सो रहा था। निस्फ़ शब में येह लोग आहिस्ता आहिस्ता उस तक पहुंचने के लिये चल पड़े, जब उस के

www.dawateislami.net

क़मरे तक पहुंचे उस की बीवी जाग गई। एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े और उस को हिरासां करने के लिये उस पर तल्वार उठाई, क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत थी कि अबू राफ़ेअ़ सलाम के इलावा किसी को येह क़त्ल न करें। वोह औ़रत ख़ामोश हो गई और थर थराते हुए अपनी जगह दबक गई।

दूसरे फ़िदाई आगे बढ़े, सख़्त तारिकी थी, अबू राफ़ेअ़ की सह़ीह़ जगह का पता न चलता था। फ़िदाइयों की तल्वारें चलने लगीं लेकिन उस को कोई ख़ास गहरा ज़ख़्म न लग सका ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े उन के सामने अबू राफ़ेअ़ था जो कि चीख़ो पुकार कर रहा था आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी तल्वार से उस बदतरीन दुश्मन को कैफ़रे किरदार तक पहुंचा दिया। जब अबू राफ़ेअ़ की हलाकत का यक़ीन हो चुका तो सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की येह जमाअ़त मसर्रत व शादमानी के साथ मदीनए मुक़द्दसा के लिये रवाना हुई। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم मदीने की त़रफ़ तेज़ी से बढ़ रहे थे ताकि अपने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस दुश्मन की हलाकत की बिशारत सुनाएं। येह क़ाफ़िला मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़रीब पहुंचा तो देखा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को इस आ़लम में देखा कि इन के चेहरे आसारे ख़ुशी से दमक रहे हैं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाते हुए कहा : "اَفْلَحَتِ الْوُجُوْہ" येह चेहरे कामयाब हैं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से निकलने वाले येह कलिमात कितने अ़ज़ीम हैं ! सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की इस जमाअ़त ने भी बिला किसी ताख़ीर कहा : "اَفْلَحَ وَجْھُکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ" आप का चेहरए मुबारक कामयाब है, हां हां आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ही येह कामरानी है, अगर

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिदायत व रहनुमाई न होती तो हम कामयाब न होते।

लोग इस कामयाबी से पलटने वाले क़ाफ़िले से सलाम बिन अबुल हुक़ैक़ के क़त्ल की कैफ़िय्यत दरयाफ़्त करने के लिये इन के गिर्द जम्अ़ हो गए, सारे ही मुजाहिदीन कह रहे थे मेरी तल्वार ने अबू राफ़ेअ़ का काम तमाम किया है। हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तबस्सुम फ़रमा रहे हैं कि इस शरफ़े अ़ज़ीम को हर शख़्स अपने ही हिस्से में लेना चाहता है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से इन को ख़ामोश रहने का इशारा किया फिर फ़रमाया : हर शख़्स अपनी तल्वार मेरे सामने पेश करें। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब की तल्वारों का जाइज़ा लिया और इन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया। अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस की तल्वार ने उस का काम तमाम किया है, इस में उस का असर अब भी है। (السيرة النبوية لابن هشام،مقتل سلام بن ابی الحقيق،ج٤،ص٢٣٥)

क़बाइले हज़ील ख़ालिद बिन सुफ़्यान की क़ियादत में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करने के लिये मक़ामे नख़्ला में जम्अ़ हुए। नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **रअ्सुल फ़ितना** ख़ालिद को कैफ़रे किरदार तक पहुंचाने का अ़ज़्मे मुसम्मम फ़रमाया। इस मुहिम के लिये हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मुन्तख़ब किया और फ़रमाया : मुझे मा'लूम हुवा है कि इब्ने सुफ़्यान मुझ से जंग करने के लिये लोगों को जम्अ़ कर रहा है और वोह इस वक़्त नख़्ला में है तुम वहां जा कर उस को क़त्ल करो।

सिपाही ने अपने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आवाज़ पर लब्बैक कहा लेकिन इस मुहिम का सर करना आसान न था। दुश्मन अपने हज़ारों सिपाहियों के बीच में है और वहां तक पहुंचना बहुत मुश्किल है। अब यहां सिवाए ह़र्बे फ़रेब के और कोई चारा

नहीं और उस के लिये भी बातें बनानी होंगी और येह चीज़ इस्लाम में रवा नहीं, नाचार उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस की इजाज़त चाही। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को इस की छूट दी कि الحرب خدعة जंग धोका है।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तल्वार हमाइल किये हुए येह मुहिम सर करने के लिये निकल पड़े और अ़स्र के वक़्त नख़्ला पहुंच गए। वहां उन्हों ने दुश्मनों की ज़बरदस्त भीड़ देखी, फिर अपने निशाने की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए। ख़ालिद को देखा कि औ़रतों के झुंड में है। हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उस वक़्त अपना मन्सूबा मुकम्मल करना चाहते थे मगर अ़स्र की नमाज़ फ़ौत होने का भी उन्हें अन्देशा था। ऐसे वक़्त में उन्हों ने दुश्मन की त़रफ़ पेश क़दमी करते हुए ही इशारे से नमाज़ पढ़ी और ख़ालिद के पास पहुंच गए। ख़ालिद ने उन से पूछा, तुम कौन हो? हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया अ़रब ही का एक आदमी हूं। मैं ने सुना है कि तुम ने उन (हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से लड़ने का मन्सूबा बना रखा है तो मैं भी इसी के लिये आया हूं। ख़ालिद ने कहा : हां हां मेरा भी ख़याल है कि अब बहुत जल्द हम मदीने पर चढ़ाई कर के फ़त्ह ह़ासिल करेंगे।

ख़ालिद अपनी औ़रतों से सिर्फ़ नज़र कर के हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से बातें करने लगा और हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने जे़हन में निशाना फिट करने लगे। हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का त़र्ज़े तकल्लुम बड़ा ख़ूब था। ख़ालिद आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मानूस और मुत़्मइन हो गया। हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ालिद से बातें कर रहे हैं और मौक़अ़ की ताक में हैं। चुनान्चे उन्हें मौक़अ़ हाथ आ ही गया। तल्वार नियाम से निकाली और ख़ालिद का सर क़लम कर दिया। उस का धड़ ज़मीन पर जा गिरा और एक धमक सी हुई। ख़ालिद की औ़रतें मुतवज्जेह

www.dawateislami.net

हुई तो क्या देखती हैं कि उस का सर उस के तन से जुदा पड़ा है। अब क्या था वोह औरतें चीख़ पड़ीं वहां के सभी लोग ख़ालिद की लाश की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और इधर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से दौड़ पड़े। अब जब ख़ालिद के लोग क़ातिल की तलाश कर रहे हैं तो क़ातिल का पता नहीं। अभी उसे दफ़्नाया भी न गया था कि उस के गिर्द जम्अ़ होने वालों का बादल छटने लगा और सुब्ह़ तक पूरा नख़्ला ख़ाली हो गया।

इधर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का दिल हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मन्शा पूरा कर देने पर खुशी व मसर्रत से लबरेज़ है। दौड़ते हुए सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आ रहे हैं, ज़मीन सिमट क्यूं नहीं जाती कि फ़ौरन अपने सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हलाकते दुश्मन की बिशारत सुना दूं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में ह़ाज़िर हुए। हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के दरमियान तशरीफ़ फ़रमा थे। जब हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की आमद मह़सूस की तो आप की त़रफ़ मुस्कुराते हुए नज़र उठाई और इर्शाद फ़रमाया : "اَفْلَحَ الْوَجْہُ" येह चेहरा कामयाब है। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरा मुबारक कामयाब है। मैं ने उस दुश्मन को क़त्ल कर डाला, हु़ज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम ने सच कहा।

उस वक़्त ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह अश्आ़र सुनाने लगे।

اقول لـه والسيف يعجم رأسه   انـا ابـن انيس فارساً غير قعدد

وقلت له خذها بضربة ماجد   حنيف على دين النبى محمد

وكنت اذا هم النبى لكافر   سبقت اليه باللسان وباليد

(السيرة النبوية لابن هشام،غزوة عبدالله بن انيس،ج٤،ص٥٢١)

"मैं उस वक़्त कह रहा था जब तल्वार उस का सर चाट रही थी कि मैं इब्ने अनीस शहसुवार हूं कोई अपाहज नहीं हूं।"

www.dawateislami.net

"और मैं ने कहा : मुझ जैसे दीने मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ाइम रहने वाले साहि़बे मज्द शख़्स का एक वार ही काफ़ी है।"

"और मेरा ह़ाल तो येह है कि जब नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी काफ़िर को अन्जाम तक पहुंचाने का इरादा फ़रमाते हैं तो मैं उस की त़रफ़ ज़बान से और हाथ से सबक़त करता हूं।"

ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मह़ब्बत और फ़िदाइयत : ह़ज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए ख़न्दक़ में हमारी एक त़रफ़ तो मक्के के काफ़िरों और उन के साथ दूसरे काफ़िरों के बहुत से गुरौह जो हम पर चढ़ाई करने आए थे और ह़म्ले के लिये तैयार थे और दूसरी त़रफ़ ख़ुद मदीनए मुनव्वरा में बनू क़ुरैज़ा के यहूद हमारी दुश्मनी पर तुले हुए थे जिन से हर वक़्त अन्देशा था कि कहीं मदीने को ख़ाली देख कर वोह हमारे अह्लो इ़याल को बिल्कुल ख़त्म न कर दें, हम लोग मदीनए मुनव्वरा से बाहर लड़ाई के सिलसिले में पड़े हुए थे, मुनाफ़िक़ों की जमाअ़त घर के तन्हा और ख़ाली होने का बहाना कर के इजाज़त ले कर अपने घरों को वापस जा रही थी और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर इजाज़त मांगने वाले को इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा देते थे।

और इस दौरान में एक रात आंधी इस क़दर शिद्दत से आई कि न इस से पहले कभी इतनी आई न इस के बा'द। अन्धेरा इस क़दर ज़ियादा कि आदमी को पास वाला आदमी तो क्या अपना हाथ भी नज़र नहीं आता था और हवा इतनी सख़्त कि उस का शोर बिजली की त़रह़ गरज रहा था। मुनाफ़िक़ीन अपने घरों को लौट रहे थे। हम तीन सो का मज्मअ़ उसी जगह था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक एक का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमा रहे थे और इस अन्धेरे में हर त़रफ़ तह़क़ीक़ात फ़रमा रहे थे, इतने में मेरे पास

से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा, मेरे पास न तो दुश्मन से बचाव के वासिते़ कोई हथियार था न सर्दी से बचाव के लिये कोई कपड़ा, सिर्फ़ एक छोटी सी चादर थी, जो ओढ़ने में घुटनों तक आती थी और वोह भी मेरी नहीं, अहलिया की थी, उस को ओढ़े घुटनों के बल ज़मीन से चिमटा हुवा बैठा था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : कौन है ? मैं ने अ़र्ज़ किया हुज़ैफ़ा, मगर मुझ से सर्दी के मारे उठा भी न गया और शर्म के मारे ज़मीन से चिमट गया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि उठ खड़ा हो और दुश्मनों के जथ्थे में जा कर उन की ख़बर ला, क्या हो रहा है ? मैं उस वक़्त घबराहट और ख़ौफ़ और सर्दी की वज्ह से सब से ज़ियादा ख़स्ता ह़ाल था, मगर ता'मीले इर्शाद में उठ कर फ़ौरन चल दिया, जब मैं जाने लगा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ दी :

اَللّٰهُمَّ احْفَظْهُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ وَعَنْ يَمِيْنِهٖ وَعَنْ شِمَالِهٖ وَمِنْ فَوْقِهٖ وَمِنْ تَحْتِهٖ

अल्लाह तू इस की हि़फ़ाज़त फ़रमा सामने से और पीछे से, दाएं से और बाएं से, ऊपर से और नीचे से। हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद फ़रमाना था कि गोया मुझ से ख़ौफ़, सर्दी बिल्कुल जाती रही और हर हर क़दम पर मा'लूम हो रहा था कि गोया गर्मी में चल रहा हूं।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चलते वक़्त येह भी इर्शाद फ़रमाया कि कोई ह़रकत न करना चुपचाप देख कर चले आओ कि क्या हो रहा है। मैं वहां पहुंचा तो देखा आग जल रही है और लोग उस में सेंक रहे हैं, एक शख़्स आग पर हाथ सेंकता है और कूख पर फेरता है और हर त़रफ़ से वापस चल दो, वापस चल दो कि सदाएं आ रही हैं। हर शख़्स अपने क़बीले वालों को आवाज़ दे कर येह कहता है कि वापस चलो और हवा की तेज़ी की वज्ह से चारों त़रफ़

से पथ्थर उन के ख़ैमों पर बरस रहे थे, ख़ैमों की रस्सियां टूटती जाती थीं और घोड़े वग़ैरा जानवर हलाक हो रहे थे। अबू सुफ़यान जो गोया उस वक़्त सारी जमाअ़तों का सरदार बन रहा था आग पर सेंक रहा था, मेरे दिल में आया कि मौक़अ़ अच्छा है इस का काम तमाम कर डालूं, तरकश से तीर निकाल कर कमान में रख भी दिया मगर फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद याद आया कि कोई ह़रकत न करना, देख कर चले आना इस लिये मैं ने तीर तरकश में रखा। उस को शुबा हो गया, कहने लगा : तुम में कोई जासूस है, हर शख़्स ने अपने बराबर वाले का हाथ पकड़ा, मैं ने जल्दी से एक आदमी का हाथ पकड़ कर पूछा : तू कौन है ? उस ने कहा तू मुझे नहीं जानता, फ़ुलां हूं। मैं वहां से वापस आया, जब आधे रास्ते पर था तो तक़रीबन बीस सुवार मुझे इमामा बांधे हुए मिले, उन्हों ने कहा कि अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कह देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुश्मनों का इन्तिज़ाम कर दिया बे फ़िक्र रहें।

मैं वापस पहुंचा तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक छोटी सी चादर ओढ़े नमाज़ पढ़ रहे थे येह हमेशा की आ़दते शरीफ़ा थी कि जब कोई घबराहट की बात पेश आती तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते। नमाज़ से फ़राग़त पर मैं ने वहां का जो मन्ज़र देखा अ़र्ज़ किया। जासूस का क़िस्सा सुन कर दन्दाने मुबारक चमकने लगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने पाउं मुबारक के क़रीब लिटा दिया और अपनी चादर का ज़रा सा ह़िस्सा मुझ पर डाल दिया। मैं ने अपने सीने को हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तल्वों से चिमटा लिया।

(مدارج النبوت،قسم سوم،باب پنجم ازھجرت آنحضرت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، ج ۲،

ص ۱۷۳ بتصرف۔دلائل النبوۃ(مترجم)،لامام ابو نعیم احمد بن عبداللہ اصفھانی،

باب غزوۂ خندق کے معجزات ص ٤٤٧،بتصرف)

www.dawateislami.net

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم इश्को वफ़ा की इम्तिहान गाह में

येह शहादत कि उल्फ़त में क़दम रखना है
लोग समझते हैं कि आसान है मुसलमान होना

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का ह़ाल : इब्तिदाए इस्लाम में जो शख़्स मुसलमान होता था वोह अपने इस्लाम को ह़त्तल वस्अ़ मख़्फ़ी रखता था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से भी, इस ख़याल से कि उन को काफ़िरों से अज़िय्यत न पहुंचे, इख़्फ़ा की तल्क़ीन होती थी। जब मुसलमानों की ता'दाद उन्तालीस तक पहुंची तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इज़्हार की दरख़्वास्त की और चाहा कि खुल्लम खुल्ला अ़लल ए'लान तब्लीग़े इस्लाम की जाए। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अव्वल इन्कार फ़रमाया मगर अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के इस्रार पर क़बूल फ़रमा लिया और उन सब ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को साथ ले कर मस्जिदे ह़रम शरीफ़ में तशरीफ़ ले गए।

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने ख़ुत़बा शुरूअ़ किया, येह सब से पहला ख़ुत़बा है जो इस्लाम में पढ़ा गया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ इसी दिन इस्लाम लाए हैं और इस के तीन दिन बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए हैं। ख़ुत़बे का शुरूअ़ होना था कि चारों त़रफ़ से कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन मुसलमानों पर टूट पड़े। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को भी बा वुजूद येह कि मक्कए मुकर्रमा में आ़म तौ़र पर उन की अ़ज़मतो शराफ़त मुसल्लम थी, इस क़दर मारा कि तमाम चेहरए मुबारक ख़ून में भर

गया। नाक, कान सब लहू लुहान हो गए। पहचाने न जाते थे, जूतों से मारा, पाउं में रौंदा, जो न करना था सब कुछ ही किया, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बेहोश हो गए, बनू तीम या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़बीले के लोगों को ख़बर हुई तो वहां से उठा कर लाए।

सब को यक़ीन हो चला था कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस वह़शियाना ह़म्ले से ज़िन्दा न बच सकेंगे, बनू तीम मस्जिद में आए और ए'लान किया : ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अगर ह़ादिसे में वफ़ात हो गई तो हम लोग उन के बदले में उ़त्बा बिन रबीआ़ को क़त्ल करेंगे, उ़त्बा ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मारने में बहुत ज़ियादा बदबख़्ती का इज़्हार किया था। शाम तक ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बेहोशी रही, बा वुजूद आवाज़ें देने के बोलने या बात करने की नौबत न आती थी। शाम को आवाज़ें देने पर वोह बोले तो सब से पहले अल्फ़ाज़ येह थे कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है? लोगों की त़रफ़ से इस पर बहुत मलामत हुई कि उन ही के साथ की ब दौलत येह मुसीबत आई और दिन भर मौत के मुंह में रहने पर बात की तो वोह भी ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही का जज़्बा और उन ही के लिये।

लोग पास से उठ कर चले गए, बद दिली भी थी और येह भी कि आख़िर कुछ जान है कि बोलने की नौबत आई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा उम्मे ख़ैर से कह गए कि उन के खाने पीने के लिये किसी चीज़ का इन्तिज़ाम कर दें। वोह कुछ तय्यार कर के लाईं और खाने पर इस्रार किया मगर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वोही एक सदा थी कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है? ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क्या गुज़री? उन की वालिदा ने कहा कि मुझे तो ख़बर नहीं क्या ह़ाल है? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (ह़ज़रते उ़मर की बहन)

www.dawateislami.net

के पास जा कर दरयाफ़्त कर लो कि क्या हाल है? वोह बेचारी बेटे की इस मज़्लूमाना हालत की बे ताबाना दरख़्वास्त पूरी करने के लिये उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास गईं और मुहम्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का हाल दरयाफ़्त किया। वोह भी आम दस्तूर के मुताबिक़ उस वक़्त अपने इस्लाम को छुपाए हुए थीं। फ़रमाने लगीं : मैं क्या जानूं कौन मुहम्मद (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और कौन अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! तेरे बेटे की हालत सुन कर रन्ज हुवा अगर तू कहे तो मैं चल कर उस की हालत देखूं, उम्मे ख़ैर ने क़बूल कर लिया, उन के साथ गईं और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हालत देख कर तह़म्मुल न कर सकीं, बे तहाशा रोना शुरूअ़ कर दिया कि बद किरदारों ने क्या हाल कर दिया। **अल्लाह** तआ़ला उन को उन के किये की सज़ा दे, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फिर पूछा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या हाल है? उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि वोह सुन रही हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि उन से ख़ौफ़ न करो। उम्मे जमील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ख़ैरिय्यत सुनाई और अ़र्ज़ किया कि बिल्कुल सह़ीह़ सालिम हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा कि इस वक़्त कहां हैं? उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि अरक़म के घर तशरीफ़ रखते हैं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मुझ को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम है कि उस वक़्त तक कोई चीज़ न खाऊंगा न पियूंगा जब तक कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न कर लूं। उन की वालिदा को तो बे क़रारी थी कि वोह कुछ खा लें और उन्हों ने क़सम खा ली कि जब तक हुज़ूर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत न कर लूं कुछ न खाऊंगा। इस लिये वालिदा ने इस का इन्तिज़ार किया कि लोगों की आमदो रफ़्त बन्द हो जाए। मबादा कोई देख ले और कुछ अज़िय्यत पहुंचाए। जब रात का बहुत सा ह़िस्सा गुज़र गया तो ह़ज़रते अबू बक्र

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ले कर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अरक़म के घर पहुंचीं। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से लिपट गए। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी लिपट कर रोए। और मुसलमान भी रोने लगे कि हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की हालत देखी न जाती थी। इस के बा'द हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरख़्वास्त की, येह मेरी वालिदा हैं, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के लिये हिदायत की दुआ फ़रमा दें और इन को इस्लाम की तब्लीग़ भी फ़रमा दें, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को इस्लाम की तरग़ीब दी, वोह भी उस वक़्त मुसलमान हो गईं। (البداية والنهاية، ج٣، ص٣٠)

हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जज़्बए इस्लाम :

हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मशहूर सहाबी हैं, जिन का शुमार सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के जलीलुल क़द्र ज़ाहिदों और अज़ीम उ़लमा में है, हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का इर्शाद है कि अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे इल्म के हामिल हैं जिन से लोग आ़जिज़ हैं मगर उन्हों ने उसे महफ़ूज़ रखा है। जब उन को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नबुव्वत की पहले पहल ख़बर पहुंची तो उन्हों ने अपने भाई को हालात की तहक़ीक़ के लिये मक्का भेजा कि जो शख़्स येह दा'वा करता है कि मेरे पास वही आती है और आस्मान की ख़बरें आती हैं उस के हालात मा'लूम करें और उस के कलाम को ग़ौर से सुनें।

वोह मक्कए मुकर्रमा आए और हालात मा'लूम करने के बा'द अपने भाई से जा कर कहा कि मैं ने उन को अच्छी आ़दतों और उ़म्दा ख़याल का हुक्म करते देखा और एक ऐसा कलाम सुना जो न शे'र है और न काहिनों की ख़बरें। हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस मुजमल बात से तशफ़्फ़ी न हुई तो ख़ुद सामाने सफ़र लिया और मक्के पहुंचे और सीधे मस्जिदे हराम में गए, हुज़ूर

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचानते न थे और किसी से पूछना मस्लहत के ख़िलाफ़ समझा, शाम तक इसी हाल में रहे। शाम को हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने देखा कि एक परदेसी मुसाफ़िर है, मुसाफ़िरों, ग़रीबों, परदेसियों की ख़बरगीरी और उन की ज़रूरत का पूरा करना इन हज़रत رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की आ़दत व त़बीअ़त थी, इस लिये उन को अपने घर ले आए, मेज़बानी फ़रमाई। लेकिन उन से कुछ पूछने की ज़रूरत न समझी कि कौन हो और क्यूं आए ? मुसाफ़िर ने भी कुछ ज़ाहिर न किया, सुब्ह़ को फिर मस्जिद में आ गए ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ किसी से कुछ दरयाफ़्त करें, लेकिन कोई ऐसा शख़्स नज़र न आया जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ कुछ बताता। दूसरी शाम को भी हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ख़याल हुवा कि परदेसी मुसाफ़िर है ब ज़ाहिर जिस के लिये आया है वोह ग़रज़ पूरी नहीं हुई इस लिये फिर अपने घर ले गए और रात को खिलाया सुलाया मगर पूछने की उस रात को भी नौबत नहीं आई।

तीसरी रात को फिर येही सूरत हुई तो हज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दरयाफ़्त किया कि तुम किस काम के लिये आए हो क्या ग़रज़ है ? तो हज़रते अबू ज़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने क़सम और अ़ह्दो पैमान के बा'द उन को ग़रज़ बताई। हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : वोह बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं और सुब्ह़ को जब मैं जाऊं तो तुम मेरे साथ चलना, मैं वहां तक पहुंचा दूंगा, लेकिन मुख़ालफ़त का ज़ोर है इस लिये रास्ते में अगर मुझ से कोई ऐसा शख़्स मिला जिस से मेरे साथ चलने की वज्ह से तुम पर कोई अन्देशा हो तो मैं इस्तिन्जा के लिये रुक जाऊंगा या अपना जूता दुरुस्त करने लगूंगा, तुम सीधे चले चलना, मेरे साथ ठहरना नहीं, जिस की वज्ह से तुम्हारा मेरा साथ होना मा'लूम न हो। चुनान्चे सुब्ह़ को हज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पीछे पीछे

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पहुंचे, वहां जा कर बातचीत हुई, उसी वक़्त मुसलमान हो गए। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की तक्लीफ़ के ख़याल से फ़रमाया कि अपने इस्लाम को अभी ज़ाहिर न करना, चुपके से अपनी क़ौम में चले जाओ, जब हमारा ग़लबा हो जाए उस वक़्त चले आना। उन्हों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि इस कलिमए तौह़ीद को उन बे ईमानों के बीच में चिल्ला कर पढ़ूंगा ! चुनान्चे उसी वक़्त मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ ले गए और बुलन्द आवाज़ से "اَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" पढ़ा। फिर क्या था चारों त़रफ़ से लोग उठे और इस क़दर मारा कि ज़ख़्मी कर दिया, मरने के क़रीब हो गए।

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो उस वक़्त मुसलमान भी नहीं हुए थे, उन के ऊपर बचाने के लिये लेट गए और लोगों से कहा : क्या ज़ुल्म करते हो येह शख़्स क़बीलए ग़िफ़ार का है और येह क़बीला मुल्के शाम के रास्ते में पड़ता है, तुम्हारी तिजारत वग़ैरा सब मुल्के शाम के साथ है अगर येह मर गया तो शाम का आना जाना बन्द हो जाएगा। इस पर उन लोगों को भी ख़याल हुवा कि मुल्के शाम से सारी ज़रूरतें पूरी होती हैं, वहां का रास्ता बन्द हो जाना मुसीबत है इस लिये उन को छोड़ दिया, दूसरे दिन फिर इसी त़रह़ उन्हों ने जा कर बा आवाज़े बुलन्द कलिमा पढ़ा और लोग इस कलिमे को सुनने की ताब न ला सकते थे। इस लिये उन पर टूट पड़े, दूसरे दिन भी ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इसी त़रह़ उन को समझा कर हटाया कि तिजारत का रास्ता बन्द हो जाएगा।

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب قصة اسلام ابی ذر الغفاری، الحدیث: ۳۵۲۲، ج۲، ص۴۸۰

وکتاب مناقب الانصار، باب اسلام ابی ذر، الحدیث: ۳۸۶۱، ج۲، ص۵۷۶)

www.dawateislami.net

हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह जोश इज़हारे ग़लबए हक़ के वल्वले की बिना पर था और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मन्अ़ करना इज़हारे शफ़्क़त की बुन्याद पर, लेकिन हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब खुद मसाइब झेल रहे हैं तो हमें पीछे रहने की क्या ज़रूरत ? इस लिये अपनी राहत पर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इत्तिबाए़ अ़मल को तरजीह़ दी और फिर इता़अ़ते हक़ में हमेशा सर गर्म रहे।

ह़ज़रते अ़म्मार और उन के वालिदैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) : ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के मां-बाप को भी सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें पहुंचाई गईं। मक्के की सख़्त गर्म और रेतिली ज़मीन में उन को अ़ज़ाब दिया जाता और हु़ज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उस त़रफ़ गुज़र होता तो सब्र की तल्क़ीन फ़रमाते और जन्नत की बिशारत अ़त़ा फ़रमाते, आख़िर उन के वालिद ह़ज़रते यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी ह़ालते तक्लीफ़ में वफ़ात पा गए कि ज़ालिमों ने मरने तक चैन न लेने दिया और उन की वालिदा ह़ज़रते सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने भी सख़्त तकालीफ़ उठाईं, अबू जह्ल ने उन की नाफ़ के नीचे बरछा मारा जिस से वोह शहीद हो गईं मगर इस्लाम से न हटीं, ह़ालांकि बूढ़ी थीं, ज़ईफ़ थीं, मगर उस बद नसीब ने किसी चीज़ का ख़याल न किया।

इस्लाम में सब से पहली शहादत उन की है और इस्लाम में सब से पहली मस्जिद ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बनाई हुई है। जब हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत फ़रमा कर मदीने तशरीफ़ ले गए तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये एक साया दार मकान बनाना चाहिये जिस में तशरीफ़ रखा करें और दोपहर को आराम

www.dawateislami.net

फ़रमा लिया करें और नमाज़ भी साए में पढ़ लिया करें, तो कुबा में ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अव्वल पथ्थर जम्अ़ किये और फिर मस्जिद बनाई। लड़ाई में निहायत जोश से शरीक होते थे, एक मरतबा वज्द में आ कर कहने लगे : अब जा कर दोस्तों से मिलेंगे, मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन की जमाअ़त से मिलेंगे, इतने में प्यास लगी और पानी किसी से मांगा उस ने दूध सामने किया उस को पिया और पी कर कहने लगे : मैं ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि तू दुन्या में सब से आख़िरी चीज़ दूध पियेगा, इस के बा'द शहीद हो गए, उस वक़्त चौरानवे बरस की उ़म्र थी। बा'ज़ ने एक आध साल कम बतलाई है। (ماخوذمن اسدالغابة، ج٤، ص١٤١)

उन की वालिदा ह़ज़रते सुमय्या बिन्ते ख़ुब्बात़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मज़्लूमाना शहादत के इ़लावा और भी सख़्तियां झेल चुकी हैं, उन को गर्मी के वक़्त सख़्त धूप में कंकरियों पर डाला जाता, लोहे की ज़िरह पहना कर धूप में खड़ा किया जाता ताकि धूप की गर्मी से लोहा तपने लगे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उधर से गुज़र होता तो सब्र की तल्क़ीन और जन्नत का वा'दा फ़रमाते यहां तक कि सब से बड़े दुश्मने इस्लाम अबू जह्ल के हाथों उन की शहादत हुई। (رضی اللہ تعالی عنها وارضاها عنا) (اسدالغابة، ج٧، ص١٦٧)

ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्लाम : ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के साथ मुसलमान हुए। नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अरक़म सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि येह दोनों ह़ज़रात अ़लाह़दा अ़लाह़दा ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और मकान के दरवाज़े पर इत्तिफ़ाक़िया इकठ्ठे हो गए, हर एक ने दूसरे की ग़रज़ मा'लूम की तो एक ही ग़रज़ या'नी इस्लाम लाना और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ होना दोनों का मक़्सूद था। इस्लाम लाए और इस्लाम

लाने के बा'द जो कुछ उस ज़माने में क़लील और कमज़ोर जमाअ़त को पेश आता था वोह पेश आया। हर त़रह़ सताए गए। तक्लीफ़ें पहुंचाई गईं। आख़िरे कार हिजरत का इरादा फ़रमाया तो काफ़िरों को येह चीज़ भी गवारा न थी कि येह लोग किसी दूसरी जगह जा कर आराम से ज़िन्दगी बसर करें।

इस लिये जिस की हिजरत का ह़ाल मा'लूम होता था उस को पकड़ने की कोशिश करते थे कि तकालीफ़ से नजात पा न सके। चुनान्चे इन का भी पीछा किया गया और एक जमाअ़त इन को पकड़ने के लिये गई, इन्हों ने अपना तरकश संभाला जिस में तीर थे और उन लोगों से कहा कि देखो तुम को मा'लूम है कि मैं तुम से ज़ियादा तीर अन्दाज़ हूं एक भी तीर मेरे पास बाक़ी रहेगा तो तुम लोग मुझ तक आ नहीं सकोगे और जब एक भी तीर न रहेगा तो मैं अपनी तल्वार से मुक़ाबला करूंगा यहां तक कि तल्वार भी मेरे हाथ में न रहे इस के बा'द जो तुम से हो सके करना। इस लिये अगर तुम चाहो तो अपनी जान के बदले मैं अपने माल का पता बता सकता हूं जो मक्के में है और दो बांदियां भी हैं वोह तुम सब ले लो! इस पर वोह लोग राज़ी हो गए, ह़ज़रते सुहैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना माल दे कर जान छुड़ाई, इस बारे में आयते पाक नाज़िल हुई।

وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡرِیۡ نَفۡسَہُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰہِ ؕ وَاللّٰہُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ۝ (پ۲،البقرۃ:۲۰۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कोई आदमी अपनी जान बेचता है अल्लाह की मरज़ी चाहने में और अल्लाह बन्दों पर मेहरबान है।*

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त क़ुबा में तशरीफ़ फ़रमा थे, सूरत देख कर इर्शाद फ़रमाया कि नफ़्अ़ की तिजारत की। सुहैब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त खजूर तनावुल फ़रमा रहे थे और मेरी आंख दुख रही थी, साथ खाने लगा, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आंख तो दुख रही

है और खजूरें खाते हो ? मैं ने अ़र्ज़ किया : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस आंख की त़रफ़ से खाता हूं जो दुरुस्त है । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह जवाब सुन कर हंस पड़े ।

(اسد الغابة، ج۳، ص۳۹)

हज़रते सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े ही ख़र्च करने वाले थे । ह़त्ता कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया कि तुम फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हो । उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि ना ह़क़ कहीं ख़र्च नहीं करता । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जब विसाल होने लगा तो उन्हीं को जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की वसिय्यत फ़रमाई थी ।

(اسد الغابة، ج۳، ص۴۱)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बहनोई और बहन : फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कौन वाक़िफ़ नहीं ? क़ब्ले इस्लाम येह भी नुमायां थे और इस्लाम व अह्ले इस्लाम की अ़दावत में सर गर्म, यहां तक कि नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़त्ल के दर पै रहते थे, एक रोज़ कुफ़्फ़ार ने मश्वरे की कमीटी क़ाइम की, कि कोई है जो मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल कर दे ? उ़मर ने कहा कि मैं करूंगा ! लोगों ने कहा : बेशक तुम ही कर सकते हो, उ़मर तल्वार लटकाए हुए उठे और चल दिये । इसी फ़िक्र में जा रहे थे कि एक साह़िब क़बीलए बनू ज़हरह के जिन का नाम ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ है । बा'ज़ ने ह़ज़रते नुऐ़म का नाम लिखा है । उन्हों ने पूछा : उ़मर ! कहां जा रहे हो ? कहने लगे : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के क़त्ल की फ़िक्र में हूं । (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) सा'द ने कहा । बनू हाशिम और बनू ज़हरह से कैसे मुत़मइन हो गए ? वोह तुम को बदले में क़त्ल कर देंगे । इस जवाब पर बिगड़ गए और कहने लगे : मा'लूम होता है तू भी बे दीन (या'नी मुसलमान) हो गया है, ला पहले तुझी को निमटा दूं । येह कह कर तल्वार सोंत

ली और ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी येह कह कर कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं तल्वार संभाली, दोनों त़रफ़ से तल्वार चलने को थी कि ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि पहले अपने घर की तो ख़बर ले तेरी बहन और बहनोई दोनों मुसलमान हो चुके हैं।

येह सुनना था कि ग़ुस्से से भर गए और सीधे बहन के घर गए। वहां ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ किवाड़ बन्द किये हुए उन दोनों मियां बीवी को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा रहे थे। उ़मर ने किवाड़ खुलवाई। उन की आवाज़ से ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तो जल्दी से अन्दर छुप गए लेकिन वोह सह़ीफ़ा जल्दी में बाहर रह गया जिस पर आयाते क़ुरआनी लिखी हुई थीं। हमशीरा ने किवाड़ खोला। उ़मर के हाथ में कोई चीज़ थी जिस को बहन के सर पर मारा जिस से सर से ख़ून बहने लगा और कहा कि अपनी जान की दुश्मन तू भी बद दीन हो गई? इस के बा'द घर में आए और पूछा क्या कर रहे थे और येह आवाज़ किस की थी? बहनोई ने कहा कि बातचीत कर रहे थे। कहने लगे क्या तुम ने अपने दीन को छोड़ कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिया? बहनोई ने कहा अगर दूसरा दीन ह़क़ हो तो? येह सुनना था कि उन की दाढ़ी पकड़ कर खींची और बे तह़ाशा टूट पड़े और ज़मीन पर गिरा कर ख़ूब मारा। बहन ने छुड़ाने की कोशिश की तो उन के मुंह पर एक त़मांचा इस ज़ोर से मारा कि ख़ून निकल आया। वोह भी आख़िर उ़मर ही की बहन थीं, कहने लगीं : उ़मर! हम को इस वज्ह से मारा जाता है कि हम मुसलमान हो गए। बेशक हम मुसलमान हो गए जो तुझ से हो सके तू कर ले।

इस के बा'द उ़मर की नज़र उस सह़ीफ़े पर पड़ी जो जल्दी में बाहर रह गया था और ग़ुस्से का जोश भी इस मार पीट से कम हो गया था और बहन के इस त़रह़ ख़ून में भर जाने से शर्म सी आ रही थी, कहने लगे अच्छा मुझे दिखलाओ येह क्या है, बहन ने

www.dawateislami.net

कहा कि तू नापाक है और इस को नापाक हाथ नहीं लगा सकते। हर चन्द कोशिश की मगर वोह बे वुज़ू और बे गुस्ल के देने को तैयार न हुईं। उ़मर ने गुस्ल किया और उस को ले कर पढ़ा, उस पर सूरए त़ाहा लिखी हुई थी। उस को पढ़ना शुरूअ़ किया और "اِنَّنِیْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِیْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِیْ O"(پ١٦،طٰہٰ:١٤) तक पढ़ा था कि ह़ालत ही बदल गई। कहने लगे अच्छा मुझे भी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ले चलो। येह अल्फ़ाज़ सुन कर ह़ज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अन्दर से निकले और कहा कि ऐ उ़मर ! तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूं कि कल शबे पंजशम्बा (बुध) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी थी कि या अल्लाह उ़मर या अबू जह्ल में जो तुझे ज़ियादा पसन्द हो उस से इस्लाम को कुव्वत अ़ता फ़रमा (चूंकि येह दोनों कुव्वत में मश्हूर थे) मा'लूम होता है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ तुम्हारे ह़क़ में क़बूल हो गई। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और जुमुआ़ की सुब्ह़ मुसलमान हुए। (تاریخ الخلفاء،فصل فی الأخبار الواردۃفی اسلامہ،ص٨٧)

ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते रसूलिल्लाह (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) की हिजरत और वफ़ात :

दो जहां के सरदार हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी साहि़बज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ए'लाने नबुव्वत से दस साल पहले जब कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ 30 बरस की थी पैदा हुईं और ख़ालाज़ाद भाई अबुल आ़स बिन रबीअ़ से निकाह़ हुवा। हिजरत के वक़्त हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ न जा सकीं, उन के ख़ावन्द बद्र की लड़ाई में कुफ़्फ़ार के साथ शरीक हुए और क़ैद हुए, अह्ले मक्का ने जब अपने क़ैदियों की रिहाई के लिये फ़िदये इरसाल किये तो ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने भी अपने ख़ावन्द की रिहाई के लिये माल भेजा जिस में वोह हार

www.dawateislami.net

भी था जो ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने जहेज़ में दिया था। नबिये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब उस को देखा तो ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की याद ताज़ा हो गई। आबदीदा हुए, सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के मश्वरे से येह क़रार पाया कि अबुल आ़स को बिला फ़िद्या छोड़ दिया जाए इस शर्त़ पर कि वोह वापस जा कर ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को मदीना त़य्यिबा भेज दें। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो आदमी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को लेने के लिये साथ कर दिये कि वोह मक्का से बाहर ठहर जाएं और अबुल आ़स ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को उन तक पहुंचवा दें।

चुनान्चे ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के देवर कनाना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को ले कर चले, आप ऊंट पर सुवार हो कर रवाना हुईं, कुफ़्फ़ार को जब इस की ख़बर हुई तो आग बगोला हो गए और एक जमाअ़त मज़ाह़मत के लिये पहुंच गई। जिस में हब्बार बिन अस्वद जो ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के चचाज़ाद भाई का लड़का था और इस लिह़ाज़ से ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का भाई हुवा वोह और उस के साथ एक और शख़्स भी था उन दोनों में से किसी ने (और अक्सर ने हब्बार ही को लिखा है) ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को नेज़ा मारा जिस से वोह ज़ख़्मी हो कर ऊंट से गिरीं चूंकि ह़ामिला थीं इस वज्ह से पेट का बच्चा भी ज़ाएअ़ हुवा। कनाना ने तीरों से मुक़ाबला किया, अबू सुफ़यान ने उन से कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बेटी और इस त़रह़ अ़लल ए'लान चली जाए येह गवारा नहीं। इस वक़्त वापस चलो फिर चुपके से भेज देना।

कनाना ने इस को क़बूल कर लिया और वापस ले आए। दो एक रोज़ बा'द फिर रवाना किया, ह़ज़रते ज़ैनब का येह ज़ख़्म कई साल तक रहा और कई साल तक इस में बीमार रह कर सि. 8 हि. में इन्तिक़ाल फ़रमाया। (رضی اللہ تعالی عنہا وارضاھا عنا)

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह मेरी सब से अच्छी बेटी थी जो मेरी महब्बत में सताई गई।

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر بنات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، ج۸،ص۲۶۔۲۷

و سیرۃ النبویۃ لابن ہشام،خروج زینب الی المدینۃ،ج۱،ص۵۷۶)

हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की जली हुई पीठ : अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को एक मरतबा सह़ाबिये रसूल हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की पीठ नज़र आ गई। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने देखा कि पूरी पुश्ते मुबारक में सफ़ेद सफ़ेद ज़ख़्मों के निशान हैं। दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ! येह तुम्हारी पीठ में ज़ख़्मों के निशान कैसे हैं? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने जवाब दिया कि अमीरुल मोमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इन ज़ख़्मों की क्या ख़बर? येह उस वक़्त की बात है जब आप नंगी तल्वार ले कर हुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सर काटने के लिये दौड़ते फिरते थे। उस वक़्त हम ने महब्बते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चराग़ अपने दिल में जलाया और मुसलमान हुए। उस वक़्त कुफ़्फ़ारे मक्का ने मुझ को आग के जलते हुए कोइलों पर पीठ के बल लिटा दिया, मेरी पीठ से इतनी चरबी पिघली कि कोइले बुझ गए और मैं घन्टों बेहोश रहा मगर रब्बे का'बा की क़सम ! कि जब मुझे होश आया तो सब से पहले ज़बान से कलिमा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم निकला।

अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हज़रते ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मुसीबत सुन कर आबदीदा हो गए और फ़रमाया : ऐ ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ! कुरता उठाओ ! मैं तुम्हारी इस पीठ की ज़ियारत करूंगा। **अल्लाह-अल्लाह** ! येह पीठ कितनी मुबारक व मुक़द्दस है जो महब्बते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ब दौलत आग में जलाई गई है। (الطبقات الکبری لابن سعد،خباب بن الارت،ج۳،ص۱۲۳)

हज़रते अम्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **आग के कोइलों पर :** इसी त़रह़ ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पहले चोब और कोड़ों की मार से कुफ़्फ़ार ने निढाल कर दिया फिर आग के दहकते हुए कोइलों पर पीठ के बल लिटा दिया। मगर येह इस्तिक़ामत का पहाड़ बन कर इस्लाम पर साबित क़दम रहे। इस हालत में हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के क़रीब से गुज़रे तो ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कह कर पुकारा, अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह मुसीबत देख कर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दिल सदमों से चूर चूर हो गया और फ़रमाया :

يَا نَارُ كُوْنِىْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰى عَمَّارٍ كَمَا كُنْتِ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ

या'नी ऐ आग ! तू अ़म्मार पर इस त़रह़ ठन्डक और सलामती बन जा जिस त़रह़ तू ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर ठन्डक और सलामती बन गई थी। (الطبقات الكبرى لابن سعد،عمار بن ياسر، ج٣،ص١٨٨)

रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़ख़्मों पर अपना दस्ते शफ़्क़त फेरते हुए फ़रमाते कि "عمار طيب و مطيب" या'नी अ़म्मार पाकीज़ा और ख़ुश्बूदार है।

हिजरते ह़बशा और शिअ़्बे अबी त़ालिब : मुसलमानों को और उन के सरदार फ़ख़्रे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुफ़्फ़ार से जब तकालीफ़ पहुंचती ही रहीं और आए दिन उन में बजाए कमी के इज़ाफ़ा ही होता रहा तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को इस बात की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी कि वोह यहां से दूसरी जगह चले जाएं। बहुत से ह़ज़रात ने ह़बशा की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई। ह़बशा के बादशाह अगर्चे नस्रानी थे और उस वक़्त मुसलमान न हुए थे मगर उन के रह़्म दिल और मुन्सिफ़ मिज़ाज होने की शोहरत थी। चुनान्चे ए'लाने नबुव्वत के पांचवें

बरस रजब के महीने में पहली जमाअ़त के ग्यारह या बारह मर्द और चार या पांच औ़रतों ने ह़बशा की हिजरत की। मक्के वालों ने उन का पीछा भी किया कि येह न जा सकें, मगर येह लोग हाथ न आए, वहां पहुंच कर उन को येह ख़बर मिली कि मक्के वाले सब मुसलमान हो गए और इस्लाम को ग़लबा हो गया। इस ख़बर से येह ह़ज़रात बहुत ख़ुश हुए और अपने वत़न की त़रफ़ लौटे। लेकिन मक्कए मुकर्रमा के क़रीब पहुंच कर मा'लूम हुवा कि येह ख़बर ग़लत़ थी और मक्के वाले इसी त़रह़ बल्कि इस से भी ज़ियादा दुश्मनी और ईज़ा रसानी में मसरूफ़ हैं तो उन में से बा'ज़ ह़ज़रात वहीं से वापस हो गए और बा'ज़ किसी की पनाह ले कर मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुए। येह ह़बशा की पहली हिजरत कहलाती है।

इस के बा'द एक बड़ी जमाअ़त ने (जो 83 मर्द और 18 औ़रतें बताई जाती है) मुत़फ़र्रिक़ त़ौर पर हिजरत की और येह ह़बशा की दूसरी हिजरत कहलाती है। बा'ज़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने दोनों हिजरतें कीं और बा'ज़ ने एक। कुफ़्फ़ार ने जब देखा येह लोग ह़बशा में चैन की ज़िन्दगी बसर करने लगे तो उन को और भी ग़ुस्सा आया और बहुत से तह़ाइफ़ के साथ नज्जाशी शाहे ह़बशा के पास एक वफ़्द भेजा जो बादशाह के लिये बहुत से तोह़्फ़े ले कर गया। और उस के ख़वास और पादरियों के लिये भी बहुत से हदिय्ये ले कर गया। जा कर पादरियों और हुक्काम से मिला और हदिय्ये दे कर उन से बादशाह के यहां अपनी सिफ़ारिश का वा'दा लिया और बादशाह की ख़िदमत में येह वफ़्द ह़ाज़िर हुवा। अव्वल बादशाह को सजदा किया और फिर तोह़्फ़े पेश कर के अपनी दरख़्वास्त पेश की और रिश्वत लेने वाले हुक्काम ने ताईद की। उन्हों ने कहा ऐ बादशाह! हमारी क़ौम के चन्द बे वुक़ूफ़ लड़के अपने क़दीमी दीन को छोड़ कर एक नए दीन में दाख़िल हो गए

जिस को हम जानते हैं और न आप जानते हैं, आप के मुल्क में आ कर रहने लगे। हम को शुरफ़ाए मक्का ने और उन के बाप चचा ने और रिश्तेदारों ने भेजा है कि उन को वापस लाएं आप उन को हमारे सिपुर्द कर दें। बादशाह ने जवाब दिया जिन लोगों ने मेरी पनाह ली है बिगै़र तह्क़ीक़ उन को तुम्हारे ह़वाले नहीं कर सकता उन से बुला कर तह्क़ीक़ कर लूं अगर येह सह़ीह़ हुवा तो ह़वाले कर दूंगा।

चुनान्चे मुसलमानों को बुलाया गया। मुसलमान बहुत परेशान हुए क्या करें ? मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल ने मदद की और हिम्मत से येह तै किया कि चलना चाहिये और साफ़ बात कहना चाहिये, बादशाह के यहां पहुंच कर सलाम किया। किसी ने ए'तिराज़ किया तुम ने बादशाह को आदाबे शाही के मुवाफ़िक़ सजदा नहीं किया, इन लोगों ने कहा कि हम को हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को सजदा करने की इजाज़त नहीं दी। इस के बा'द बादशाह ने उन से ह़ालात दरयाफ़्त किये। ह़ज़रते जा'फ़र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ आगे बढ़े और फ़रमाया : हम लोग जहालत में पड़े हुए थे, न अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जानते थे न उस के रसूलों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से वाक़िफ़ थे। पथ्थरों को पूजते थे। मुर्दार खाते थे। बुरे काम करते थे। रिश्ते नाते तोड़ते थे। हम में का क़वी ज़ईफ़ को हलाक कर देता था। हम इसी ह़ाल में थे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भेजा जिस के नसब, जिस की सच्चाई और अमानत दारी को हम ख़ूब जानते हैं। उस ने हम को एक अल्लाह वह़्दहू ला शरीक की इबादत की त़रफ़ बुलाया और पथ्थर और बुतों के पूजने से मन्अ़ फ़रमाया। उस ने हम को अच्छे काम करने का हुक्म दिया। नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, ख़ैरात का हुक्म दिया और अच्छे अख़्लाक़ ता'लीम किये। ज़िना, बदकारी, झूट बोलना, यतीम का माल खाना, किसी पर तोहमत लगाना और इस क़िस्म के बुरे आ'माल से मन्अ़ फ़रमाया। हम को क़ुरआने पाक की ता'लीम दी, हम उस पर ईमान लाए और

उस के फ़रमान की ता'मील की जिस पर हमारी क़ौम दुश्मन बन गई और हम को हर त़रह़ सताया, हम लोग मजबूर हो कर तुम्हारी पनाह में अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्शाद से आए हैं।

बादशाह ने कहा : जो क़ुरआन तुम्हारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ले कर आए हैं वोह कुछ हमें सुनाओ। ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सूरए मरयम की अव्वल की आयतें पढ़ीं, जिस को सुन कर बादशाह भी रो दिया और उन के पादरी जो कस्रत से मौजूद थे सब के सब इस क़दर रोए कि दाढ़ियां तर हो गईं। इस के बा'द बादशाह ने कहा : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह कलाम और जो कलाम ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ले कर आए थे एक ही नूर से निकले हैं। और उन लोगों से साफ़ इन्कार कर दिया कि मैं इन को तुम्हारे ह़वाले नहीं कर सकता। वोह लोग बड़े परेशान हुए कि बड़ी ज़िल्लत उठानी पड़ी। आपस में सलाह़ की, एक शख़्स ने कहा कि कल ऐसी तदबीर करूंगा कि बादशाह इन की जड़ ही काट दे, साथियों ने कहा ऐसा नहीं करना चाहिये, येह लोग अगर्चे मुसलमान हो गए हैं मगर फिर भी हमारे रिश्तेदार हैं मगर उस ने न माना। दूसरे दिन फिर बादशाह के पास गए और जा कर कहा : येह लोग ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की शान में गुस्ताख़ी करते हैं और उन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेटा नहीं मानते। बादशाह ने फिर मुसलमानों को बुलाया।

सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم कहते हैं कि दूसरे दिन के बुलाने से हमें और ज़ियादा परेशानी हुई, बहर ह़ाल गए। बादशाह ने पूछा : तुम ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में क्या कहते हो ? उन्हों ने कहा : वोही कहते हैं जो हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर उन की शान में नाज़िल हुवा कि वोह **अल्लाह** के बन्दे हैं और उस के रसूल हैं। वोह रूहुल्लाह हैं और कलिमतुल्लाह हैं जिस को खुदा عَزَّوَجَلَّ ने कंवारी और पाक मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की त़रफ़ डाला। नज्जाशी ने कहा : ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام भी इस के सिवा कुछ नहीं कहते,

www.dawateislami.net

पादरी लोग आपस में सरगोशियां करने लगे, नज्जाशी ने कहा : तुम जो चाहो कहो। इस के बा'द नज्जाशी ने वफ़्दे मक्का के तोहफ़े वापस कर दिये और मुसलमानों से कहा : तुम अम्न से हो जो तुम्हें सताए उस को तावान देना पड़ेगा और इस का ए'लान भी करा दिया कि जो शख़्स इन को सताएगा उस को तावान देना होगा।

(السیرۃ النبویۃ،ذکرالھجرۃ الاولیٰ،ج۱،ص۳۰۰،ارسال القریش الی الحبشۃ،ج۱،ص۳۱۰)

इस की वज्ह से वहां के मुसलमानों का इकराम और भी ज़ियादा होने लगा और उस वफ़्द को ज़िल्लत से वापस आना पड़ा। इस वाक़िए से कुफ़्फ़ार का गुस्सा और भी बढ़ गया, दूसरी तरफ़ हज़रते उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ईमान लाने ने उन को और भी जला रखा था लिहाज़ा हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते थे कि इन लोगों का उन से मिलना जुलना बन्द हो जाए और इस्लाम का चराग़ किसी तरह बुझे। इस लिये सरदाराने मक्का की एक बड़ी जमाअ़त ने आपस में मश्वरा किया कि अब खुल्लम खुल्ला मुहम्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल कर दिया जाए लेकिन क़त्ल करना भी आसान काम न था इस लिये कि बनू हाशिम भी बड़े जथ्थे और ऊंचे तबक़े के लोग शुमार होते थे। उन में अगर्चे अक्सर मुसलमान नहीं हुए थे लेकिन जो मुसलमान नहीं हुए थे वोह भी हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़त्ल हो जाने पर आमादा नहीं थे।

इस लिये इन सब कुफ़्फ़ार ने मिल कर एक मुआ़हदा किया कि सारे बनू हाशिम और बनू अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बायकॉट किया जाए। न उन को कोई शख़्स अपने पास बैठने दे न उन से कोई ख़रीदो फ़रोख़्त करे, न बातचीत करे, न उन के घर जाए, न उन को अपने घर में आने दे और उस वक़्त तक सुल्ह़ न की जाए जब तक कि वोह हुज़ूरे अकरम (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को क़त्ल करने के लिये हमारे ह़वाले न कर दें येह मुआ़हदा ज़बानी ही गुफ़्त्गू पर ख़त्म

नहीं हुवा बल्कि यकुम मुहर्रम सि. 7 नबवी को एक मुआहदा तहरीरी लिख कर बैतुल्लाह में लटकाया गया ताकि हर शख़्स इस का एह़तिराम करे और इस को पूरा करने की कोशिश करे और इस मुआहदे की वज्ह से तीन बरस तक येह ह़ज़रात दो पहाड़ों के दरमियान एक घाटी में नज़र बन्द रहे कि न कोई उन से मिल सकता था न येह किसी से मिल सकते थे न मक्के के किसी आदमी से कोई चीज़ ख़रीद सकते थे न बाहर से आने वाले किसी ताजिर से मिल सकते थे, अगर कोई शख़्स बाहर निकलता तो पीटा जाता और किसी से ज़रूरत का इज़्हार करता तो साफ़ जवाब पाता। मा'मूली सामान ग़ल्ला वग़ैरा जो उन लोगों के पास था वोह कहां तक काम देता ? आख़िर फ़ाक़ों पर फ़ाक़े गुज़रने लगे और औरतें और बच्चे भूक से बेताब हो कर रोते और चिल्लाते और उन के अइ़ज़्ज़ा को अपनी भूक और तकालीफ़ से ज़ियादा इन बच्चों की तकालीफ़ सतातीं।

आख़िर तीन बरस के बा'द वोह सह़ीफ़ा दीमक की नज़्र हुवा और इन ह़ज़रात की येह मुसीबत दूर हुई। तीन बरस का ज़माना ऐसे सख़्त बायकॉट और नज़र बन्दी में गुज़रा और ऐसी ह़ालत में इन ह़ज़रात पर क्या क्या मशक़्क़तें गुज़री होंगी लेकिन इस के बा'द भी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم निहायत साबित क़दमी के साथ अपने दीन पर जमे रहे बल्कि इस की इशाअ़त फ़रमाते रहे।

(شرح العلامة الزرقانی،دخول الشعب وخبر الصحیفة،ج۲،ص۱۲۔السیرة النبویة لابن هشام،خبر الصحیفة،ج۲،ص۳۲۵)

ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ज़न व फ़रज़न्द : ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ साह़िबुल हिजरतैन हैं। पहले ह़बशा को हिजरत की फिर वहां से वापस हो कर मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर गए। मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत करते वक़्त उन्हों ने अपनी ज़ौजा और इकलौते बेटे सलमह को ऊंट पर बिठाया और ख़ुद नकील पकड़ कर रवाना हुए। उन के मैके वाले ख़ानदाने बनू मुग़ीरा के लोग आ गए और कहा कि ख़बरदार ! ऐ अबू

सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! तुम खु़द जा सकते हो मगर अपनी लड़की उम्मे सलमह को हरगिज़ तुम्हारे साथ मदीने नहीं जाने देंगे और ज़बरदस्ती ज़ालिमों ने उम्मे सलमह और बच्चे सलमह को ऊंट से उतार लिया। लोग समझते थे कि बीवी और बच्चे की मह़ब्बत अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हिजरत से रोक लेगी। मगर वाह रे ! मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जज़्बा कि बीवी और बच्चे की जुदाई से कलेजा शक़ हो रहा था मगर क़दम नहीं डगमगाए और बीवी बच्चे को **''ख़ुदा ह़ाफ़िज़''** कह कर अकेले मदीने चले गए।

फिर अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ानदान वाले बनी अ़ब्दुल असद ने बच्चे सलमह को येह कह कर बनी मुग़ीरा से छीन लिया कि लड़की तुम्हारी है मगर बच्चा हमारे ख़ानदान का है। इस त़रह़ बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शोहर और लख़्ते जिगर दोनों से जुदा हो गईं और एक साल तक शोहर और बच्चे के फ़िराक़ में रोती रहीं। बिल आख़िर उन के चचाज़ाद भाई ने सब को समझा बुझा कर राज़ी कर लिया कि उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने बच्चे को ले कर अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चली जाए। बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जज़्बए हिजरत देखिये कि बच्चे को ले कर तन्हा मदीना रवाना हो गईं। तन्ईम के पास उस्मान बिन त़ल्ह़ा मिले जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे मगर निहायत शरीफ़ इन्सान और अबू सलमह के दोस्त थे। पूछा : तुम अकेली कहां जा रही हो ? उन्हों ने कहा : मदीना। पूछा : तुम्हारे साथ कोई नहीं ? बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : हमारे साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के सिवा कोई भी नहीं। उस्मान बिन त़ल्ह़ा कहने लगे : येह ग़ैर मुमकिन है तुम एक शरीफ़ की बीवी हो कर तन्हा इतना लम्बा सफ़र करो। खु़द ऊंट की नकी़ल पकड़ कर बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मदीनए मुनव्वरा पहुंचा दिया।

रास्ते में ऊंट पर सामान लाद कर ऊंट को बिठा देते और खुद किसी दरख़्त की आड़ में छुप जाते। जब उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا सुवार हो जाती थीं तो येह ऊंट की नकील पकड़ कर चल देते थे। इस त़रह़ बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا मदीनए मुनव्वरा अपने शोहर अबू सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास पहुंच गईं। फिर जब सि. 4 हि. में ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक जंग में ज़ख़्मी हो कर शहीद हो गए तो हुज़ूर रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीबी उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमा लिया और उन को उम्मते मुस्लिमा की मादरे मुक़द्दस होने का शरफ़ ह़ासिल हो गया। (اسدالغابة، ام سلمة بنت أبی أمية،ج٧،ص ٣٧١) رضی اللہ تعالی عنها وارضاها عنا

नोट : सफ़रे हिजरत हर एक पर फ़र्ज़ था, रिफ़ाक़ते मह़रम या शोहर की शर्त़ भी न थी। और आयते ह़िजाब उस वक़्त अभी नाज़िल न हुई थी। ह़ज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सफ़र पर कोई इश्काल नहीं।

इश्क़ो वफ़ा का अ़जीब मन्ज़र : रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार छे या दस आदमियों की जमाअ़त अह्ले मक्का की ख़बर लाने के लिये भेजी। रास्ते में बनू लह्यान के दो सो आदमियों से मुक़ाबला हुवा जिस की तफ़्सील आगे आ रही है। बा'ज़ रिवायात से मा'लूम होता है कि काफ़िरों ने उहुद में अपने मक़्तूल काफ़िर अ़ज़ीज़ों के जोशे इन्तिक़ाम में इन ह़ज़रात को फ़रेब से अपने यहां बुलाया। **सलाफ़ा** नामी एक औ़रत जिस के दो लड़के उहुद में मारे गए थे उस ने मन्नत मानी थी कि अगर मेरे बेटों के क़ातिल आ़सिम का सर हाथ में आ जाए तो उस की खोपड़ी में शराब पियूंगी। उस ने ए'लान कर दिया कि जो आ़सिम का सर लाए उसे सो ऊंट इन्आ़म दूंगी।

www.dawateislami.net

सुफ़्यान बिन ख़ालिद ने सो ऊंटों की त़म्अ़ में क़बीलए अ़ज़्ल व क़ारह के चन्द आदमियों को मदीनए मुनव्वरा भेजा। उन्हों ने वहां अपने को मुसलमान ज़ाहिर किया और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कह कर चन्द ह़ज़रात की जमाअ़त अपने यहां तब्लीग़े दीन की ग़रज़ बता कर साथ लाए जिन में ह़ज़रते आ़सिम, ह़ज़रते ख़ुबैब, ह़ज़रते ज़ैद बिन अद्दसिन्ना, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم भी थे। रास्ते में ले जा कर बद अ़ह्दी की और दो सो आदमियों को मुक़ाबले के लिये बुला लिया जिन में सो आदमी मशहूर तीर अन्दाज़ थे।

दस या छे बुज़ुर्गों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की येह मुख़्तसर जमाअ़त दुश्मनों की बद निय्यती देख कर फ़दफ़द नामी एक पहाड़ पर चढ़ गई। कुफ़्फ़ार ने कहा : हम तुम्हें क़त्ल नहीं करना चाहते। सिर्फ़ अह्ले मक्का से तुम्हारे बदले कुछ माल लेना चाहते हैं तुम हमारे साथ आ जाओ मगर उन्हों ने कहा हम काफ़िरों के अ़ह्द में आना नहीं चाहते और तरकश से तीर निकाल कर मुक़ाबला किया। जब तीर ख़त्म हो गए तो नेज़ों से मुक़ाबला किया। ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने साथियों से जोश में कहा : तुम से धोका किया गया मगर घबराने की बात नहीं। शहादत को ग़नीमत समझो तुम्हारा मह़बूब तुम्हारे साथ है और जन्नत की ह़ूरें तुम्हारी मुन्तज़िर हैं। येह कह कर जोश से मुक़ाबला किया और जब नेज़ा भी टूट गया तो तल्वार से मुक़ाबला किया। दुश्मनों का मज्मअ़ कसीर था आख़िर शहीद हो गए और दुआ़ की, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हमारे ह़ाल से आगाह फ़रमा देना।

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उसी वक़्त इस वाक़िए का इ़ल्म हो गया। ह़ज़रते आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ येह भी सुन चुके थे कि सलाफ़ा ने मेरे सर की खोपड़ी में शराब पीने की मन्नत मानी है। इस लिये मरते वक़्त दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा सर तेरे रास्ते में काटा जा रहा है तू ही इस का मुह़ाफ़िज़ है। चुनान्चे शहादत

के बा'द जब काफ़िरों ने सर काटने का इरादा किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने शहद की मख्खियों का और बा'ज़ रिवायतों में है कि भिड़ों का एक गोल भेज दिया। जिन्हों ने उन के बदन को चारों त़रफ़ से घेर लिया, काफ़िरों का ख़याल था कि रात के वक़्त जब येह उड़ जाएगी तो सर काट लेंगे मगर रात को बारिश की एक रौ आई और उन की ना'श को बहा कर ले गई। इस त़रह़ सात आदमी या तीन आदमी शहीद हो गए। ग़रज़ तीन बाक़ी रह गए। ह़ज़रते ख़ुबैब और ज़ैद बिन अद्दसिन्ना और अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) इन तीनों ह़ज़रात से फिर उन्हों ने अ़ह्दो पैमान किया कि तुम नीचे आ जाओ हम तुम से बद अ़ह्दी न करेंगे, येह तीनों ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم नीचे उतर आए और नीचे उतरने पर कुफ़्फ़ार ने उन की कमानों की तांत उतार कर उन की मश्कें बांधीं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन त़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि येह पहली बद अ़ह्दी है मैं तुम्हारे साथ हरगिज़ न जाऊंगा इन शहीद होने वालों की इक़्तिदा ही मुझे पसन्द है, उन्हों ने ज़बरदस्ती इन को खींचना चाहा मगर येह न टले तो उन लोगों ने इन को भी शहीद कर दिया। सिर्फ़ दो ह़ज़रात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا उन के साथ रहे जिन को ले जा कर उन लोगों ने मक्का वालों के हाथ फ़रोख़्त कर दिया। एक ह़ज़रते ज़ैद बिन अद्दसिन्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिन को सफ़वान बिन उमय्या ने पचास ऊंटों के बदले में ख़रीदा कि अपने बाप उमय्या के बदले क़त्ल कर दे। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ह़ारिस बिन आ़मिर की औलाद ने ख़रीदा कि उन्हों ने बद्र में ह़ारिस को क़त्ल किया था। सफ़वान ने तो अपने क़ैदी ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को फ़ौरन ही ह़रम से बाहर अपने ग़ुलाम के साथ भेज दिया कि क़त्ल कर दिये जाएं।

ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को क़त्ल करने के लिये ह़द्दे ह़रम से बाहर ले गए तो उस का तमाशा देखने के लिये और भी बहुत से

लोग जम्अ़ हुए जिन में अबू सुफ़्यान भी थे (जो अब तक इस्लाम न लाए थे) अबू सुफ़्यान ने ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से यूं कहा :

“ऐ ज़ैद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! मैं तुम को खु़दा عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछता हूं। क्या तुम येह पसन्द करते हो कि इस वक़्त हमारे पास बजाए तुम्हारे, मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) हों जिन को हम क़त्ल कर दें और तुम आराम से अपने अह्ल में बैठो।”

ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं पसन्द नहीं करता कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) इस वक़्त जिस मकान में तशरीफ़ रखते हैं उन को एक कांटा लगने की तक्लीफ़ भी हो और मैं आराम से अपने अह्ल में बैठा रहूं।”

येह सुन कर अबू सुफ़्यान ने कहा : “मैं ने लोगों में से किसी को नहीं देखा कि दूसरों से ऐसी मह़ब्बत रखता हो जैसा कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रखते हैं। उस के गुलाम निस्त़ास ने ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया। (السیرۃ النبویۃ،ذکر یوم الرجیع فی سنۃ ثلاث،ج٤،ص١٤٧)

ह़ज़रते खु़बैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक अ़रसे तक क़ैद रहे। ह़जर बिन अबी उहाब तमीमी की बांदी जो बा’द में मुसलमान हो गई कहती हैं कि “ ह़ज़रते खु़बैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम लोगों की क़ैद में थे तो हम ने देखा कि खु़बैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक दिन अंगूर का बहुत बड़ा ख़ोशा आदमी के सर बराबर, हाथ में लिये हुए अंगूर खा रहे थे और मक्के में उस वक़्त अंगूर बिल्कुल नहीं था।” वोही कहती हैं कि जब उन के क़त्ल का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने सफ़ाई के लिये उस्तरा मांगा वोह दे दिया गया, इत्तिफ़ाक़ से एक कमसिन बच्चा उस वक़्त खु़बैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंच गया। लोगों ने देखा कि उस्तरा उन के हाथ में है और बच्चा उन के पास, येह देख कर घबराए। खु़बैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा कि क्या तुम येह समझते हो कि मैं बच्चा क़त्ल कर दूंगा, ऐसा नहीं कर सकता इस के बा’द उन को

www.dawateislami.net

ह़रम से बाहर लाया गया और सूली पर लटकाने के वक़्त आख़िरी ख़्वाहिश के त़ौर पर पूछा गया कि कोई तमन्ना हो तो बताओ ? उन्हों ने फ़रमाया कि मुझे इतनी मोहलत दो कि मैं दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ लूं कि दुन्या से जाने का वक़्त है **अल्लाह** तआ़ला की मुलाक़ात क़रीब है, चुनान्चे मोहलत दी गई, उन्हों ने दो रक्अ़तें बड़े इत़्मीनान से पढ़ीं और फिर फ़रमाया कि अगर मुझे येह ख़याल न होता कि तुम लोग येह समझोगे कि मैं मौत के डर से देर कर रहा हूं तो दो रक्अ़त और पढ़ता इस के बा'द सूली पर लटका दिये गए।

ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **तख़्तए दार पर :** जब मुशरिकीने मक्का ने ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तख़्तए दार पर खड़ा किया तो जनाबे ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अहले मक्का के लिये बद दुआ़ की। ह़ज़रते अमीर मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे बाप ने ज़मीन पर लिटा दिया क्यूंकि उन का ख़याल था कि अगर ज़मीन पर लेट जाएं तो बद दुआ़ का असर नहीं होता। इस बद दुआ़ से ह़ज़रते सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर एक इज़्त़िराबी कैफ़िय्यत त़ारी हो गई, मुझ पर इस बद दुआ़ का येह असर हुवा कि कई सालों तक मेरी शोहरत ख़त्म रही। कहते हैं कि एक साल के अन्दर अन्दर जितने आदमी भी सूली पर चढ़ाते वक़्त मौजूद थे मर खप गए।

सई़द बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बा'ज़ अवक़ात बेहोश हो जाते थे। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक अ़मल बताया और साथ ही पूछा कि येह ग़शी का सबब क्या है ? उन्हों ने बताया कि जब ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सूली पर खड़ा किया गया तो मैं वहां मौजूद था जूं ही इस का नक़्शा सामने आता है मैं ह़वास खो बैठता हूं। तख़्तए दार पर ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम ने अपने आक़ा व मौला जनाबे

www.dawateislami.net

मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तब्लीग़ पर अ़मल किया, यहां कोई भी नहीं जो मेरा पैग़ाम उन तक पहुंचा दे। तू क़ादिरो क़य्यूम है। मेरा सलाम उन तक पहुंचा दे। ह़ज़रते उसामा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं : मैं मदीने में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठा था कि आसारे वह़ी ज़ाहिर हुए। और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وعليه السلام و رحمة الله। इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों में आंसू भर आए और बताया ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुबैब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का सलाम मुझे पहुंचाया है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बिशारत दी जो शख़्स ह़ज़रते ख़ुबैब رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को तख़्तए दार से नीचे उतारेगा उस का मक़ाम बिहिश्त है। (شواهد النبوة، رکن رابع، ص ۱۰۰)

ह़ज़रते बिलाल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का इश्क़े रिसालत : ह़ज़रते बिलाल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वोह सह़ाबिये रसूल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हैं जिन को बिल्कुल आग़ाज़े इस्लाम में मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने का इम्तियाज़ ह़ासिल है। ऐसे ख़ौफ़नाक माह़ोल में जब इस्लाम लाने की पादाश में सख़्त तरीन मसाइबो आलाम से दो चार होना पड़ता था, ह़ज़रते बिलाल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को कुफ़्फ़ारे मक्का सख़्त से सख़्त अज़िय्यतें देते थे। उन को पकड़ कर ले जाते और धूप में लिटा देते और पथ्थर ला कर उन के पेट पर रख देते और कहते : तुम्हारा दीन लातो उ़ज़्ज़ा का दीन है। ह़ज़रते बिलाल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه कहते : मेरा परवर दगार, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है। ऐसे ऐसे मसाइब झेलते मगर सीने में इश्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस त़रह़ पैवस्त था कि सारे आ़लामो मसाइब इस के सामने हेच थे।

(السيرة النبوية، ذکر عدوان المشرکين على المستضعفين، ج ۱، ص ۲۹۷)

एक दिन ह़ज़रते बिलाल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़ानए का'बा में दाख़िल हुए। कुरैश को इस का इ़ल्म न था, आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इधर उधर देखा तो कोई नज़र न आया बस आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बुतों के पास आ कर उन पर थूकने लगे और कहने लगे वोह लोग

नाकाम और ख़सारे में हैं जिन्हों ने तुम्हारी परस्तिश की। कुरैश ने उन को गिरिफ़्तार करना चाहा लेकिन आप भागने में कामयाब हो गए और अपने मालिक अ़ब्दुल्लाह बिन जद्आ़न के घर में छुप गए। कुरैश के लोग अ़ब्दुल्लाह के पास आए और उस को आवाज़ दी, वोह बाहर आया तो उस से उन लोगों ने कहा : क्या तुम बे दीन हो गए ? उस ने कहा : मुझ जैसे शख़्स से भी ऐसी बात कही जा रही है ? अब तो मह्ज़ इस के कफ़्फ़ारे में लातो उ़ज़्ज़ा के लिये 100 ऊंटनियां कुरबान करूंगा। कुरैश के लोगों ने कहा : तुम्हारे काले (बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने येह येह कर डाला है। उस ने उन को बुलाया। लोग उन को तलाश कर के अ़ब्दुल्लाह के पास लाए येह उन को पहचानता न था। उस ने ख़ौलिया को बुला कर पूछा येह कौन है ? क्या मैं ने तुम को येह हुक्म न दे रखा था कि मक्के के गुलामों में से किसी को यहां न रहने देना। ख़ौलिया ने कहा येह तुम्हारी बकरियां चराता था। और इस के इ़लावा और कोई इन को पहचानता न था इस त़रह़ मैं ने इसे छोड़ दिया था।

इस के बा'द अ़ब्दुल्लाह ने अबू जह्ल और उमय्या बिन ख़लफ़ से कहा : बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) तुम्हारे ह़वाले है। तुम लोग इस के साथ जो चाहो करो। येह दोनों उन को बत़्ह़ा के तपते हुए ह़िस्से पर खींचते हुए लाते हैं और उन के दोनों बाज़ूओं पर चक्की रख देते हैं और कहते है (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) اکفر محمد ! मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्कार करो। येह कहते हैं येह नहीं हो सकता कि दामने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم छोड़ूं और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तौह़ीद का ए'लान करते हैं।

इस अ़ज़ाब का सिलसिला टूटा न था कि वहां से ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुज़र हुवा। उन्हों ने फ़रमाया : इस अस्वद (काले) को क्या करना चाहते हो। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम इस से इन्तिक़ाम ले ही नहीं सकते।

www.dawateislami.net

उमय्या बिन ख़लफ़ ने अपने आदमियों से कहा देखो ! मैं अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ एक ऐसा खेल खेलता हूं कि अभी तक उन के साथ येह खेल खेला न गया होगा। फिर वोह हंस कर बोला। अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ! तुम्हारा मेरे ऊपर क़र्ज़ है तुम मुझ से बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को ख़रीद लो। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हां (क्या लोगे ?) उस ने कहा : तुम्हारे गुलाम निस्तास को। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर मैं उसे दे दूं तो तुम बिलाल को मुझे दे दोगे ? उस ने कहा हां ! हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने येह कर लिया। फिर वोह हंस कर बोला : नहीं, आप को उस के साथ उस की बीवी को भी देना होगा। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : चलो येही सही।

फिर उस ने वोही शरारत की, कि नहीं आप को उस की बीवी के साथ उस की लड़की को भी देना होगा। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : चलो येह भी सही। फिर वोह हंस कर बोला : इतने में भी नहीं हो सकता। जब तक आप उन के साथ दो सो दीनार न दें। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम्हें झूट से कुछ शर्म नहीं। उस ने लातो उ़ज़्ज़ा की क़सम खा कर कहा : अगर आप येह दो सो दीनार भी दे दें तो ज़रूर अपनी बात पूरी करूंगा। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह भी सही।

अब जा कर येह सौदा मुकम्मल होता है। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतनी भारी क़ीमत पर हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़रीद कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये आज़ाद कर देते हैं। हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जां गुसिल मसाइबो आलाम से छुटकारा मिलता है।

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के कमसिन जांबाज़ :** ग़ाबा मदीनए तृय्यिबा से चार पांच मील पर एक आबादी है, वहां हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ ऊंट चरा करते थे। काफ़िरों के एक मज्मअ़ के साथ अ़ब्दुर्रह़मान फ़ज़ारी ने उन को लूट लिया, जो साह़िब चराते उन को क़त्ल कर दिया और ऊंटों को ले कर चल दिये। येह लुटेरे घोड़े पर सुवार थे और हथियार लगाए हुए थे। इत्तिफ़ाक़न ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه सुब्ह़ के वक़्त पैदल तीर कमान लिये हुए ग़ाबा की त़रफ़ चले जा रहे थे कि अचानक उन लुटेरों पर नज़र पड़ी। बच्चे थे, वोह दौड़ते बहुत थे, कहते हैं कि उन की दौड़ ज़र्बुल मसल और मश्हूर थी, येह अपनी दौड़ में घोड़े को पकड़ लेते थे और घोड़ा इन को पकड़ नहीं सकता था। इस के साथ ही तीर अन्दाज़ी में बहुत मश्हूर थे।

ह़ज़रते सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ मुंह कर के एक पहाड़ी पर चढ़ कर लूट का ए'लान किया और खुद उन लुटेरों के पीछे दौड़े, तीर कमान साथ ही थी यहां तक कि उन के पास पहुंच गए और तीर मारने शुरूअ़ किये और इस फुरती से दमा दम तीर बरसाए कि वोह लोग बड़ा मज्मअ़ समझे और चूंकि खुद तन्हा थे और पैदल भी थे इस लिये जब कोई घोड़ा लौटा कर पीछा करता तो किसी दरख़्त की आड़ में छुप जाते और आड़ में से उस घोड़े को तीर मारते जिस से वोह ज़ख़्मी हो जाता और वोह इस ख़याल से वापस जाता कि घोड़ा गिर गया तो मैं पकड़ा जाऊंगा।

ह़ज़रते सलमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि ग़रज़ वोह भागते रहे और मैं पीछा करता रहा ह़त्ता कि जितने ऊंट उन्हों ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लूटे थे वोह मेरे पीछे हो गए और तीस बरछे और तीस चादरें वोह अपनी छोड़ गए इतने में उ़यैना बिन ह़सन की एक जमाअ़त मदद के त़ौर पर उन के पास पहुंच गई। और उन

www.dawateislami.net

लुटेरों को कुव्वत हासिल हो गई और येह भी मा'लूम हो गया कि मैं अकेला हूं। उन के कई आदमियों ने मिल कर मेरा पीछा किया मैं एक पहाड़ पर चढ़ गया और वोह भी चढ़ गए। जब मेरे क़रीब हो गए तो मैं ने कहा कि ज़रा ठहरो ! पहले मेरी एक बात सुनो ! तुम मुझे जानते भी हो कि मैं कौन हूं ? उन्हों ने कहा कि बताओ तुम कौन हो ? मैं ने कहा कि मैं इब्नुल अक्वअ़ हूं, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस ने मुहम्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इज़्ज़त दी, तुम में से कोई मुझे पकड़ना चाहे तो नहीं पकड़ सकता और मैं तुम में से जिस को पकड़ना चाहूं वोह मुझ से हरगिज़ नहीं छूट सकता। उन के मुतअ़ल्लिक़ चूं कि आ़म तौ़र से येह शोहरत थी कि बहुत ज़ियादा दौड़ते हैं ह़त्ता कि अ़रबी घोड़ा भी उन का मुक़ाबला नहीं कर सकता। इस लिये येह दा'वा कुछ अ़जीब नहीं था।

सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं इस त़रह़ उन से बातचीत करता रहा और मेरा मक़्सूद येह था कि उन लोगों के पास तो मदद पहुंच गई है मुसलमानों की त़रफ़ से मेरी मदद भी आ जाए कि मैं भी मदीने में ए'लान कर के आया था। ग़रज़ उन से इसी त़रह़ मैं बात करता रहा और दरख़्तों के दरमियान से मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ ग़ौर से देखता था कि मुझे एक जमाअ़त घोड़े सुवारों की दौड़ कर आती हुई नज़र आई उन में सब से आगे अख़रम असदी थे, उन्हों ने आते ही अ़ब्दुर्रह़मान फ़ज़ारी पर ह़म्ला किया और अ़ब्दुर्रह़मान भी उन पर मुतवज्जेह हुवा। उन्हों ने अ़ब्दुर्रह़मान के घोड़े पर ह़म्ला किया और पाउं काट दिये जिस से वोह घोड़ा गिरा और अ़ब्दुर्रह़मान ने गिरते हुए उन पर ह़म्ला कर दिया जिस से वोह शहीद हो गए और अ़ब्दुर्रह़मान उन के घोड़े पर सुवार हो गया उन के पीछे अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे उन्हों ने ह़म्ला शुरूअ़ कर दिया। अ़ब्दुर्रह़मान ने फ़ौरन अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घोड़े के पाउं पर ह़म्ला किया जिस से वोह गिरे और गिरते हुए उन्हों ने अ़ब्दुर्रह़मान पर ह़म्ला

www.dawateislami.net

किया जिस से वोह क़त्ल हो गया और अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन उस घोड़े पर सुवार हो गए जो पहले अख़रम असदी का था और अब इस पर अ़ब्दुर्रह़मान सुवार हो चुका था।

(صحیح مسلم، کتاب الجهادو السیر،باب غزوۃ ذی قردوغیرھا،الحدیث:۱۸۰۷،ص ۱۰۰۰)

मुजाहिदाना जवाब : कुरैशे मक्का ने मुसलमानों को तंग करने के लिये जब जंगे बद्र की बुन्याद डाली तो हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से इर्शाद फ़रमाया कि दुश्मन लड़ने पर आमादा है। बताओ तुम्हारी क्या राए है ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से मुहाजिरीन ने जवाब दिया : या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोही करें जिस बात का खुदा عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया है। हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हैं। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ऐसा न कहेंगे जैसा कि बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से कहा था।

فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ رَبُّكَ فَقَاتِلَاۤ اِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ ﴿۲۴﴾ (پ۶،المائدہ:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो आप जाइये और आप का रब तुम दोनों लड़ो हम यहां बैठे हैं।*

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम पर कुरबान हो जाने को तैयार हैं। अन्सार ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले लाए हैं। उस खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मबऊ़स फ़रमाया है अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें दरिया में कूद जाने का इर्शाद फ़रमाएंगे तो हम उस में कूद जाएंगे। या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम से मश्वरा क्यूं त़लब फ़रमाते हैं ? हम बे वफ़ाई करने वाले नहीं हैं !

तआलल्लाह येह शेवा ही नहीं है बा वफ़ाओं का
पिया है दूध हम लोगों ने ग़ैरत वाली माओं का
नबी का हुक्म हो तो कूद जाएं हम समुन्दर में
जहां को महूव कर दें ना'रए اَللّٰہُ اَکْبَر में

हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का मुजाहिदाना जवाब पा कर बहुत खुश हुए।

(مدارج النبوت، قسم سوم، ذکر سال دوم از ھجرت مذکورجنگ بدر، ج۲، ص۸۳)

हज़रते का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **की दर्दनाक कहानी :** तीन सहाबा हज़रते का'ब बिन मालिक, हिलाल बिन उमय्या और मिरारह बिन रबीअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم बिग़ैर किसी क़वी उ़ज़्र के सुस्ती के बाइ़स जंगे तबूक में शरीक न हो सके। हज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी सरगुज़श्त बड़ी तफ़्सील के साथ खुद ही बयान फ़रमाते हैं कि मैं जंगे तबूक से पहले किसी लड़ाई में भी इतना मालदार नहीं था जितना तबूक के वक़्त था उस वक़्त मेरे पास खुद ज़ाती दो ऊंटनियां थीं इस से पहले कभी मेरे पास दो ऊंटनियां न हुई थीं। जंगे तबूक के मौक़अ़ पर चूंकि सफ़र दूर का था और गर्मी भी शदीद थी इस लिये हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने साफ़ ए'लान फ़रमाया था कि लोग तैयारी कर लें, चुनान्चे मुसलमानों की इतनी बड़ी जमाअ़त हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हो गई कि रजिस्टर में उन का नाम भी लिखना दुश्वार था और मजमअ़ की कस्रत की वज्ह से कोई शख़्स अगर छुपना चाहता कि मैं न जाऊं और पता न चले तो हो सकता था। मैं भी सामाने सफ़र की तैयारी का इरादा सुब्ह़ ही करता मगर शाम हो जाती और किसी क़िस्म की तैयारी की नौबत न आती। मैं अपने दिल में ख़याल करता कि मुझे वुस्अ़त हासिल है पुख़्ता इरादा करूंगा तय्यारी फ़ौरन हो जाएगी।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ दिन गुज़रते गए ह़त्ता कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रवाना भी हो गए और मुसलमान आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साथ थे मगर मेरा सामाने सफ़र तैयार न हुवा । फिर मुझे येह ख़याल रहा कि एक दो रोज़ में तैयार हो कर लश्कर से जा मिलूंगा । इस त़रह़ आज कल पर टालता रहा ह़त्ता कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुसलमान तबूक को रवाना हो गए । उस वक़्त मैं ने कोशिश भी की मगर सामान न हो सका । अब जब मदीनए मुनव्वरा में इधर उधर देखता हूं तो सिर्फ़ वोही लोग मिलते हैं जिन के ऊपर निफ़ाक़ का बदनुमा दाग़ लगा हुवा था या मा'ज़ूर थे । उधर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तबूक पहुंच कर दरयाफ़्त फ़रमाया कि का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه नज़र नहीं पड़ते क्या बात हुई ? एक साहिब ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस को मालो जमाल के फ़ख़्र ने रोका, ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि ग़लत़ कहा : हम जहां तक समझते हैं वोह भले आदमी हैं, मगर हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बिल्कुल सुकूत फ़रमाया और कुछ इर्शाद न फ़रमाया ह़त्ता कि चन्द रोज़ में हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वापसी की ख़बर सुनी तो मुझे रन्जो ग़म हुवा और फ़िक्र पैदा हुई । दिल में झूटे झूटे उ़ज़्र आते थे कि इस वक़्त किसी फ़र्ज़ी उ़ज़्र से जान बचा लूं फिर किसी वक़्त मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त कर लूंगा और इस बारे में अपने घराने के हर समझदार से मश्वरा करता रहा मगर जब मुझे मा'लूम हुवा कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले ही आए तो मेरे दिल ने फ़ैसला किया कि बिग़ैर सच के कोई चीज़ नजात न देगी और मैं ने सच सच अ़र्ज़ करने की ठान ली ।

हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दत थी कि जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो अव्वल मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और दो रक्अ़त तह़िय्यतुल मस्जिद पढ़ते और वहां थोड़ी देर तशरीफ़ रखते कि लोगों से मुलाक़ात फ़रमाएं । चुनान्चे ह़स्बे मा'मूल

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो मस्जिद में तशरीफ़ ले गए और वहां तशरीफ़ फ़रमा रहे और मुनाफ़िक़ लोग झूटे झूटे उज़्र करते और क़समें खाते रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के ज़ाहिरी ह़ाल को क़बूल फ़रमाते रहे कि इतने में मैं भी ह़ाज़िर हुवा और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम किया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नाराज़ी के अन्दाज़ में तबस्सुम फ़रमाया और ए'राज़ फ़रमाया। मैं ने अ़र्ज़ किया : या नबिय्यल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'राज़ क्यूं फ़रमा लिया। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं न तो मुनाफ़िक़ हूं न मुझे ईमान में कुछ तरद्दुद है। इर्शाद फ़रमाया कि यहां आ। मैं क़रीब हो कर बैठ गया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुझे किस चीज़ ने रोका ? मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर मैं किसी दुन्यादार के पास इस वक़्त होता तो मुझे यक़ीन है कि मैं उस के गुस्से से कोई न कोई बात बना कर ख़लासी पा लेता कि मुझे बात करने का सलीक़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़ता फ़रमाया है। लेकिन या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ मुझे इल्म है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने झूट नहीं चल सकता। और अगर मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सच्ची बात अ़र्ज़ करूं जिस से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझ से नाराज़ हो जाएं तो मुझे उम्मीद है कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ज़ाते पाक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इताब को ज़ाइल कर देगी। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं सच ही अ़र्ज़ करता हूं कि वल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कोई उज़्र न था और जैसा फ़ारिग़ और वुस्अ़त वाला मैं उस ज़माने में था किसी ज़माने में भी इस से पहले न हुवा था। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस ने सच कहा। फिर फ़रमाया कि अच्छा उठ जाओ, तुम्हारा फ़ैसला **अल्लाह** तआ़ला ख़ुद फ़रमाएगा। मैं वहां से उठा तो मेरी क़ौम के बहुत से लोगों ने मुझ

www.dawateislami.net

से कहा : ब ख़ुदा हम नहीं जानते कि तू ने इस से पहले कोई गुनाह किया हो। अगर तू कोई उ़ज़्र कर के हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस्तिग़फ़ार की दरख़्वास्त करता तो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्तिग़फ़ार तेरे लिये काफ़ी था।

मैं ने उन से पूछा कि कोई और भी ऐसा शख़्स है जिस के साथ येह मुआ़मला हुवा हो। लोगों ने बताया कि दो शख़्सों के साथ और भी येही मुआ़मला हुवा कि उन्हों ने भी येही गुफ़्तगू की जो तू ने की और येही जवाब उन को भी मिला है जो तुझ को मिला। एक हिलाल बिन उमय्या और दूसरे मिरारह बिन रबीअ़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) मैं ने देखा कि दो सालेह़ शख़्स जो दोनों बद्री हैं वोह भी मेरे शरीके ह़ाल हैं, (का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि) हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम तीनों से बोलने की भी मुमानअ़त फ़रमा दी कि कोई शख़्स हम से कलाम न करे। अब इस इर्शाद की सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने ता'मील इस त़रह़ कर के दिखा दी कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुमानअ़त पर लोगों ने हम से बोलना छोड़ दिया और हम से इजतिनाब किया। गोया दुन्या ही बदल गई ह़त्ता कि ज़मीन बा वुजूद अपनी वुस्अ़त के हमें तंग मा'लूम होने लगी। सारे लोग अजनबी मा'लूम होने लगे। दरो दीवार बेगाने हो गए मुझे सब से ज़ियादा फ़िक्र इस बात की थी कि अगर मैं इस ह़ाल में मर गया तो हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जनाज़े की नमाज़ भी न पढ़ेंगे और ख़ुदा न ख़्वास्ता हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल शरीफ़ हो गया तो मैं हमेशा हमेशा के लिये ऐसा ही रहूंगा। न मुझ से कोई कलाम करेगा न मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेगा कि हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इर्शाद के ख़िलाफ़ कौन कर सकता है ?

ग़रज़ हम तीनों ने पचास दिन इस ह़ाल में गुज़ारे। मेरे दोनों रुफ़क़ा शुरूअ़ ही से घर में छुप कर बैठ गए थे। मैं सब में क़वी था, चलता फिरता, बाज़ार में जाता, नमाज़ में शरीक होता, मगर

मुझ से कोई बात न करता। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में हाज़िर हो कर सलाम करता। और बहुत ग़ौर से ख़याल करता कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लब मुबारक जवाब के लिये हिले या नहीं ? नमाज़ के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब ही खड़े हो कर नमाज़ पूरी करता और आंख चुरा कर देखता कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे देखते भी हैं या नहीं। जब मैं मश्ग़ूल होता तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे देखते और जब मैं उधर मुतवज्जेह होता तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से रुख़े अन्वर फेर लेते और मेरी जानिब से ए'राज़ फ़रमा लेते।

ग़रज़ येही हालात गुज़रते रहे और मुसलमानों का बातचीत बन्द कर देना मुझ पर बहुत ही भारी हो गया तो मैं अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दीवार पर चढ़ा वोह मेरे रिश्ते के चचाज़ाद भाई थे और मुझ से तअ़ल्लुक़ात भी बहुत ही ज़ियादा थे मैं ने ऊपर चढ़ कर सलाम किया तो उन्हों ने भी सलाम का जवाब न दिया। मैं ने उन को क़सम दे कर पूछा कि क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत है। उन्हों ने इस का जवाब न दिया। मैं ने दोबारा क़सम दी और दरयाफ़्त किया, वोह फिर भी चुप ही रहे। मैं ने तीसरी बार क़सम दे कर पूछा तो उन्हों ने सिर्फ़ इतना कहा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जाने और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। येह कलिमा सुन कर मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े और मैं वहां से लौट आया।

इसी दौरान मैं एक मरतबा मदीने के बाज़ार में जा रहा था कि एक क़िब्ती को जो नस्रानी था और शाम से मदीनए मुनव्वरा अपना ग़ल्ला फ़रोख़्त करने आया था येह कहते हुए सुना कि कोई का'ब बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का पता बताइये। लोगों ने उस को मेरी त़रफ़ इशारा कर के बताया। वोह नस्रानी मेरे पास आया और ग़स्सान के काफ़िर बादशाह का ख़त़ मुझे ला कर दिया, उस

में लिखा हुवा था, "हमें मा'लूम हुवा है कि तुम्हारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम पर ज़ुल्म कर रखा है तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़िल्लत की जगह न रखे और ज़ाएअ़ न करे तुम हमारे पास आ जाओ हम तुम्हारी मदद करेंगे।" ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने येह ख़त़ पढ़ कर اِنَّا لِلّٰہِ पढ़ा कि मेरी ह़ालत यहां तक पहुंच गई है कि काफ़िर भी मुझ में त़म्अ़ करने लगे हैं और मुझे इस्लाम तक से हटाने की तदबीरें होने लगी हैं। येह एक मुसीबत और आई और उस ख़त़ को मैं ने एक तन्नूर में फेंक दिया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जा कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अब तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ए'राज़ की वज्ह से काफ़िर भी मुझ में त़म्अ़ करने लगे।

इस ह़ालत में हम पर चालीस रोज़ गुज़रे थे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ासिद मेरे पास हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इर्शाद वाला ले कर आया कि अपनी ज़ौजा को भी छोड़ दो। मैं ने दरयाफ़्त किया कि क्या मन्शा है उस को त़लाक़ दे दूं? कहा : नहीं बल्कि उस से अलाह़दगी इख़्तियार कर लो और मेरे दोनों साथियों के पास भी इन ही क़ासिद की मा'रिफ़त येही हुक्म पहुंचा, मैं ने अपनी ज़ौजा से कह दिया कि तू अपने मैके चली जा जब तक **अल्लाह** तआ़ला इस अम्र का फ़ैसला न फ़रमाए, वहीं रहना। हिलाल बिन उमय्या की ज़ौजा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हिलाल बिल्कुल बूढ़े शख़्स हैं कोई ख़बरगीरी करने वाला न होगा तो हलाक हो जाएंगे, अगर आप इजाज़त दें तो मैं कुछ काम काज उन का कर दिया करूं। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अच्छा इस बात की तुझे इजाज़त है मगर कु़र्बत न हो, उन्हों ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस बात की त़रफ़ तो उन को मैलान भी नहीं जिस रोज़ से येह वाक़िआ़ पेश आया है आज तक उन का वक़्त रोते ही गुज़र रहा है।

www.dawateislami.net

हज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि इस ह़ाल में दस रोज़ और गुज़रे कि हम से बातचीत मेल जोल छुटे हुए पूरे पचास दिन हो गए। पचासवें दिन सुब्ह़ की नमाज़ अपने घर की छत पर पढ़ कर मैं निहायत ग़मगीन बैठा हुवा था कि ज़मीन मुझ पर बिल्कुल तंग थी और ज़िन्दगी दूभर हो रही थी कि सुल्अ़ पहाड़ की चोटी पर एक ज़ोर से चिल्लाने वाले ने आवाज़ दी कि का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुशख़बरी हो तुम को। मैं इतना ही सुन कर सजदे में गिर गया और ख़ुशी के मारे रोने लगा और समझा कि तंगी दूर हो गई। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सुब्ह़ की नमाज़ के बा'द हमारी मुआ़फ़ी का ए'लान फ़रमाया, जिस पर एक शख़्स ने पहाड़ पर चढ़ कर ज़ोर से आवाज़ दी जो सब से पहले पहुंच गई, इस के बा'द एक साहि़ब घोड़े पर सुवार भागे हुए आए, मैं ने अपने पहनने के कपड़े उस बिशारत देने वाले की नज़्र किये और फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। इस त़रह़ मेरे दोनों साथियों के पास भी ख़ुशख़बरी ले कर लोग गए। मैं जब मस्जिदे नबवी में गया तो लोग ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर थे। मुबारक बाद देने के लिये दौड़े और सब से पहले अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बढ़ कर मुबारक बाद दी और मुसाफ़ह़ा किया जो हमेशा ही यादगार रहेगा। मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जा कर सलाम किया तो चेहरए अन्वर खिल रहा था और ख़ुशी के अन्वार चेहरए मुबारक से ज़ाहिर हो रहे थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए मुबारक ख़ुशी के वक़्त चांद की त़रह़ चमकने लगता था।

मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी तौबा की तक्मील येह है कि मेरी जितनी जाइदाद है वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते में सदक़ा है (इस लिये कि येह इमारत व सरवत ही इस

मुसीबत का सबब बनी थी) हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस में तंगी होगी कुछ हिस्सा अपने पास भी रहने दो, मैं ने अ़र्ज़ किया बेहतर है कुछ हिस्सा मेरे पास भी रहने दिया जाए, मुझे सच ही ने नजात दी इस लिये मैं ने अ़हद किया कि हमेशा सच ही बोलूंगा।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث کعب بن مالک.....الخ، الحدیث: ٤٤١٨، ج٣، ص١٤٥)

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **का फ़ैसला :** हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ में किसी बात पर झगड़ा पैदा हो गया। यहूदी चाहता था कि जिस त़रह़ भी हो मैं इसे ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ले चलूं। चुनान्चे वोह कोशिश कर के उसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अ़दालत में ले आया और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वाक़िआ़त सुन कर फ़ैसला यहूदी के ह़क़ में दिया। वोह मुनाफ़िक़ यहूदी से कहने लगा मैं तो उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चलूंगा और उन का ही फ़ैसला मन्ज़ूर करूंगा। यहूदी बोला : अ़जीब उल्टे आदमी हो। कोई बड़ी अ़दालत से हो कर छोटी अ़दालत में भी जाता है ? जब तुम्हारे पैग़म्बर (मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) फ़ैसला दे चुके तो अब उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाने की क्या ज़रूरत है ?

मगर वोह मुनाफ़िक़ न माना और उस यहूदी को ले कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़ैसला त़लब करने लगा, यहूदी बोला जनाब पहले येह बात सुन लीजिये कि हम इस से क़ब्ल मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से फ़ैसला ले आए हैं और उन्हों ने फ़ैसला मेरे ह़क़ में फ़रमा दिया है मगर येह शख़्स उस फ़ैसले से मुत़मइन नहीं और अब यहां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आ पहुंचा है। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह बात सुनी तो मुनाफ़िक़ से पूछा क्या यहूदी जो कुछ बयान कर रहा

है दुरुस्त है ? मुनाफ़िक़ ने कहा : हां, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस के हक़ में फ़ैसला कर चुके हैं। फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अच्छा ठहरो मैं अभी आया और तुम्हारा फ़ैसला करता हूं, येह कह कर आप अन्दर तशरीफ़ ले गए और फिर एक तल्वार ले कर निकले और उस मुनाफ़िक़ की गरदन पर येह कहते हुए मारी कि जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैसला न माने उस का फ़ैसला येह है।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक येह बात पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वाक़ेई उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार किसी मोमिन पर नहीं उठती। फिर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत भी नाज़िल फ़रमा दी।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ

(پ۵،النساء:۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ऐ मह़बूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें ह़ाकिम न बनाएं।*

(الدرالمنثور،النساء:۶۵،ج۲،ص۵۸۵)

शमशीरे उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मामूं का सर : जंगे बद्र में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़क़ीक़ी मामूं आ़स बिन हिश्शाम बिन मुग़ीरा गुस्से में भरा हुवा जंग के लिये मैदान में निकला, ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बढ़ कर मुक़ाबला किया। और भांजे ने मामूं के सर पर ऐसी तल्वार मारी कि सर को काटते हुए जबड़े तक उतर गई और फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ियामत तक के लिये येह नज़ीर क़ाइम कर दी कि क़बीला और रिश्तेदारी सब कुछ मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान है।

बेटे की तल्वार बाप का सर : सि. 5 हि. में बनुल मुस्त़लक़ की मशहूर जंग हुई, इस में एक मुहाजिर और एक अन्सारी की बाहम लड़ाई हो गई, मा'मूली बात थी मगर बढ़ गई, हर एक ने अपनी अपनी क़ौम से दूसरे के ख़िलाफ़ मदद चाही और दो फ़रीक़ हो गए। क़रीब था कि आपस में लड़ाई हो जाए मगर बा'ज़ लोगों ने दरमियान में पड़ कर सुल्ह़ करा दी। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य मुनाफ़िक़ों का सरदार और मुसलमानों का सख़्त मुख़ालिफ़ था मगर चूंकि इस्लाम ज़ाहिर करता था इस लिये उस के साथ ख़िलाफ़ का बरताव न किया जाता था। और येही उस वक़्त के मुनाफ़िक़ो के साथ आ़म बर्ताव किया जाता था। उस को जब इस क़िस्से की ख़बर हुई तो उस ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्तख़ाना लफ़्ज़ कहे और अपने दोस्तों से ख़िताब कर के कहा कि येह सब कुछ तुम्हारा अपना ही किया हुवा है। तुम ने इन लोगों को अपने शहरों में ठिकाना दिया, अपने मालों को इन के दरमियान आधा आधा बांट दिया अगर तुम इन लोगों की मदद करना छोड़ दो तो अभी सब चले जाएं और येह भी कहा कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर हम मदीने पहुंच गए तो हम इ़ज़्ज़त वाले मिल कर इन ज़लीलों को वहां से निकाल देंगे।

ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه नौ उ़म्र बच्चे थे। वहां मौजूद थे, येह सुन कर ताब न ला सके। कहने लगे : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू ज़लील है, तू अपनी क़ौम में भी तिरछी निगाहों से देखा जाता है। तेरा कोई ह़िमायती नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इ़ज़्ज़त वाले हैं। रह़मान عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से भी इ़ज़्ज़त दिये गए हैं और अपनी क़ौम में भी इ़ज़्ज़त वाले हैं, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य ने कहा अच्छा चुपका रह मैं तो वैसे ही मज़ाक़ में कह रहा था, मगर ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जा कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नक़्ल कर दिया। ह़ज़रते उ़मर

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दरख़्वास्त भी की, कि इस काफ़िर की गरदन उड़ा दी जाए मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्हमत न फ़रमाई। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य को जब इस की ख़बर हुई कि हुज़ूर तक येह क़िस्सा पहुंच गया है तो हाज़िरे ख़िदमत हो कर झूटी क़समें खाने लगा कि मैं ने कोई ऐसा लफ़्ज़ नहीं कहा है। ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने झूट नक़्ल कर दिया है। अन्सार के भी कुछ लोग हाज़िरे ख़िदमत थे। उन्हों ने भी सिफ़ारिश की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अ़ब्दुल्लाह क़ौम का सरदार है बड़ा आदमी शुमार होता है कि एक बच्चे की बात उस के मुक़ाबले में क़ाबिले क़बूल नहीं। मुमकिन है कि सुनने में कुछ ग़लती हुई हो या समझने में। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लिया।

हज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब इस की ख़बर हुई कि उस ने झूटी क़समों से अपने को सच्चा साबित कर दिया और ज़ैद को झुटला दिया तो शर्म की वज्ह से बाहर निकलना छोड़ दिया। बिल आख़िर सूरए मुनाफ़िक़ून नाज़िल हुई जिस से हज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सच्चाई और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य की झूटी क़समों का राज़ खुल गया। हज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वक़्अ़त मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब की नज़रों में बढ़ गई और अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य का क़िस्सा भी सब पर ज़ाहिर हो गया। अ़ब्दुल्लाह बिन उबय्य के बेटे का नाम भी अ़ब्दुल्लाह था और बड़े पक्के मुसलमान और सच्चे आ़शिक़े रसूल थे। जंग से वापसी के वक़्त मदीनए मुनव्वरा से बाहर तल्वार खींच कर खड़े हो गए और बाप से कहने लगे : उस वक़्त तक मदीने में दाख़िल होने नहीं दूंगा जब तक तू इस का इक़रार न करे कि तू ज़लील है और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़ज़ीज़ हैं। उस को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा क्यूंकि येह हमेशा से बाप के साथ नेकी का बरताव करने वाले थे मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़ाबले में बाप की कोई इ़ज़्ज़त व महब्बत दिल में न रही।

www.dawateislami.net

आख़िर उस ने मजबूर हो कर इक़रार किया कि वल्लाह मैं ज़लील हूं और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अज़ीज़ हैं। इस के बा'द मदीने में दाख़िल हो सका। (السیرۃ النبویۃ،جھجاہ وسنان وما کان من ابن أبی،ج۳،ص۲۴۸۔۲۴۹)

इसी तृरह़ जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार का सिपह सालार उ़त्बा बिन रबीआ़ जब मैदान में निकला तो उस के फ़रज़न्द ह़ज़रते अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तल्वार खींच कर उस के मुक़ाबले को निकले, मगर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस को गवारा नहीं फ़रमाया कि बेटे की तल्वार बाप के ख़ून से रंगीन हो, इस लिये अबू हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुक़ाबले से हटा दिये गए और उ़त्बा बिन रबीआ़ ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तल्वार से क़त्ल हुवा।

बाप नापाक बिस्तर पाक : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के वालिद अबू सुफ़्यान सुल्ह़े हुदैबिया के ज़माने में मदीने आए, अपनी बेटी से मिलने गए और बिस्तर पर बैठने लगे तो बीबी उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बिस्तर उलट दिया और फ़रमाया कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पाक बिस्तर है और तुम मुशरिक होने की वज्ह से नापाक हो इस लिये तुम इस बिस्तरे नबुव्वत पर नहीं बैठ सकते। अबू सुफ़्यान को इस से बड़ा रन्ज हुवा मगर ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दिल में जो अ़ज़मत व मह़ब्बते रसूल थी उस के लिह़ाज़ से वोह कब बरदाश्त कर सकती थीं कि बिस्तरे नबुव्वत पर एक मुशरिक बैठे। اَللّٰہُ اَکْبَر ! ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने बाप की अ़ज़मत व मह़ब्बत को मह़ब्बते रसूल पर क़ुरबान कर दिया क्यूंकि येही ईमान की शान है कि बाप छूटता हो तो छूट जाए मगर अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दामन न छूटने पाए। (الطبقات الکبری،ام حبیبۃ بنت سفیان رضی اللّٰہ عنہا،ج۸،ص۷۸)

www.dawateislami.net

मा'रिकए उहुद में सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُم की जां निसारी

हज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ **:** ग़ज़्वए उहुद में मुसलमानों को कुछ शिकस्त का सामना हुवा। उस वक़्त मुसलमान चारों त़रफ़ से कुफ़्फ़ार के नर्ग़े में आ गए, जिस की वज्ह से बहुत से लोग शहीद भी हुए और कुछ भागे। नबिये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भी कुफ़्फ़ार ने घेर लिया और येह मश्हूर कर दिया था कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो गए। सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُم इस ख़बर से बहुत परेशान हुए और इसी वज्ह से बहुत से इधर उधर मुतफ़र्रिक़ हो गए।

हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم फ़रमाते हैं कि कुफ़्फ़ार ने जब मुसलमानों को घेर लिया और हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी नज़र से ओझल हो गए तो मैं ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अव्वल ज़िन्दों में तलाश किया, न पाया। फिर शुहदा में जा कर तलाश किया वहां भी न पाया, तो मैं ने अपने दिल में कहा कि ऐसा तो नहीं हो सकता कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लड़ाई से भाग जाएं। ब ज़ाहिर ह़क़ तआ़ला हमारे आ'माल की वज्ह से हम पर नाराज़ हुवा। इस लिये अपने पाक रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आस्मान पर उठा लिया। इस लिये अब इस से बेहतर कोई सूरत नहीं कि मैं तलवार ले कर काफ़िरों के जथ्थे में घुस जाऊं। यहां तक कि मारा जाऊं। मैं ने तलवार ले कर ह़म्ला किया। यहां तक कि कुफ़्फ़ार बीच में से हटते गए।

अचानक मेरी निगाह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर पड़ गई तो बे ह़द मसर्रत हुई और मैं ने समझा कि **अल्लाह** तआ़ला ने मलाइका के ज़रीए अपने मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त की। मैं हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जा कर खड़ा हुवा। हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़ली ! इन को

www.dawateislami.net

रोको। मैं ने तन्हा उस जमाअ़त का मुक़ाबला किया और उन के मुंह फेर दिये और बा'ज़ों को क़त्ल किया। इस के बा'द फिर एक और जमाअ़त हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ले के लिये बढ़ी, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ इशारा किया, उन्हों ने फिर तन्हा उस जमाअ़त का मुक़ाबला किया। इस के बा'द ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने आ कर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस जवांमर्दी और मदद की ता'रीफ़ की तो हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "انه منی وانا منه" बे शक अ़ली मुझ से है और मैं अ़ली से हूं, या'नी कमाले इत्तिह़ाद की त़रफ़ इशारा फ़रमाया तो ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "وانا منکما" और मैं तुम दोनों से हूं। (مدارج النبوت،قسم سوم،باب چهارم،ج۲،ص ۱۲۱،۱۲۲)

ग़सीलुल मलाइका : जंगे उहुद के अय्याम में ह़ज़रते ह़न्ज़ला बिन अबी आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शादी हुई थी। जिस रात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी दुल्हन को बियाह कर लाए थे, उसी रात हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ए'लान हो गया कि कुफ़्फ़ारे मक्का मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ला करने वाले हैं, उन के मुक़ाबले के लिये मैदाने जिहाद में चलो। ह़ज़रते ह़न्ज़ला رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बा वुजूद येह कि नौ जवान थे और शादी की पहली शब थी मगर हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से ए'लाने जिहाद सुन कर सब कुछ भूल गए और अपनी दुल्हन को भी नज़्र अन्दाज़ किया, गोया येह शे'र पढ़ते हुए कि

सब से बेगाना रहे यार व शनासा तेरा
हूर पर आंख न डाले कभी शैदा तेरा

मैदाने जिहाद में चलने के लिये उठ खड़े हुए और इस मह़विय्यत के आ़लम में आप को अपने ग़ुस्ल करने की ज़रूरत भी

www.dawateislami.net

याद न रही। इसी हालत में मा'रिकए जंग में तशरीफ़ ले गए और उसी दिन हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने शहीद भी हो गए। जब लड़ाई ख़त्म हुई तो शुहदा की लाशें जम्अ़ करने का हुक्मे नबवी हुवा ! सब लाशें मिल गईं मगर हज़रते हन्ज़ला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की लाश मुबारक न मिली, यकायक हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्मान की त़रफ़ निगाह उठा कर मुलाहज़ा फ़रमाया तो देखा कि हज़रते हन्ज़ला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की लाश फ़िरिश्ते उपर ले जा कर एक नूरानी तख़्ते पर लिटा कर आबे रह़मत से ग़ुस्ल दे रहे हैं। उसी दिन से आप का लक़ब **ग़सीलुल मलाइका** हुवा।

(الاستیعاب، حضرت حنظلہ بن ابی عامر رضی اللہ عنہ، ج۱،ص۴۳۳)

शौक़े शहादत : हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ग़ज़वए उहुद में हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कहा कि ऐ सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ! आओ मिल कर दुआ़ करें, हर एक अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दुआ़ करे और दूसरा आमीन कहे। फिर दोनों हज़रात ने एक कोने में जा कर दुआ़ की। अव्वल हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जब कल लड़ाई हो तो मेरे मुक़ाबले में एक बड़े बहादुर को मुक़र्रर फ़रमाना, मैं उस को तेरे रास्ते में क़त्ल करूं। हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आमीन कही। इस के बा'द हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! कल मैदाने जिहाद में मेरा एक बहादुर से मुक़ाबला करा जो सख़्त ह़म्ले वाला हो मैं उस पर शिद्दत से ह़म्ला करूं वोह भी मुझ पर ज़ोर से ह़म्ला करे और मैं बहुतों को क़त्ल कर के फिर ख़ुद भी शहीद हो जाऊं और शहीद होने के बा'द काफ़िर मेरे नाक कान काट लें फिर क़ियामत में जब मैं तेरे हुज़ूर पेश किया जाऊं तो तू फ़रमाए : अ़ब्दुल्लाह ! तेरे नाक कान क्यूं काटे गए ?

तो मैं अ़र्ज़ करूं : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे और तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रास्ते में काटे गए। फिर तू कहे कि सच है मेरे ही रास्ते में काटे गए। ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आमीन कही, दूसरे दिन लड़ाई हुई तो दोनों ह़ज़रात की दुआएं इसी त़रह़ क़बूल हुईं जिस त़रह़ मांगी थी। (الاستیعاب،باب حرف العین،ج۳،ص۱۵)

क़दमे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर शहादत : जंगे उहुद की हल चल और बद ह़वासी में जब मेह़रे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हुजूमे कुफ़्फ़ार के दल बादल ने घेर लिया और उस वक़्त सय्यिदुल मह़बूबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कौन मुझ पर जान देता है ? तो ह़ज़रते ज़ियाद बिन सकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चन्द अन्सारियों को ले कर येह ख़िदमत अदा करने के लिये बढ़े। हर एक ने जां बाज़ी से लड़ते हुए अपनी जान फ़िदा कर दी, मगर एक ज़ख़्म भी रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लगने न दिया और ज़ियाद बिन सकन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह शरफ़ ह़ासिल हुवा कि ज़ख़्मों से चूर चूर हो कर दम तोड़ रहे थे। रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि उन का लाशा मेरे क़रीब लाओ, लोग उठा कर लाए, अभी कुछ जान बाक़ी थी। आप ने ज़मीन पर घसीट कर अपना मुंह मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों पर रख दिया और इसी ह़ालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूह़ परवाज़ कर गई। (اسدالغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ، حضرت زیاد بن سکن رضی اللہ عنہ ، ج۲، ص۳۲۱)

तेरे क़दमों पर सर हो और तारे ज़िन्दगी टूटे
येही अन्जामे उल्फ़त है येही मरने का ह़ासिल है

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! इस मौत पर हज़ारों ज़िन्दगियां क़ुरबान !!!

अस्सी ज़ख़्म : ह़ज़रते अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के चचा थे, लड़ते लड़ते बहुत आगे निकल गए देखा कि कुछ लोगों ने हथियार फेंक दिये। अनस

बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा कि यहां तुम लोग क्या करते हो ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कुछ पता नहीं ! लोगों ने कहा : अब लड़ कर क्या करेंगे ? जिन के लिये लड़ते थे वोही न रहे। हम ने सुना है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो गए। अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर तड़प गए और फ़रमाया कि फिर हम उन के बा'द ज़िन्दा रह कर क्या करेंगे ? येह कह कर दुश्मन की फ़ौज में घुस गए और लड़ कर शहादत पाई। जंग के बा'द जब उन की लाश देखी गई तो 80 से ज़ियादा तीर, तल्वार और नेज़े के ज़ख़्म थे, कोई शख़्स पहचान तक न सका, उन की बहन ने उंगली देख कर लाश को पहचाना।

(اسد الغابۃفی معرفۃ الصحابۃ،انس بن نضر،ج۱،ص۱۹۸)

ह़ज़रते वह्ब बिन क़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कारनामा : ह़ज़रते वह्ब बिन क़ाबिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सह़ाबी हैं, जो किसी वक़्त में मुसलमान हुए थे और गांव में रहते थे, बकरियां चराते थे। अपने भतीजे के साथ एक रस्सी में बकरियां बांधे हुए मदीनए मुनव्वरा पहुंचे, पूछा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां तशरीफ़ ले गए ? मा'लूम हुवा कि उहुद की लड़ाई पर गए हुए हैं, वोह बकरियों को वहीं छोड़ कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंच गए, इतने में एक जमाअ़त कुफ़्फ़ार की ह़म्ला करती हुई आई। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जो इन को मुन्तशिर कर दे वोह जन्नत में मेरा रफ़ीक़ है। ह़ज़रते वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ोर से तल्वार चलानी शुरूअ़ की और सब को हटा दिया, दूसरी मरतबा फिर येही सूरत पेश आई, तीसरी मरतबा फिर ऐसा ही हुवा, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी। इस का सुनना था कि तल्वार ले कर कुफ़्फ़ार के जमघटे में घुस गए और शहीद हुए।

www.dawateislami.net

हज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं कि मैं ने वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी दिलेरी और बहादुरी किसी लड़ाई में नहीं देखी और शहीद होने के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मैं ने देखा कि वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिरहाने खड़े थे और इरशाद फ़रमाते थे : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से राज़ी हो, मैं तुम से राज़ी हूं। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुद अपने दस्ते मुबारक से दफ़्न फ़रमाया, बा वुजूद येह कि इस लड़ाई में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुद भी ज़ख़्मी थे। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे किसी के अ़मल पर इतना रश्क नहीं आया जितना वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़मल पर आया, मेरा दिल चाहता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के यहां उन जैसा आ'माल नामा ले कर पहुंचूं।

(الاصابة فی تمییز الصحابة ، وھب بن قابس، ج٦،ص٤٩٢)

हज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا : येह जंगे उहुद में अपने शोहर हज़रते ज़ैद बिन आ़सिम और अपने दो बेटों हज़रते अ़म्मारा और हज़रते अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) को साथ ले कर मैदान में कूद पड़ीं। और जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला कर दिया तो येह एक ख़न्जर ले कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में खड़ी हो गई और कुफ़्फ़ार के तीर व तल्वार के हर एक वार को रोकती रहीं। यहां तक की जब इब्ने क़मीआ मलऊन ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर तल्वार चला दी तो हज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस तल्वार को अपनी पीठ पर रोक लिया। चुनान्चे उन के कन्धे पर इतना गहरा ज़ख़्म लगा कि ग़ार पड़ गया। फिर खुद बढ़ कर इब्ने क़मीआ के कन्धे पर इस ज़ोर से तल्वार मारी कि वोह दो टुकड़े हो जाता मगर वोह मलऊन दोहरी ज़िरह पहने हुए था इस लिये बच गया। इस जंग में बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सर व गरदन पर तेरह ज़ख़्म लगे थे।

हज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के फ़रज़न्द हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मुझे एक काफ़िर ने जंगे उहुद में ज़ख़्मी कर दिया और मेरे ज़ख़्म से ख़ून बन्द नहीं होता था। मेरी वालिदा उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़ौरन अपना कपड़ा फाड़ कर ज़ख़्म को बांध दिया और कहा : बेटा उठो, खड़े हो जाओ और फिर जिहाद में मश्ग़ूल हो जाओ। इत्तिफ़ाक़ से वोही काफ़िर सामने आ गया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) ! देख तेरे बेटे को ज़ख़्मी करने वाला येही है। येह सुनते ही हज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने झपट कर उस काफ़िर की टांग में तल्वार का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि वोह काफ़िर गिर पड़ा और फिर चल न सका बल्कि सुरीन के बल घिसटता हुवा भागा। येह मन्ज़र देख कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराए और फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) ! तू ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा कर कि उस ने तुझ को इतनी ताक़त और हिम्मत अ़ता फ़रमाई कि तू ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद किया।

हज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला हम लोगों को जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ अ़ता फ़रमाए, उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये और उन के शोहर और उन के बेटों के लिये इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई कि

اللھم اجعلھم رفقا ئی فی الجنۃ

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन सब को जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे।

हज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ज़िन्दगी भर अ़लानिया येह कहती रहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ के बा'द दुन्या में बड़ी से बड़ी मुसीबत मुझ पर आ जाए तो मुझ को उस की कोई परवाह नहीं है।

(الطبقات الکبری لابن سعد،ام عمارۃ،ج۸،ص۴۰۳)

पयामे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه : इसी उहुद की लड़ाई में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि सा'द बिन रबीअ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه) का ह़ाल मालूम नहीं हुवा कि क्या गुज़री ? एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को तलाश के लिये भेजा, वोह शुहदा की जमाअ़त में तलाश कर रहे थे, आवाज़ें भी दे रहे थे कि शायद वोह ज़िन्दा हो, फिर पुकार कर कहा कि मुझे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भेजा है कि सा'द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की ख़बर लाऊं तो एक जगह से बहुत ही ज़ईफ़ आवाज़ आई। येह उस त़रफ़ बढ़े, जा कर देखा कि सात मक़्तूलीन के दरमियान पड़े हैं और एक आध सांस बाक़ी है। जब येह क़रीब पहुंचे तो ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरा सलाम कह देना और कह देना कि **अल्लाह** तआ़ला मेरी जानिब से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस से अफ़्ज़ल और बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमाए जो किसी नबी عَلَیْہِ السَّلَام को उस के उम्मती की त़रफ़ से बेहतर से बेहतर अ़त़ा किया हो और मुसलमानों को मेरा येह पैग़ाम पहुंचा देना कि "अगर काफ़िर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंच गए और तुम में से कोई एक आंख भी चमकती हुई रहे या'नी वोह ज़िन्दा रहा तो **अल्लाह** तआ़ला के यहां कोई उ़ज़्र भी तुम्हारा न चलेगा और येह कह कर जां बह़क़ हुए।" (الاصابة فی تمییز الصحابة،سعد بن ربیع رضی اللہ عنہ، ج۳،ص۴۹)

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का शौक़ व वारफ़्तगी : उहुद की लड़ाई से फ़राग़त पर मुसलमान मदीनए त़य्यिबा पहुंचे। जंग की तकान थी। मगर मदीनए मुनव्वरा पहुंचते ही येह इत्तिलाअ़ मिली कि अबू सुफ़्यान ने लड़ाई से वापसी पर हुमैरा अल असद (एक जगह का नाम है) पहुंच कर साथियों से मश्वरा किया और येह राए क़ाइम की, कि उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को शिकस्त हुई है

www.dawateislami.net

ऐसे मौक़अ़ को ग़नीमत समझना चाहिये था कि न मा'लूम फिर ऐसा वक़्त आए न आए, इस लिये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को (نَعُوْذُ بِاللّٰه) क़त्ल कर के लौटना चाहिये था इस इरादे से उस ने वापसी का मश्वरा किया।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लान कर दिया कि जो लोग उहुद में साथ थे वोही सिर्फ़ साथ हों और दोबारा ह़म्ले के लिये चलना चाहिये। अगर्चे मुसलमान उस वक़्त थके हुए थे मगर इस के बावुजूद सब के सब तैयार हो गए चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लान फ़रमा दिया था कि सिर्फ़ वोही लोग साथ चलें जो उहुद में साथ थे इस लिये ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी तमन्ना उहुद में भी शिर्कत की थी मगर वालिद ने येह कह कर इजाज़त न दी कि मेरी सात बहनें हैं कोई और मर्द नहीं है, उन्हों ने फ़रमाया था कि हम दोनों में से एक का रहना ज़रूरी है और ख़ुद जाने का इरादा फ़रमा चुके थे इस लिये मुझे इजाज़त न दी थी। उहुद की लड़ाई में उन की शहादत हो गई, अब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दें कि मैं भी हम रिकाब चलूं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दी, उन के इलावा और कोई ऐसा शख़्स नहीं गया जो उहुद में शरीक न हुवा।

(السيرة النبوية لابن هشام،خروج الرسول فی اثر العدو...الخ،ج۲،ص۸۷)

www.dawateislami.net

ज़ाते सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के

तअ़ल्लुके़ ख़ाति़र पर उ़मूमी नज़र

उस्वए सह़ाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم का दरख़्शां बाब

www.dawateislami.net

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم और बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बरकत अन्दोज़ी : सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात से बरकत अन्दोज़ होते रहते। मसलन बच्चे बीमार पड़ते या पैदा होते तो उन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर करते, आप बच्चे के सर पर हाथ फेरते, अपने मुंह में खजूर डाल कर उस के मुंह में डालते और उस के लिये बरकत की दुआ फ़रमाते।

ह़ज़रते साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ कहते हैं कि मैं बीमार पड़ा तो मेरी ख़ाला मुझ को आप की ख़िदमत में ले गई। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सर पर हाथ फेरा और दुआए बरकत की। इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू किया तो मैं ने आप के वुज़ू का पानी पिया।

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات ، باب الدعاء للصبیان بالبرکۃ .....الخ، الحدیث:٦٣٥٢، ج٤،ص٢٠٤)

ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लड़का पैदा हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का नाम रखा, अपने मुंह में खजूर डाल के उस के मुंह में डाली और उस को बरकत की दुआ दी।

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات ، باب الدعاء للصبیان بالبرکۃ .....الخ، الحدیث:٦٣٥٢، ج٤،ص٢٠٣)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पैदा हुए तो उन की वालिदा ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उन को ले कर आईं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद में रख दिया।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर मंगा कर चबाई और उस को उन के मुंह में डाल दिया फिर बरकत की दुआ़ दी । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बच्चों के मुंह में लुआ़ब डाल देते और बा'ज़ की आंखों पर हाथ फेरते ।

(صحیح البخاری، کتاب العقیقة ، باب تسمیة المولود....الخ، الحدیث:٥٤٦٧، ج٣،ص٥٤٦)

हज़रते ज़ोहरा बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सहाबी थे । बचपन ही में उन की वालिदा उन को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लाईं । सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के सर पर हाथ फेरा और दुआ़ दी, चुनान्चे जब उन को ले कर उन के दादा ग़ल्ला ख़रीदने के लिये बाज़ार जाते थे और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते इब्ने जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात होती थी तो कहते थे कि हम को भी शरीक करो क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम को बरकत की दुआ़ दी है ।

(صحیح البخاری، کتاب الشرکة، باب الشرکة فی الطعام وغیرہ، الحدیث: ٢٥٠١_٢٥٠٢،ج٢،ص١٤٥)

अ़ल्लामा इब्ने हजर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस की शर्ह में लिखते हैं : "इस ह़दीस से साबित होता है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बरकत ह़ासिल करने के लिये सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को आप की ख़िदमत में अपनी औलाद को ह़ाज़िर करने का बड़ा शौक़ था ।" (فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب الشرکة، باب الشرکة فی الطعام وغیرہ، ج٦،ص١١٥)

नमाज़े फ़ज्र के बा'द सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुलाज़िम बरतनों में पानी ले कर ह़ाज़िर होते आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन में दस्ते मुबारक डाल देते वोह मुतबर्रक हो जाता ।

जब फल पुख़्ता होते तो पहला फल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करते । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बरकत की

www.dawateislami.net

दुआ फ़रमाते और सब से छोटा बच्चा जो मौजूद होता उस को दे देते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू का बचा हुवा पानी सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के लिये आबे ह़यात था जिस पर वोह जान देते थे।

एक बार ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुज़ू का बचा हुवा पानी निकाला तो तमाम सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उस को झपट लिया।

(سنن النسائی ، کتاب الطھارۃ، باب الانتفاع بفضل الوضوء،ج١،ص٨٧)

एक दिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू किया। पानी बच गया तो तमाम सहाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उस को ले कर जिस्म पर मल लिया।

(صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب استعمال فضل وضوء الناس،الحدیث:١٨٧،ج١،ص٨٨)

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़लक़ करवा रहे थे, सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घेर लिया और वोह ऊपर ही से बालों को उचक रहे थे।

(صحیح مسلم،کتاب الوضوء، باب قرب النبی علیہ السلام من الناس وتبرکھم بہ، الحدیث:٢٣٢٥،ص١٢٧٠)

एक बार रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू मह़ज़ूरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की पेशानी पर हाथ फेर दिया, इस के बा'द उन्हों ने उ़म्र भर न सर के आगे के बाल कटवाए न मांग निकाली।

(سنن ابی داود،کتاب الصلوۃ، باب کیف الاذان، تحت الحدیث:٥٠١،ج١، ص٢١٢)

बल्कि इस को बत़ौरे तबर्रुक और यादगार के क़ाइम रखा।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के मकान पर तशरीफ़ लाते तो वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बरकत ह़ासिल करने की दरख़्वास्त करते।

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सहाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के घर तशरीफ़ ले गए । उन्हों ने दा'वत की, जब चलने लगे तो घोड़े की बाग पकड़ कर अ़र्ज़ की, कि मेरे लिये दुआ़ फ़रमाइये, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ए बरकत और दुआ़ए मग़फ़िरत फ़रमाई ।

(سنن ابی داود، کتاب الأشربة، باب فی النفخ فی الشراب ، الحديث:٣٧٢٩، ج٣، ص٤٧٥)

एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के घर तशरीफ़ लाए और दरवाज़े पर खड़े हो कर सलाम किया । उन्हों ने आहिस्ता से जवाब दिया । उन के साहिब ज़ादे ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इज़्न नहीं देते ? बोले चुप रहो, मक़्सद येह है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम पर बार बार सलाम करें । आप ने दोबारा सलाम किया । फिर उसी क़िस्म का जवाब मिला । तीसरी बार सलाम कर के आप वापस चले तो हज़रते सा'द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पीछे पीछे दौड़े हुए आए और कहा कि मैं आप का सलाम सुनता था लेकिन जवाब इस लिये आहिस्ता से देता था कि आप हम पर मुतअ़द्दद बार सलाम करें ।

(سنن ابی داود ، کتاب الادب،باب کم مرة یسلم الرجل فی الاستئذان، الحديث: ٥١٨٥،ج٤،ص٤٤٥)

मुह़ाफ़ज़ते यादगारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के ज़माने में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की यादगारें मह़फ़ूज़ थीं जिन को वोह जान से ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते थे और उन से बरकत ह़ासिल करते थे ।

हज़रते अ़ली बिन हुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का बयान है कि जब हम हज़रते इमामे हुसैन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की शहादत के ज़माने में यज़ीद

के दरबार से पलट कर मदीने में आए तो ह़ज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मिले और मुझ से कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तलवार मुझे दे दो ऐसा न हो कि येह लोग इस को छीन लें। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम ने मुझे येह तलवार दी तो जब तक जिस्म में जान बाक़ी है कोई शख़्स इस की त़रफ़ दस्त दराज़ी नहीं कर सकता।

(سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب مایکرہ ان یجمع بینھن من النساء، الحدیث: ۲۰۶۹، ج۲، ص۳۲۷)

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक जुब्बा मह़फ़ूज़ था। जब उन का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उस को ले लिया और मह़फ़ूज़ रखा। चुनान्चे जब उन के ख़ानदान में कोई शख़्स बीमार होता था तो शिफ़ा ह़ासिल करने के लिये धो कर उस का पानी पिलाती थीं।

(المسندلامام احمد بن حنبل، حدیث اسماء بنت ابی بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہما، الحدیث: ۲۷۰۰۸، ج۱۰، ص۲۷۱)

बहुत से सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم इन यादगारों को ज़ादे आख़िरत समझते थे और इन को बा'दे मर्ग भी अपने पास से जुदा करना पसन्द नहीं करते थे।

जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के घर तशरीफ़ लाते थे तो उन की वालिदा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पसीने को एक शीशी में भर कर अपनी ख़ुश्बू में मिला देती थीं। चुनान्चे जब ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इन्तिक़ाल किया तो वसिय्यत की, कि येह ख़ुश्बू इन के ह़नूत़ (चन्द ख़ुश्बूदार चीज़ों का एक मुरक्कब जो मुर्दे को ग़ुस्ल देने के बा'द उस पर मलते हैं) में शामिल की जाए।

रिवायत में येह भी है कि वोह आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक को भी शीशी में भर लेती थीं।

(صحيح البخاری، کتاب الاستئذان،باب من زارقوما فقال عندهم، الحديث: ٦٢٨١،ج٤،ص١٨٢)

लेकिन अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस ह़दीस की शर्ह़ में पहले तो इस को एक बे जोड़ चीज़ समझा है लेकिन इस के बा'द लिखा है कि बा'ज़ लोगों के नज़्दीक इस से वोह बाल मुबारक मुराद हैं जो कंघी करने में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सर से जुदा हो जाते थे।

फिर ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से एक रिवायत नक़्ल की है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब मिना में अपने बाल मुबारक उतरवाए तो ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक ले लिये और उन को ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की वालिदा के ह़वाले किया जिन को उन्हों ने अपनी ख़ुश्बू में शामिल कर लिया। इस से येह नतीजा निकलता है कि जिस ख़ुश्बू में येह बाल मुबारक शामिल थे उसी में वोह पसीने को भी शामिल कर लेती थीं।

(فتح الباری شرح البخاری، کتاب الاستئذان،باب من زار قوما فقال عندهم، تحت الحديث: ٦٢٨١،ج١٢،ص٥٩)

ग़ज़्वए ख़ैबर में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को ख़ुद दस्ते मुबारक से एक हार पहनाया था, वोह उस की इतनी क़द्र करती थीं कि उ़म्र भर गले से जुदा नहीं किया और जब इन्तिक़ाल करने लगीं तो वसिय्यत की, कि उन के साथ वोह भी दफ़्न कर दिया जाए।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حديث امرأة من بنی غفار رضی الله عنها، الحديث: ٢٧٢٠٦،ج١٠،ص٣٢٤)

www.dawateislami.net

हज़रत अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक कुरता, एक तहबन्द, एक चादर और चन्द मूए मुबारक थे, उन्हों ने वफ़ात के वक़्त वसिय्यत की, कि येह कपड़े कफ़न में लगाए जाएं और मूए मुबारक मुंह और नाक में भर दिये जाएं। (تاریخ الخلفاء،معاویۃ بن ابی سفیان،ص١٥٨ بتصرف)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन कपड़ों में इन्तिक़ाल फ़रमाया था, हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन को मह़फ़ूज़ रखा था। चुनान्चे उन्हों ने एक दिन एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक यमनी तहबन्द और एक कम्बल दिखा कर कहा कि खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन ही कपड़ों में इन्तिक़ाल फ़रमाया था। (سنن ابی داود، کتاب اللباس،باب لباس الغلیظ،الحدیث:٤٠٣٦،ج٤،ص٦٣)

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ज़्ज़ (ऊन और रेशम से बुना हुवा कपड़ा) का सियाह इमामा अ़त़ा फ़रमाया था, उन्हों ने उस को मह़फ़ूज़ रखा था और इस पर फ़ख़्र किया करते थे, चुनान्चे एक बार बुख़ारा में ख़च्चर पर सुवार हो कर निकले तो इमामा दिखा कर कहा कि येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ को इनायत फ़रमाया था।

(سنن ابی داود،کتاب اللباس،باب ماجاء فی الخز،الحدیث:٤٠٣٨، ج٤، ص٦٤)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चन्द बाल मुबारक हज़रते उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बत़ौरे यादगार के मह़फ़ूज़ रखे थे और जब कोई शख़्स बीमार होता था तो एक बरतन में पानी भर कर भेज देता था और वोह उस में उन मुबारक बालों को धो कर वापस कर देती थीं, जिस को वोह शिफ़ा ह़ासिल करने के लिये पी जाता था (या उस से गुस्ल कर लेता था)।

(صحیح البخاری،کتاب اللباس،باب مایذکر فی الشیب،الحدیث٥٨٩٦،ج٤،ص٧٦)

ख़ुलफ़ा इन यादगारों की निहायत इ़ज़्ज़त करते थे और इन से बरकत अन्दोज़ होते थे, एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी अ़जमी बादशाह के नाम ख़त़ लिखना चाहा तो लोगों ने कहा कि जब तक ख़त़ पर मोहर न हो अह्ले अ़जम उस को नहीं पढ़ते, इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक चांदी की अंगूठी तय्यार करवाई, जिस के नगीने पर मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) कन्दा था, इस अंगूठी को ख़ुलफ़ाए सलासा ने मह़फ़ूज़ रखा था, अख़ीर में ह़ज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से एक कूंएं में गिर पड़ी, उन्हों ने तमाम कूंएं का पानी निकाल डाला, लेकिन येह गोहरे नायाब न मिल सका।

(سنن ابی داود، کتاب الخاتم، باب ماجاء فی اتخاذ الخاتم، الحدیث: ۴۲۱۴۔۴۲۱۵، ج۴، ص۱۱۹)

ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के क़सीदे के सिले में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद अपनी चादर इनायत फ़रमाई थी। येह चादर अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के साहि़ब ज़ादे से ख़रीद ली और उन के बा'द तमाम ख़ुलफ़ा ई़दैन में वोही चादर ओढ़ कर निकलते थे। (الاصابۃ، تذکرۃ کعب بن زھیر، ج۵، ص۴۴۳)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस प्याले में पानी पीते थे, वोह ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास मह़फ़ूज़ था एक बार वोह टूट गया तो उन्हों ने उस को चांदी के तार से जुड़वाया, उस में एक लोहे का ह़ल्क़ा भी लगा हुवा था, बा'द को ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस में सोने या चांदी का ह़ल्क़ा लगवाना चाहा लेकिन ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मन्अ़ किया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो काम किया है उस में तग़य्युर नहीं करना चाहिये।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दो और प्याले ह़ज़रते सहल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पास मह़फ़ूज़ थे।

(صحیح البخاری، کتاب الأشربة، باب الشرب من قدح النبی صلی اللہ علیہ وسلم وآنیتہ، الحدیث:٥٦٣٧۔٥٦٣٨، ج٣، ص٥٩٥)

एक दिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर तशरीफ़ लाए, घर में एक मश्कीज़ा लटक रहा था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस का दहाना अपने मुंह से लगाया और पानी पिया, ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने मश्कीज़े के दहाने को काट कर अपने पास बत़ौरे यादगार रख लिया।

(طبقات الکبری، تذکرۃ ام سلیم بنت ملحان، ج٨، ص٣١٥)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के यहां कभी कभी क़ैलूला फ़रमाते थे, इस ग़रज़ से उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये एक ख़ास बिस्तर और एक ख़ास तहबन्द बनवा लिया था, जिस को पहन कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस्तिराह़त फ़रमाते थे, येह यादगारें एक मुद्दत तक उन के पास मह़फ़ूज़ रहीं। अख़ीर में मरवान ने उन से ले लिया।

(اسدالغابة، تذکرۃ الشفاء بنت عبداللہ، ج٧، ص١٧٧)

इन यादगारों के इ़लावा सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हर चीज़ को यादगार समझते थे और लोगों को उस की ज़ियारत करवाते थे।

ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मुझ को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मस्जिद में वोह जगह दिखाई जहां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मो'तकिफ़ होते थे।

(سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب این یکون الاعتکاف؟، الحدیث:٢٤٦٥، ج٢، ص٤٨٩)

www.dawateislami.net

अदबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم जिस त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का अदबो एह़तिराम करते थे, उस का इज़्हार सेंकड़ों त़रीक़े से होता था, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते तो दरबारे नबुव्वत के अदब व अ़ज़्मत के लिह़ाज़ से ख़ास तौर पर कपड़े ज़ेबे तन कर लेते । एक सह़ाबिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि

جمعت علیَّ ثیابی حین اُمسَیتُ فاتیتُ رسولَ الله صلی الله تعالیٰ علیه وآله وسلم

शाम हुई तो मैं ने तमाम कपड़े पहन लिये और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई ।

(سنن ابی داود،کتاب الطلاق،باب فی عدۃ الحامل،الحدیث:۲۳۰۶،ج۲،ص۴۲۷)

बिग़ैर त़हारत के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होना और आप से मुसाफ़ह़ा करना गवारा न करते । मदीने के किसी रास्ते में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सामना हो गया, उन को नहाने की ज़रूरत थी, गवारा न हुवा कि इस ह़ालत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने आएं, इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा तो कतरा गए और ग़ुस्ल कर के ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा तो फ़रमाया : अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! कहां थे ? बोले, मुझे ग़ुस्ल की ह़ाजत थी, इस लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठना पसन्द नहीं करता था ।

(سنن ابی داود،کتاب الطهارة، باب فی الجنب یصافح، الحدیث:۲۳۱،ج۱،ص۱۱۰)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने बैठते तो फ़र्त़े अदब से तस्वीर बन जाते, अह़ादीस में इसी ह़ालत का नक़्शा इन अल्फ़ाज़

में खींचा गया है : كانما على رءُوسهم الطير या'नी सहाबा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने इस त़रह़ बैठते थे गोया उन के सरों पर चिड़या बैठी होती हैं। (سنن ابی داود، کتاب الطب، باب فی الرجل یتداوی، الحدیث:٣٨٥٥،ج٤، ص٥)

घर में बच्चे पैदा होते तो अदब से उन का नाम मुह़म्मद न रखते, एक दफ़्आ़ एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घर में बच्चा पैदा हुवा तो उन्हों ने **मुह़म्मद** नाम रखा। लेकिन उन की क़ौम ने कहा : हम न येह नाम रखने देंगे न इस कुन्यत से तुम को पुकारेंगे, तुम इस के मुतअ़ल्लिक़ खुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मश्वरा कर लो। वोह बच्चे को ले कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और वाक़िआ़ बयान किया, तो इरशाद हुवा कि मेरे नाम पर नाम रखो लेकिन मेरी कुन्यत न इख़्तियार करो। (صحیح مسلم ، کتاب الاداب ، باب النهی عن التکنی بابی القاسم.....الخ، الحدیث:٢١٣٣،ص١١٧٨)

अगर रास्ते में कभी साथ हो जाता तो अदब की वज्ह से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सुवारी पर सुवार होना पसन्द न करते। एक बार ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़च्चर हांक रहे थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सुवार क्यूं नहीं हो लेते। लेकिन उन्हों ने इस को बड़ी बात समझा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़च्चर पर सुवार होऊं। ताहम امتثالا للامر (ता'मीले हुक्म के लिये) थोड़ी दूर तक सुवार हो लिये। (سنن النسائی، کتاب الاستعاذة، ج٨،ص٢٥٣)

फ़र्ते अदब से किसी बात में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तक़द्दुम या मुसाबक़त गवारा न करते। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के सफ़र में क़ज़ाए ह़ाजत के लिये सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से अलग हो गए, नमाज़े फ़ज्र का वक़्त आ गया तो सह़ाबा

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आने से पेशतर ही हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इमामत में नमाज़ शुरूअ़ कर दी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पहुंचे तो एक रक्अ़त नमाज़ हो चुकी थी, इस लिये आप दूसरी रक्अ़त में शरीक हुए। नमाज़ हो चुकी तो तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने इस को बे अदबी बल्कि गुनाह ख़याल किया और सब के सब कस्रत के साथ तस्बीह़ करने लगे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया कि तुम ने अच्छा किया।

(سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب المسح علی الخفین، الحدیث:۱۴۹، ج۱،ص۸۳)

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कोई निज़ाअ़ चुकाने के लिये क़बीलए बनू अ़म्र बिन औ़फ़ में तशरीफ़ ले गए। नमाज़ का वक़्त आ गया तो मुअज़्ज़िन हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में आया कि नमाज़ पढ़ा दीजिये। वोह नमाज़ पढ़ा रहे थे कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आ कर शरीके जमाअ़त हो गए। लोगों ने **तस्फ़ीक़** की (बाएं हाथ की पुश्त पर दाएं हाथ की उंगलियां इस त़रह़ मारना कि आवाज़ पैदा हो, **तस्फ़ीक़** कहलाता है।) हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर्चे किसी त़रफ़ मुतवज्जेह न होते थे, ताहम जब लोगों ने मुत्तसिल तस्फ़ीक़ की तो मुड़ कर देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशारा किया कि अपनी जगह पर क़ाइम रहो। उन्हों ने पहले ख़ुदा का शुक्र किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की इमामत को पसन्द फ़रमाया, फिर पीछे हट आए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे बढ़ कर नमाज़ पढ़ाई, नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया कि जब मैं ने हुक्म दिया तो तुम क्यूं अपनी जगह से हट आए? बोले

www.dawateislami.net

कि इब्ने अबी क़ुहाफ़ा का येह मुंह न था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे नमाज़ पढ़ाए ।

(سنن ابی داود، کتاب الصلاۃ،باب التصفیق فی الصلاۃ، الحدیث:٩٤٠، ج١،ص٣٥٤)

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पैदल जा रहे थे, कि इसी हालत में एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ गधे पर सुवार आए । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पैदल देखा तो ख़ुद फ़र्ते अदब से पीछे हट गए और आप को आगे सुवार करना चाहा, लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम आगे बैठने के ज़ियादा मुस्तहिक़ हो, अलबत्ता अगर तुम्हारी इजाज़त हो तो मैं आगे बैठ सकता हूं ।

(سنن ابی داود،کتاب الجهاد،باب رب الدابة أحق بصدرها، الحدیث: ٢٥٧٢، ج٣،ص٤٠)

अगर कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ खाना खाने का इत्तिफ़ाक़ होता तो जब तक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खाना शुरूअ़ न करते तमाम सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم फ़र्ते अदब से खाने में हाथ न डालते ।

(سنن ابی داود،کتاب الأطعمة، باب التسمية علی الطعام، الحدیث:٣٧٦٦،ج٣،ص٤٨٧)

अदब के बाइ़स आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आगे चलना पसन्द नहीं करते ।

एक सफ़र में ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ एक सरकश ऊंट पर सुवार थे जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आगे निकल जाता था । ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने उन को डांटा कि कोई आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आगे न बढ़ने पाए ।

(صحیح البخاری، کتاب الهبة، باب من أهدی له هدیةٌ وعندهٗ جلساؤه.....الخ، الحدیث:٢٦١٠،ج٢،ص١٧٩)

किसी चीज़ में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुक़ाबले की जुरअत न करते, एक बार चन्द सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم जो क़बीलए

www.dawateislami.net

अस्लम से तअ़ल्लुक़ रखते थे बाहम तीर अन्दाज़ी में मुक़ाबला कर रहे थे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ बनू इस्माईल तीर फेंको क्यूंकि तुम्हारे बाप तीर अन्दाज़ थे और मैं फ़ुलां क़बीले के साथ हूं। दूसरे गुरौह के लोग फ़ौरन रुक गए। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा कि तीर क्यूं नहीं फेंकते ? बोले अब क्यूंकर मुक़ाबला करें जब कि आप उन के साथ हैं। फ़रमाया : तीर फेंको मैं तुम सब के साथ हूं।

(صحيح البخاری، كتاب الجهاد و السير، باب التحريض على الرمى ، الحديث: ٢٨٩٩، ج٢، ص٢٨٢)

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस ह़दीस की शर्ह़ में लिखते हैं कि येह लोग इस लिये रुक गए कि अगर वोह अपने फ़रीक़ पर ग़ालिब आ गए और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी उस के साथ हैं तो आप भी मग़्लूब हो जाएंगे। इस लिये उन्हों ने अदब से मुक़ाबला ही करना छोड़ दिया, इस अदबो एह़तिराम का नतीजा येह था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत किसी क़िस्म का सूए अदब गवारा न करते।

(فتح البارى شرح صحيح البخارى، كتاب الجهاد و السير، باب التحريض على الرمى، تحت الحديث:٢٨٩٩، ج٧، ص٧٧)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीने तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मकान में क़ियाम फ़रमाया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नीचे के ह़िस्से में और उन के अह्लो इ़याल ऊपर के ह़िस्से में रहने लगे। एक रात ह़ज़रते अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बेदार हुए तो कहा कि हम और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ऊपर चलें फिरें ? इस ख़याल से तमाम अह्लो इ़याल को एक कोने में कर दिया। सुब्ह़ को

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गुज़ारिश की, कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊपर क़ियाम फ़रमाएं। इरशाद हुवा कि नीचे का हिस्सा हमारे लिये ज़ियादा मौज़ूं है।

एक रिवायत में है हज़रते अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बराबर इस बात पर मुसिर रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऊपर की मन्ज़िल में रहें और ख़ुद निचली मन्ज़िल में रहें।

बोले कि जिस छत के नीचे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हों हम उस पर नहीं चढ़ सकते, लिहाज़ा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बालाख़ाने पर क़ियाम फ़रमाया। (مدارج النبوت،قسم دوم، باب چهارم،بیان قضیهٔ هجرت آنحضرت ،ج۲، ص۶۵)

बा'ज़ सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सिन में बड़े थे, लेकिन उन को फ़र्ते अदब से येह गवारा न था कि उन को आप से बड़ा कहा जाए।

एक बार हज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा : आप बड़े हैं या रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ? बोले : बड़े तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, अलबत्ता मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले पैदा हुवा। (سنن الترمذی،کتاب المناقب، باب ماجاء فی میلاد النبی، الحدیث:۳۶۳۹، ج۵، ص۳۵۶)

अगर ना दानिस्तगी में भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में कोई ना मुनासिब बात निकल जाती तो उस की मुआफ़ी चाहते।

एक सहाबिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बच्चा मर गया और वोह इस पर रो रही थीं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गुज़र हुवा तो फ़रमाया : ख़ुदा से डरो और सब्र करो, बोलीं तुम्हें मेरी मुसीबत की क्या परवाह है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चले गए तो लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे, दौड़ी हुई आईं और अ़र्ज़ की, कि मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं पहचाना था।

(سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب الصبر عندالصدمة، الحدیث:۳۱۲۴، ج۳، ص۲۵۸)

www.dawateislami.net

अगर किसी दूसरे शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत बे अदबी का ख़याल होता तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم सख़्त बरहम होते। एक बार ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दौलत सराए अक़्दस में आए। देखा कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ब आवाज़े बुलन्द बोल रही हैं। फ़ौरन त़मांचा उठाया और कहा अब कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने आवाज़ बुलन्द न होने पाए।

(سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب ماجاء فی المزاح، الحدیث:٤٩٩٩، ج٤، ص ٣٩٠)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर एक शख़्स का कुछ क़र्ज़ था, उस ने गुस्ताख़ाना त़रीक़े से तक़ाज़ा किया, तो तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم उस पर बर अंगेख़्ता हो गए तो नबिये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रुको ! क़र्ज़ ख़्वाह को मक़रूज़ पर मुत़ालबा करने का उस वक़्त तक ह़क़ है जब तक वोह क़र्ज़ अदा न करे।

(سنن ابن ماجه، کتاب الصدقات، باب لصاحب الحق سلطان ، الحدیث٢٤٢٥، ج٣،ص ١٥٠)

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में थे, एक बद्दू आया और वह़शियाना लहजे में आवाज़ बुलन्द की और पुकारा : या मुह़म्मद, या मुह़म्मद। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने कहा : येह क्या ? (इस त़रह़ कहना) मन्अ़ है।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبة والاستغفار.....الخ، الحدیث:٣٥٤٧،ج٥،ص٣١٦)

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अन्सार के ख़ानदानों में सब से अफ़्ज़ल बनू नज्जार हैं, फिर बनू अ़ब्दिल अश्हल, फिर बनू ह़ारिस बिन अल ख़ज़रज, फिर बनू साइ़दा, इन के इ़लावा अन्सार के तमाम ख़ानदान अच्छे हैं। ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा क़बीलए बनू साइ़दा से थे, उन को जब मा'लूम हुवा कि

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के क़बीले को चौथे नम्बर पर रखा है तो उन को किसी क़दर ना गवार हुवा, बोले : मेरे गधे पर ज़ीन कसो, मैं ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू करूंगा, लेकिन उन के भतीजे ह़ज़रते सह्ल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने कहा : क्या आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरदीद के लिये जाते हैं ? हालांकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वुजूहे फ़ज़ीलत के सब से ज़ियादा आ़लिम हैं, येह क्या कम है कि आप का चौथा नम्बर है !

(صحیح مسلم، کتاب الفضائل،باب فی خیر دور الانصار.....الخ،الحدیث: ۲۵۱۱،ص ۱۳۶۱)

सुल्हे हुदैबिया के बा'द काफ़िरों का मुसलमानों में इख़्तिलात़ हो गया, ह़ज़रते सलमह आए और एक दरख़्त के नीचे लेट गए, चार मुशरिक भी उस जगह आए और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया, उन को गवारा न हो सका, उठ गए और दूसरी जगह चले गए और चारों मुशरिक भी तलवार को लटका कर सो रहे, इसी ह़ालत में शोर हुवा कि इब्ने ज़ुनैम क़त्ल कर दिया गया, ह़ज़रते सलमह ने मौक़अ़ पा कर तलवार मियान से खींच ली और चारों पर ह़ालते ख़्वाब में ह़म्ला कर के उन के तमाम हथियारों पर क़ब्ज़ा कर लिया और कहा कि उस ज़ात की क़सम जिस ने मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इ़ज़्ज़त दी, तुम में से जो शख़्स सर उठाएगा उस का दिमाग़ पाश पाश कर दिया जाएगा।

(صحیح مسلم، کتاب الجهاد،باب غزوة ذی قردوغیرها.....الخ، الحدیث:۱۸۰۷، ص ۱۰۰۰)

एक शख़्स का नाम मुह़म्मद था, ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने देखा कि एक आदमी उन को गाली दे रहा है, बुला कर कहा कि देखो तुम्हारी वज्ह से **मुह़म्मद** को गाली दी जा रही है, अब ता दमे मर्ग तुम इस नाम से पुकारे नहीं जा सकते, चुनान्चे उसी वक़्त उस

www.dawateislami.net

का नाम अ़ब्दुर्रह़मान रख दिया गया। फिर बनू त़ल्ह़ा के पास पैग़ाम भेजा। जो लोग इस नाम के हों उन के नाम बदल दिये जाएं। इत्तिफ़ाक़ से वोह लोग सात आदमी थे और उन के सरदार का नाम मुह़म्मद था। लेकिन उन्हों ने कहा : ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही ने मेरा नाम **मुह़म्मद** रखा है, बोले अब मेरा इस पर कोई ज़ोर नहीं चल सकता।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حدیث محمد بن طلحة بن عبیداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہ، الحدیث:١٧٩١٦، ج٤،ص٢٦٧)

छोटे छोटे बच्चे भी अगर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ किसी क़िस्म की शोख़ी करते तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم उन को डांट देते, ह़ज़रते उम्मे ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने बाप के साथ ह़ाज़िरे ख़िदमत हुईं और बचपन की वज्ह से ख़ातमुन्नबुव्वत से खेलने लगीं, उन के वालिद ने डांटा, लेकिन आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : खेलने दो।

(صحیح البخاری، کتاب الجهاد،باب من تکلم بالفارسیة و الرطانة، الحدیث:٣٠٧١،ج٢،ص٣٣١)

जो चीज़ें शाने नबुव्वत के ख़िलाफ़ होतीं, सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने उन के ज़िक्र तक को सूए अदब समझते, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब क़ज़ा उ़मरह अदा फ़रमाया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे आगे अश्आ़र पढ़ते चलते थे, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुना तो फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने और ह़ुदूदे ह़रम के अन्दर शे'र पढ़ते हो ? लेकिन आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इस को मुस्तह़सन फ़रमाया।

(سنن النسائی، کتاب مناسك الحج ، باب انشاد الشعر فی الحرم والمشی بین یدی الامام، ج٥،ص٢٠٢)

www.dawateislami.net

(तिरमिज़ी में है कि अश्आ़र ह़ज़रते मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पढ़े थे और येही सह़ीह़ भी है)

एक बार कुछ लोगों ने जुमुआ़ के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर के सामने शोरो ग़ुल करना शुरूअ़ किया, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने डांटा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मिम्बर के सामने आवाज़ ऊंची न करो।

(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ ،باب فضل الشھادۃ فی سبیل اللہ تعالی، الحدیث:۱۸۷۹،ص۱۰٤٤)

येह ता'ज़ीम, येह अदब, येह इ़ज़्ज़त, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी के साथ ही मख़्सूस न थी, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द भी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इसी त़रह़ अदब करते थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द क़ब्र के मुतअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ हुवा कि लह़्द खोदी जाए या सन्दूक़, इस पर लोगों ने शोरो ग़ुल करना शुरूअ़ कर दिया, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने वफ़ात व ह़यात दोनों ह़ालतों में शोरो शग़ब न करो।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی الشق، الحدیث:۱۵۵۸، ج۲،ص۲٤۵)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के इस अदबो एह़तिराम का मन्ज़र सुल्ह़े हुदैबिया में उ़रवह को नज़र आया तो वोह सख़्त मुतअस्सिर हुवा, उस ने सुल्ह़ से मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू की, तो अ़रब के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ रीशे मुबारक की त़रफ़ हाथ बढ़ाना चाहा, लेकिन जब जब हाथ बढ़ाता था ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तलवार के ज़रीए

www.dawateislami.net

से रोक देते थे, इस वाक़िए से उ़रवह की इस त़रफ़ तवज्जोह हो गई और उस ने सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के त़र्ज़े अ़मल को बग़ौर देखना शुरूअ़ किया। तो उस पर येह असर पड़ा कि पलटा तो कुफ़्फ़ार से बयान किया कि मैं ने क़ैसरो किस्रा और नज्जाशी के दरबार देखे हैं। लेकिन मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब जिस क़दर मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम करते हैं इस क़दर किसी बादशाह के रुफ़क़ा नहीं करते। अगर वोह थूकते हैं तो उन लोगों के हाथों में उन का थूक गिरता है और वोह अपने जिस्म व चेहरे पर उस को मलते हैं, अगर वोह कोई हुक्म देते हैं तो जान निसार करते हैं और वोह लोग बचे खुचे पानी के लिये बाहम लड़ पड़ते हैं अगर उन के सामने बोलते हैं तो उन की आवाज़ें पस्त हो जाती हैं और वोह उन की त़रफ़ आंख भर कर नहीं देखते।

(صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجھاد والمصالحۃ مع اھل الحرب وکتابۃ الشروط، الحدیث:۲۷۳۱، ج۲، ص۲۲۳)

जां निसारी

सुल्हे़ हु़दैबिया में जब उ़रवह ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा कि मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ऐसे चेहरे और मख़्लूत़ आदमी देखता हूं जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ कर भाग जाएंगे, तो ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दिल पर इस त़न्ज़ आमेज़ फ़िक़्रे ने निश्तर का काम दिया और उन्हों ने बरहम हो के कहा : हम और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ कर भाग जाएंगे ?

(صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجھاد والمصالحۃ مع اھل الحرب.....الخ، الحدیث:۲۷۳۱، ج۲، ص۲۲۳)

येह एक क़ौल था जिस की ताईद हर मौक़अ़ पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने अपने अ़मल से की।

इब्तिदाए इस्लाम में एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ने में मश्ग़ूल थे, उ़क्बा बिन अबी मुई़त़ आया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का गला घोंटना चाहा, ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस को धकेल दिया और कहा कि एक आदमी को सिर्फ़ इस लिये क़त्ल करते हो कि वोह कहता है कि मेरा मा'बूद **अल्लाह** है, ह़ालांकि वोह तुम्हारे ख़ुदा की जानिब से दलाइल ले कर आया है।

(صحيح البخاری،کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت متخذا خليلا، الحديث:۳۶۷۸،ج۲،ص۵۲۴)

हिजरत के बा'द ख़त़रात और भी ज़ियादा हो गए थे, कुफ़्फ़ारे मक्का के इ़लावा अब मुनाफ़िक़ीन और यहूद नए दुश्मन हो गए थे, जिन का रात दिन डर लगा रहता था, मगर सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त के लिये अपने आप को इन तमाम ख़त़रात में डाल देते थे, चुनान्चे इब्तिदाए हिजरत में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक शब बेदार हुए तो फ़रमाया : काश ! आज की रात कोई सालेह़ बन्दा मेरी ह़िफ़ाज़त करता। थोड़ी देर के बा'द हथियार की झनझनाहट की आवाज़ आई । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आवाज़ सुन कर फ़रमाया : कौन है ? जवाब मिला : मैं सा'द बिन अबी वक़्क़ास। फ़रमाया : क्यूं आए ? बोले मेरे दिल में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निस्बत ख़ौफ़ पैदा हुवा इस लिये ह़िफ़ाज़त के लिये ह़ाज़िर हुवा। (سنن الترمذی،کتاب المناقب، باب مناقب ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحديث:۳۷۷۷،ج۵،ص۴۱۹)

इन ख़त़रात की वज्ह से अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थोड़ी देर के लिये भी आंख से ओझल हो जाते तो जां निसारों के दिल धड़कने लगते थे।

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के हल्क़े में रौनक़ अफ़रोज़ थे, किसी ज़रूरत से उठे तो पलटने में देर हो गई। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم घबरा गए कि ख़ुदा न ख़्वास्ता दुश्मनों की त़रफ़ से कोई चश्मे ज़ख़्म तो नहीं पहुंचा। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी परेशानी की ह़ालत में घबरा कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जुस्तुजू में अन्सार के एक बाग़ में पहुंचे। दरवाज़ा ढूंडा, तो नहीं मिला, दीवार में पानी की एक नाली नज़र आई उस में से घुस कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचे और सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की परेशानियों की दास्तान सुनाई।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب دلیل علی أن من مات علی التوحید دخل الجنة قطعًا، الحدیث:۳۱،ص۳۷)

ग़ज़्वात में येह ख़त़रात और भी बढ़ते जाते थे, इस लिये सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की जां निसारी में और भी तरक़्क़ी होती जाती थी।

ग़ज़्वए ज़ातुर्रिक़ाअ़ में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मुशरिक की बीवी को गिरिफ़्तार किया। उस ने इन्तिक़ाम लेने के लिये क़सम खा ली कि जब तक अस्ह़ाबे मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में से किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ून से ज़मीन को रंगीन न कर लूंगा, चैन न लूंगा, इस लिये जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस हुए, उस ने तआ़क़ुब किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मन्ज़िल पर फ़रोकश हुए तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि कौन मेरी ह़िरासत की ज़िम्मेदारी अपने सर लेगा। मुहाजिरीन व अन्सार दोनों में से एक एक बहादुर इस शरफ़ को ह़ासिल करने के लिये उठे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि घाटी के दहाने पर जा कर मुतमक्किन हो जाएं (कि वोही कुफ़्फ़ार की कमीनगाह हो सकता था) दोनों बुज़ुर्ग वहां पहुंचे तो मुहाजिर बुज़ुर्ग सो गए और अन्सारी ने नमाज़ पढ़ना

www.dawateislami.net

शुरूअ़ की, मुशरिक आया और फ़ौरन ताड़ गया कि येह मुहाफ़िज़ और निगहबान हैं, तीन तीर मारे और तीनों के तीनों उन के जिस्म में तराज़ू हो गए। (سنن ابی داود، کتاب الطہارۃ، باب الوضوء من الدم، الحدیث:۱۹۸، ج۱، ص۹۹) लेकिन वोह अपनी जगह से न हटे।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए हुनैन के लिये निकले तो एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने शाम के वक़्त ख़बर दी कि मैं ने आगे जा कर पहाड़ के ऊपर से देखा तो मा'लूम हुवा कि क़बीलए हवाज़ुन के ज़न व मर्द चौपायों और मवेशियों को ले कर उमंड़ आए हैं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुराए और फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो कल येह मुसलमानों के लिये ग़नीमत होगा और फ़रमाया : आज मेरी पासबानी कौन करेगा ? हज़रते अनस बिन अबी मरसद ग़नवी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया : मैं या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इरशाद हुवा कि सुवार हो जाओ, वोह अपने घोड़े पर सुवार हो कर आए तो फ़रमाया कि उस घाटी के ऊपर चढ़ जाओ।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े फ़ज्र के लिये उठे, तो सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से फ़रमाया कि तुम्हें अपने शह सुवार की भी ख़बर है ? सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अ़र्ज़ की, हमें तो कुछ ख़बर नहीं, जमाअ़त क़ाइम हुई, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ाते जाते थे और मुड़ मुड़ के घाटी की त़रफ़ देखते जाते थे। नमाज़ अदा कर चुके तो फ़रमाया : लो मुबारक हो ! तुम्हारा शह सुवार आ गया। सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने घाटी के दरख़्तों के दरमियान से देखा तो वोह आ पहुंचे और ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर हो कर सलाम किया और अ़र्ज़ किया : मैं घाटी के बुलन्द तरीन ह़िस्से पर जहां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मामूर फ़रमाया था, चढ़ गया, सुब्ह़ को दोनों घाटियां भी देखीं तो एक जानदार भी नज़र न आया।

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कभी नीचे भी उतरे थे ? बोले सिर्फ़ नमाज़ और क़ज़ाए हाजत के लिये। इरशाद हुवा : तुम को जन्नत मिल चुकी, इस के बा'द अगर कोई अ़मल न करो तो कोई हरज नहीं। (سنن ابی داود،کتاب الجهاد،باب فی فضل الحرس فی سبیل الله عزوجل، الحدیث:۲۵۰۱،ج۳،ص۱٤)

एक गज़्वे में सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने एक टीले पर क़ियाम फ़रमाया। इस शिद्दत से सर्दी पड़ी कि बा'ज़ लोगों ने ज़मीन में गढ़ा खोदा और उस के अन्दर घुस कर ऊपर से ढाल डाल दी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह हालत देखी तो फ़रमाया कि आज की शब मेरी हिफ़ाज़त कौन करेगा ? मैं उस को दुआ़ दूंगा, एक अन्सारी ने अ़र्ज़ किया कि मैं ! या रसूलल्लाह ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़रीब बुला कर उन का नाम पूछा और देर तक दुआ़ देते रहे, ह़ज़रते अबू रैह़ाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह दुआ़ सुनी तो अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि मैं दूसरा निगहबान बनूंगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़रीब बुला कर नाम पूछा और उन को भी दुआ़ दी।

(المسندلامام احمد بن حنبل،حدیث أبی ریحانة،الحدیث:۱۷۲۱۳،ج٦،ص ۹۹)

आयते करीमा :

وَاللّٰہُ یَعۡصِمُکَ مِنَ النَّاسِ ط

(پ٦،المائدة:٦٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह तुम्हारी निगहबानी करेगा लोगों से।

नाज़िल होने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने लिये पासबान मुक़र्रर करना बन्द कर दिया।

ग़ज़्वए बद्र में जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले के लिये सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को त़लब किया तो ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बोले : हम वोह नहीं हैं

जो मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम की त़रह़ कह दें : "तुम और तुम्हारा ख़ुदा दोनों जाओ और लड़ो" बल्कि हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दाएं से, बाएं से, आगे से, पीछे से लड़ेंगे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह जां निसाराना फ़िक़्रे सुने तो चेहरए मुबारक फ़र्ते मसर्रत से चमक उठा। (صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قول اللہ تعالی، الحدیث:۳۹۵۲، ج۳، ص۵)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के जां निसाराना जज़्बात का ज़ुहूर सब से ज़ियादा ग़ज़्वए उहुद में हुवा, चुनान्चे इस ग़ज़्वे में किसी मक़ाम पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सिर्फ़ नव सह़ाबा (जिन में सात अन्सारी और दो क़ुरैशी या'नी ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) रह गए। इस ह़ालत में कुफ़्फ़ार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दफ़्अ़तन टूट पड़े, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन जां निसारों की त़रफ़ ख़ित़ाब कर के फ़रमाया कि जो इन अश्क़िया को मेरे पास से हटाएगा उस के लिये **जन्नत** है। एक अन्सारी फ़ौरन आगे बढ़े और लड़ कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान हो गए। इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार बराबर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला करते जाते और आप बार बार पुकारते जाते थे और एक एक अन्सारी बढ़ कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपनी जान क़ुरबान करता जाता था, यहां तक कि सातों बुज़ुर्ग **शहीद** हो गए।

(صحیح مسلم، کتاب الجهاد و السیر، باب غزوة احد، الحدیث:۱۷۸۹، ص۹۸۹)

ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सा'द (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की जां निसारी का वक़्त आया, तो ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने आप ने अपना तरकश बिखेर दिया और फ़रमाया कि तीर फेंको, मेरे मां-बाप तुम पर क़ुरबान।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب "اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا وَاللّٰهُ وَلِیُّهُمَا".....الخ، الحدیث:۴۰۵۵، ج۳، ص۳۷)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सिपर ले कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने खड़े हो गए और तीर चलाने लगे और इस शिद्दत से तीर अन्दाज़ी की, कि दो तीन कमानें टूट गईं, अगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गरदन उठा कर कुफ़्फ़ार की त़रफ़ देखते थे तो वोह कहते थे, मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान हों गरदन उठा कर न देखें, मबादा कोई तीर लग जाए मेरा सीना आप के सीने के सामने है।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب ”اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا وَاللّٰهُ وَلِیُّهُمَا“.....الخ،الحدیث:٤٠٦٤،ج٣،ص٣٨)

इस ग़ज़्वे में ह़ज़रते शमास बिन उस्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जां निसारी का येह आ़लम था कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाएं बाएं जिस त़रफ़ निगाह उठा कर देखते थे उन की तलवार चमकती हुई नज़र आती थी, उन्हों ने अपने आप को आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सिपर बना लिया, यहां तक कि इसी ह़ालत में शहीद हुए।

(الطبقات الکبری،تذکرۃ شماس بن عثمان رضی اللہ عنہ،ج٣، ص١٨٦)

इसी ग़ज़्वे में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तलाश में रवाना फ़रमाया, वोह लाशों के दरमियान उन को ढूंडने लगे, तो ह़ज़रते सा'द बिन रबीअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद बोल उठे, क्या काम है? जवाब दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे तुम्हारा ही पता लगाने के लिये भेजा है, बोले जाओ, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मेरा सलाम अ़र्ज़ कर दो और कह दो कि मुझे नेज़े के बारह ज़ख़्म लगे हैं और अपने क़बीले में ए'लान कर दो कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहीद हो

www.dawateislami.net

गए और उन में का एक मुतनफ़्फ़िस भी ज़िन्दा रहा तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उन का कोई उ़ज़्र क़ाबिले समाअ़त न होगा।

(الموطاالامام مالك، كتاب الجهاد،باب الترغيب فى الجهاد،الحديث:١٠٣٥، ج٢،ص٢٤)

न सिर्फ़ मर्द बल्कि औ़रतें भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जां निसारी की आरज़ू रखती थीं, ह़ज़रते तुलैब बिन उ़मैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इस्लाम लाए और अपनी मां अरवा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब को इस की ख़बर दी तो बोलीं कि तुम ने जिस शख़्स की मदद की वोह इस का सब से ज़ियादा मुस्तह़िक़ था, अगर मर्दों की त़रह़ हम भी इस्तित़ाअ़त रखतीं तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त करतीं और आप की त़रफ़ से लड़तीं। (الاستيعاب، تذكرة طليب بن عمير، ج٢،ص٣٢٣)

ख़िदमते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत को अपना सब से बड़ा शरफ़ ख़याल करते थे, इस लिये मुतअ़द्दद बुज़ुर्गों ने अपने आप को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर दिया था, ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इब्तिदाए बिअ़सत ही से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ानादारी के तमाम कारोबार का इन्तिज़ाम अपने ज़िम्मे ले लिया था और इस के लिये त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें और तक्लीफ़ें बरदाश्त करते थे, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शरफ़े ख़िदमत का छोड़ना कभी गवारा नहीं करते थे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मा'मूल था कि जब कोई ग़रीब मुसलमान ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर होता और उस के बदन पर कपड़े न होते तो ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हुक्म देते और वोह क़र्ज़ ले कर उस की ख़ूराक व लिबास का इन्तिज़ाम करते।

एक बार किसी मुशरिक से इस ग़रज़ के लिये क़र्ज़ लिया। लेकिन एक दिन उस ने देखा तो निहायत सख़्त लहजे में कहा : ओ ह़बशी ! तुझे मा'लूम है कि अब महीने में कितने दिन रह गए हैं ? सिर्फ़ चार दिन इसी अ़र्से में क़र्ज़ वुसूल कर लूं। वरना जिस त़रह़ तू पहले बकरियां चराया करता था इसी त़रह़ बकरियां चरवाऊंगा। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस से सख़्त रन्ज हुवा, इशा के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आए और कहा कि मुशरिक ने मुझे येह कुछ कहा है और वोह मुझे ज़लील कर रहा है, इजाज़त फ़रमाइये तो जब तक क़र्ज़ अदा न हो जाए मुसलमान क़बाइल में भाग कर पनाह लूं। घर वापस आए तो भागने का तमाम सामान भी कर लिया, लेकिन रज़्ज़ाक़े आ़लम ने सुब्ह़ तक ख़ुद क़र्ज़ के अदा करने का तमाम सामान कर दिया।

(سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیء والامارۃ، باب فی الامام یقبل ھدایاالمشرکین، الحدیث: ۳۰۵۵، ج۳، ص۲۳۰)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह शरफ़ ह़ासिल था, कि जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहीं जाते तो वोह पहले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जूते पहनाते, फिर आगे आगे अ़सा ले कर चलते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मजलिस में बैठना चाहते तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाउं से जूते निकालते, फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़सा देते, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठते, फिर इसी त़रह़ जूते पहनाते, आगे आगे अ़सा ले कर चलते और हुजरए मुबारका तक पहुंच जाते।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नहाते तो पर्दा करते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सोते तो बेदार करते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में जाते तो बिछोना, मिस्वाक, जूता और वुज़ू का पानी

www.dawateislami.net

उन के साथ होता, इस लिये वोह साहिबे सवादे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या'नी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मीरे सामान कहे जाते थे।

(الطبقات الکبری،عبدالله بن مسعود رضی الله عنه ، ج۳،ص۱۱۳)

हज़रते रबीआ़ अस्लमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी शबो रोज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मस्रूफ़ रहते। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले जाते तो वोह दरवाज़े पर बैठ जाते कि मबादा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई ज़रूरत पेश आ जाए।

एक बार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को निकाह़ करने का मश्वरा दिया। बोले : येह तअ़ल्लुक़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी में ख़लल अन्दाज़ होगा जिस को मैं पसन्द नहीं करता। लेकिन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बार बार के इस्रार से शादी करने पर रिज़ामन्द हो गए।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حدیث ربیعة بن کعب الاسلمی رضی اللّٰه عنه، الحدیث:۱٦۵۷۷،ج۵،ص۵٦۹)

हज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुस्तक़िल ख़िदमत गुज़ार थे, उन का काम येह था कि सफ़र में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी को हांकते हुए चलते थे। (مدارج النبوت،قسم پنجم،باب چهارم،ج۲،ص٤۹۵)

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बचपन ही से उन की वालिदा ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत के लिये वक़्फ़ कर दिया था। (الاصابة ،انس بن مالك بن النضر،ج۱،ص۲۷٦ملخصًا)

हज़रते सलमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا एक सहाबिया थीं, जिन्हों ने इस इस्तिक़्लाल के साथ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की,

www.dawateislami.net

कि उन को ख़ादिमए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लक़ब हासिल हुवा ।

(سنن ابی داود، کتاب الطب، باب فی الحجامة، الحدیث:۳۸۵۸،ج۴،ص۶)

हज़रते सफ़ीना हज़रते सलमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की वालिदा के गुलाम थे । इन्हों ने उन को इस शर्त़ पर आज़ाद करना चाहा कि वोह अपनी उ़म्र आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी में सर्फ़ कर दें, उन्हों ने कहा कि अगर आप येह शर्त़ न भी करतीं तब भी मैं ता नफ़्से वापसीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत से अ़लाह़्दा न होता ।

(سنن ابی داود، کتاب العتق، باب العتق علی الشرط،الحدیث:۳۹۳۲، ج۴،ص۳۱)

इन बुज़ुर्गों के इ़लावा अक्सर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहते थे उन को भी उ़मूमन शरफ़े ख़िदमत ह़ासिल हुवा करता था, एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये बैठे तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप के पीछे पानी का कूज़ा ले कर खड़े रहे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : उ़मर क्या है ? बोले कि वुज़ू का पानी, फ़रमाया कि हर वक़्त इस की ज़रूरत नहीं ।

(سنن ابی داود، کتاب الطھارة، باب فی الاستبراء ، الحدیث:۴۲،ج۱،ص۴۹)

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो हमेशा ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर रहते थे उन को अक्सर येह शरफ़ ह़ासिल होता कि जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये तशरीफ़ ले जाते तो वोह किसी त़श्त या कूज़े में पानी लाते और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वुज़ू करते । (سنن ابی داود،کتاب الطھارة ، باب الرجل یدلک یدہ بالأرض اذا استنجی، الحدیث:۴۵،ج۱،ص۵۰)

www.dawateislami.net

हज़रते अबू सम्ह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमेशा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में मस्रूफ़ रहते थे, चुनान्चे जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गुस्ल फ़रमाते तो वोह पीठ फेर कर खड़े हो जाते और आप उन की आड़ में नहा लेते। (اسدالغابة، تذكرة ابوالسمح مولى النبى صلى الله عليه وسلم، ج٦،ص١٦٦)

जब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिज्जतुल विदाअ़ में रमिये जमरा करना चाही तो ख़ुद्दामे बारगाह हज़रते उसामा और हज़रते बिलाल (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) साथ साथ थे, एक के हाथ में नाक़े की नकील थी और दूसरे बुज़ुर्ग आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर पर अपना कपड़ा ताने हुए चलते थे कि आफ़्ताब की शुआ़एं चेहरए मुबारक को गर्म निगाहों से न देखने पाएं !

(سنن ابی داود، كتاب المناسك، باب فى المحرم يظلل، الحديث ١٨٣٤،ج٢، ص٢٤٢)

मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ह़दीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तक मैं तुम को तुम्हारे बाप, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं, तुम लोग (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते और सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم को ईमान का येही दरजए कमाल हासिल था, चुनान्चे हज़रते जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिद जब ग़ज़्वए उहुद की शिर्कत के लिये रवाना हुए तो बेटे से कहा कि मैं ज़रूर शहीद होऊंगा और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सिवा मुझ को तुम से ज़ियादा कोई अ़ज़ीज़ नहीं है। तुम मेरा क़र्ज़ अदा करना और अपने भाइयों के साथ नेक सुलूक करना।

(اسدالغابة، تذكرة عبدالله بن عمروبن حرام رضى الله عنه، ج٣،ص٣٥٤)

इस के इ़लावा सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم और भी मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत का इज़्हार करते थे।

एक बार एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, जोशे मह़ब्बत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़मीस उलट दी, उस के अन्दर घुस गए, आप को चूमा, आप से लिपट गए।

(سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب مالایجوزمنعہ،الحدیث: ۱۶۶۹، ج۲،ص۱۷۷)

ह़ज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक शगुफ़्ता मिज़ाज सहाबी थे, एक रोज़ हंसी मज़ाक़ की बातें करते थे, कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के पहलू में एक छड़ी से कोंच दिया, उन्हों ने इस का इन्तिक़ाम लेना चाहा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर राज़ी हो गए, लेकिन उन्हों ने कहा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बदन पर कुरता है, ह़ालांकि मेरे बदन पर कुरता नहीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुरता भी उठा दिया, कुरते का उठाना था कि वोह आप से लिपट गए, करवट को बोसा दिया और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येही मक़्सूद था !

(سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب فی قبلۃ الجسد،الحدیث ۵۲۲۴، ج۴، ص۴۵۶)

जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में वफ़्दे अ़ब्दुल क़ैस ह़ाज़िर हुवा तो सुवारी से उतरने के साथ ही सब के सब दौड़े और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पाउं को बोसा दिया।

(المرجع السابق،باب فی قبلۃ الرجل، الحدیث:۵۲۲۵،ج۴،ص۴۵۶)

ह़ज़रते करदम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़िज्जतुल विदाअ़ में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम चूम लिये और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिसालत का इक़्रार किया और आप की बातें सुनते रहे।

(سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب تزویج من لم یولد، الحدیث:۲۱۰۳، ج۲، ص۳۴۰)

हज़रते ज़ाहर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बदवी सहाबी थे, जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निहायत महब्बत रखते थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हदिय्या भेजा करते थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उन से महब्बत रखते थे और फ़रमाया करते थे, कि ज़ाहर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हमारे बदवी हैं और हम उन के शहरी हैं।

एक दिन वोह अपना सौदा फ़रोख़्त कर रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीछे से आ कर उन को गोद में ले लिया, उन्हों ने कहा कौन है? छोड़ दो! लेकिन मुड़ कर देखा और मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं तो अपनी पुश्त को बार बार आप के सीने से चिमटाते थे और तस्कीन नहीं होती थी।

(شمائل ترمذی،باب ماجاء فی صفة مزاج رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیه وسلم، الحدیث:۲۳۸،ج۵،ص۵۴۵)

अ़रब में येह ख़याल था कि अगर किसी के पाउं सुन हो जाएं और वोह अपने महबूब को याद करे तो येह कैफ़िय्यत ज़ाइल हो जाती है। एक बार हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के पाउं सुन हो गए तो किसी ने कहा अपने महबूब को याद कर लो, बोले : या मुह़म्मदाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

(الأدب المفرد،باب مایقول الرجل اذاخدرت رجله ، الحدیث:۹۹۳،ص۲۶۱)

हज़रते उम्मे अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक सहाबिया थीं, जब वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करतीं तो फ़र्ते मसर्रत से कहतीं : "बि अबी" या'नी मेरे बाप आप पर क़ुरबान।

(سنن النسائی، کتاب الحیض و الاستحاضة، باب شهود الحیض العیدین ودعوة المسلمین، ج۱ص۱۹۳)

इ़ज़्ज़त और महब्बत की वज्ह से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आराम व आसाइश का

निहायत ख़याल रखते थे और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की किसी क़िस्म की तक्लीफ़ गवारा नहीं करते थे।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक सफ़र में थे जिस में एक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه निहायत एहतिमाम के साथ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये पानी ठन्डा करते थे।

(صحیح مسلم، کتاب الزھدو الرقائق،باب حدیث جابر الطویل، الحدیث٣٠٠٦، ص١٦٠٢)

एक औ़रत थी जो हमेशा मस्जिदे नबवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में झाड़ू दिया करती थी, उस का इन्तिक़ाल हो गया तो सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने उस को दफ़्न कर दिया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इत्तिलाअ़ न दी, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम हुवा तो फ़रमाया कि मुझे ख़बर क्यूं नहीं की ? बोले हम ने तक्लीफ़ देना गवारा न किया, इसी त़रह़ एक और सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का इन्तिक़ाल हो गया तो सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर न की और कहा कि अन्धेरी रात थी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ज़ह़मत होती।

(سنن ابن ماجه ،کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصلوة علی القبر، الحدیث: ١٥٢٨۔١٥٣٠،ج٢،ص٢٣٣۔٢٣٤)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जो चीज़ मह़बूब होती वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की वज्ह से सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को भी मह़बूब हो जाती। "कद्दू" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत मरग़ूब था इस लिये ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी इस को निहायत पसन्द फ़रमाते थे, चुनान्चे एक रोज़ कद्दू खा रहे थे तो खुद ब खुद बोल उठे, इस बिना पर कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तुझ से मह़ब्बत थी, तू मुझे किस क़दर मह़बूब है। (سنن الترمذی، کتاب الاطعمة، باب ماجاء فی اکل الدباء ، الحدیث: ١٨٥٦، ج٣، ص٣٣٦)

www.dawateislami.net

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत ने सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के नज़्दीक आप की हर चीज़ को महबूब बना दिया था, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मा'मूल था कि हर काम की इब्तिदा दाहनी जानिब से फ़रमाते ।

एक बार हज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के घर में हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दाईं और हज़रते ख़ालिद बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाईं जानिब बैठे हुए थे, हज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا दूध लाईं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पी कर हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से फ़रमाया कि हक़ तो तुम्हारा ही है लेकिन अगर ईसार करो तो ख़ालिद को दे सकते हो । अ़र्ज़ की : मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का झूटा किसी को नहीं दे सकता ।

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا اکل طعاما، الحدیث:٣٤٦٦، ج٥، ص٢٨٣)

एक मरतबा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पानी या दूध पी कर हज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को इनायत फ़रमाया । बोलीं : मैं अगर्चे रोज़े से हूं लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का झूटा वापस करना पसन्द नहीं करती हूं ।

(المسندللامام احمد بن حنبل،حدیث ام ھانیٔ بنت ابی طالب واسمھا فاختۃ،الحدیث:٢٦٩٥٨،ج١٠،ص٢٦٠)

एक बार एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़िदमते मुबारक में हाज़िर हुए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खाना खा रहे थे, उन को भी शरीक करना चाहा, वोह रोज़े से थे इस लिये उन को अफ़्सोस हुवा कि हाए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का खाना न खाया ।

(سنن ابن ماجه، کتاب الأطعمة،باب عرض الطعام، الحدیث:٣٢٩٩،ج٤، ص٢٦)

तक्लीफ़ की वज्ह से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रन्ज होता तो तमाम सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को रन्ज होता, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुशी होती तो तमाम सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी उस में शरीक होते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक महीने के लिये अज़्वाजे मुत़ह्हरात से अ़लाह़दगी इख़्तियार कर ली तो तमाम सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने मस्जिद में आ कर गिर्या व ज़ारी शुरूअ़ कर दी।

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق،باب فی الایلاء واعتزال النساء...الخ،الحدیث: ۱۴۷۹،ص۷۸۴)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मरज़ुल मौत में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इमाम बनाना चाहा तो ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने कहा कि वोह रक़ीक़ुल क़ल्ब आदमी हैं। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देखेंगे तो ख़ुद रोएंगे और तमाम सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी।

(سنن ابن ماجه، کتاب الصلوة،باب ماجاء فی صلاة رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی مرضہ، الحدیث:۱۲۳۲،ج۲،ص۴۷)

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल जमूह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक फ़य्याज़ सहाबी थे, इन को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस क़दर मह़ब्बत थी कि जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم निकाह़ करते तो वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से दा'वते वलीमा करते।

(اصابة، تذکرة عمروبن الجموح، ج۴،ص۵۰۷)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी ग़ज़्वे में तशरीफ़ ले जाते तो सहाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ फ़र्ते मह़ब्बत से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वापसी और सलामती के लिये नज़्रें मानती थीं।

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी ग़ज़्वे से वापस आए तो एक सहाबिया (जारिया सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने नज़्र मानी थी कि अगर

ख़ुदा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सहीह़ व सालिम वापस लाएगा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने दफ़ बजा के गाऊंगी ।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب ابی حفص عمر بن خطاب ، الحدیث: ۳۷۱۰، ج۵، ص۳۸۶)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मूमन फ़क़्रो फ़ाक़ा के साथ ज़िन्दगी बसर करते थे, सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के सामने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ानगी ज़िन्दगी का येह मन्ज़र आ जाता तो फ़र्ते़ मह़ब्बत से आबदीदा हो जाते ।

एक बार ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ दौलत सराए अक़्दस में तशरीफ़ ले गए तो देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चटाई पर लेटे हुए हैं, जिस पर कोई बिस्तर नहीं है । जिस्मे मुबारक पर तहबन्द के सिवा कुछ नहीं, पहलू में चटाई के निशानात पड़े हैं, तोशाख़ाने में मुठ्ठी भर जव के सिवा और कुछ नहीं, आंखों से बे साख़्ता आंसू निकल आए, इरशाद हुवा कि उ़मर क्यूं रोते हो ? बोले, क्यूं न रोऊं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ह़ालत है और क़ैसरो किस्रा दुन्या के मज़े उड़ा रहे हैं ! फ़रमाया : क्या तुम्हें येह पसन्द नहीं कि हमारे लिये आख़िरत और उन के लिये दुन्या हो ।

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب فی الایلاء واعتزال النساء و تخییرھن، الحدیث: ۱۴۷۹، ص۷۸۴)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ह़ालत याद आती थी तो आंखों से आंसू निकल पड़ते थे ।

एक बार ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के सामने चपातियां आईं तो देख कर रो पड़े कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी आंखों से कभी चपाती नहीं देखी ।

(سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة، باب الرقاق، الحدیث:۳۳۳۸، ج۴، ص۴۳)

एक दिन ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दोस्तों को गोश्त-रोटी खिलाया तो रो पड़े और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल भी हो गया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पेट भर जव की रोटी कभी नहीं खाई।

(شمائل ترمذی،باب ماجاء فی عیش النبی صلی اللہ علیہ وسلم ، الحدیث: ۳۷۸، ج۵،ص۵۷۵)

अगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी चीज़ से मुतमत्तेअ़ न होते तो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم उस से मुतमत्तेअ़ होना पसन्द न करते, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो आप के कफ़न के लिये एक हुल्ला ख़रीदा गया लेकिन बा'द में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दूसरे कपड़े में कफ़्नाए गए और येह हुल्ला ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ख़याल से ले लिया कि इस को अपने कफ़न के लिये मह़फ़ूज़ रखेंगे लेकिन फिर कहा कि जब ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी न हुई कि वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कफ़न हो, तो मेरा क्यूं हो? येह कह कर उस को फ़रोख़्त कर के उस की क़ीमत सदक़ा कर दी।

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب فی کفن المیت، الحدیث:۹۴۱،ص۴۶۹)

ग़ज़्वए तबूक सख़्त गर्मियों के ज़माने में वाकेअ़ हुवा था, ह़ज़रते अबू ख़ैसमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सह़ाबी थे जो इस ग़ज़्वे में शरीक न हो सके थे एक दिन वोह घर में आए तो देखा कि उन की अज़्वाज ने उन की आसाइश के लिये निहायत सामान किया है, बालाख़ाने पर छिड़काव किया है, पानी सर्द किया है, उ़म्दा खाना तय्यार किया है। लेकिन वोह तमाम सामाने ऐश देख कर बोले : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस लू और गर्मी में खुले हुए

मैदान में हों और अबू ख़ैसमा साया, सर्द पानी, उ़म्दा गिज़ा और ख़ूब सूरत औ़रतों के साथ लुत्फ़ उठाए ? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह इन्साफ़ नहीं है, मैं हरगिज़ बालाख़ाने पर न आऊंगा, चुनान्चे उसी वक़्त ज़ादे राह लिया और तबूक की त़रफ़ रवाना हो गए।

(اسدالغابة، تذكرة مالك بن قيس بن خيثمة، ج٥،ص٤٧)

विसाल के बा'द आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم याद आते तो सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم बे इख़्तियार रो पड़ते। एक दिन ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : और जुमे'रात का दिन किस क़दर सख़्त था, इस के बा'द इस क़दर रोए कि ज़मीन की कंकरियां आंसू से तर हो गईं। ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : जुमे'रात का दिन क्या ? बोले : इसी दिन आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़ुल मौत में शिद्दत आई थी।

(صحيح مسلم ، كتاب الوصية، باب ترك الوصية لمن ليس له شئ يوصى فيه ، الحديث:١٦٣٧،ص٨٨٨)

आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सोह़बतों की याद आती तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की आंखों से बे इख़्तियार आंसू जारी हो जाते। एक बार ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) अन्सार की एक मजलिस में गए तो देखा कि सब लोग रो रहे हैं, सबब पूछा तो बोले कि हम को सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस याद आ गई, अ़ल्लामा इब्ने ह़जर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीस की शर्ह़ में लिखते हैं कि येह वाक़िआ़ आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत के ज़माने का है, जिस में अन्सार को येह ख़ौफ़ पैदा हुवा कि अगर इस मरज़ में आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो आप की मजलिस मुयस्सर न होगी, इस लिये वोह इस ग़म में रो पड़े।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तज़्किरा फ़रमाते थे तो आंखों से आंसू जारी हो जाते थे। (الطبقات الکبری،تذکرۃ عبداللہ بن عمر بن خطاب، ج٤،ص١٢٧)

क़राबते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तअ़ल्लुक़ से सहाबए किराम अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की भी निहायत इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत करते थे। एक बार हज़रते इमाम बाक़र, हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की ख़िदमत में ह़िज्जतुल विदाअ़ की कैफ़िय्यत पूछने की ग़रज़ से ह़ाज़िर हुए। उस वक़्त अगर्चे वोह ब हैसिय्यते त़ालिबुल इ़ल्म और नियाज़ मन्दाना आए थे, ताहम हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने निहायत तपाक से उन का ख़ैर मक़्दम किया पहले उन के सर की त़रफ़ हाथ बढ़ाया और उन की घुंडी खोली, सीने पर हाथ रखा और मरह़बा कहा, फिर अस्ल मस्अले पर गुफ़्तगू करने की इजाज़त दी।

(سنن ابی داود،کتاب المناسك، باب صفة حجة النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:١٩٠٥،ج٢،ص٢٦٥)

एक बार एक इराक़ी ने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा कि मच्छर का ख़ून जो कपड़े पर लग जाता है इस का क्या हुक्म है ? बोले, इन को देखो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे को तो शहीद कर डाला और मच्छर के ख़ून का सुवाल करते हैं।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب الحسن و الحسین رضی اللہ عنہما، الحدیث:٣٧٩٥،ج٥،ص٤٢٧)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के चन्द रोज़ बा'द एक दिन हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक रास्ते से गुज़रे।

देखा कि ह़ज़रते ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खेल रहे हैं, उठा कर अपने कन्धे पर रख लिया और येह शे'र पढ़ा

وا ! بـابی شبه النبی ليـس شبيهـا بـعلی

मेरे बाप तुम पर कुरबान कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम शक्ल हो, अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुशाबे नहीं, ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم भी साथ थे वोह हंस पड़े ।

(المسند لامام احمد بن حنبل،مسند ابی بکرالصدیق ، الحدیث: ٤٠، ج١، ص٢٨)

एक दिन ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिले और कहा कि ज़रा पेट खोलिये जहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बोसा दिया था वहीं मैं भी बोसा दूंगा, चुनान्चे उन्हों ने पेट खोला और उन्हों ने वहीं बोसा दिया ।

(المسندلامام احمد بن حنبل،مسند ابی ھریرة، الحدیث:٩٥١٥،ج٣،ص٤١٥)

एक बार बहुत से लोग मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में बैठे हुए थे, इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ निकले और सलाम किया, सब ने सलाम का जवाब दिया, लेकिन ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश रहे, जब सब चुप हुए तो ब आवाज़े बुलन्द कहा اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ येह कह कर सब की त़रफ़ मुख़ात़िब हो कर कहा : मैं तुम्हें बताऊं कि ज़मीन के रहने वालों में, आस्मान वालों को सब से मह़बूब शख़्स कौन है ? येही जो जा रहा है, जंगे सिफ़्फ़ीन के बा'द से इन्हों ने मुझ से बातचीत नहीं की, अगर वोह मुझ से राज़ी हो जाएं तो येह मुझे सुर्ख़ ऊंटों से भी ज़ियादा मह़बूब है ।

(اسدالغابة،تذکرة عبداللہ بن عمرو بن العاص،ج٣،ص٣٥٨)

हज़रते अबुल तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के बहुत बड़े ह़ामी थे, ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के इन्तिक़ाल के बा'द एक बार ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से पूछा कि तुम्हारे दोस्त अबुल ह़सन के ग़म में तुम्हारा क्या ह़ाल है? बोले : मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के ग़म में जो ह़ाल उन की मां का था।

(اسدالغابۃ، تذکرۃ ابو طفیل عامر بن واثلۃ،ج٦،ص١٩٢)

ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विरासत का मुत़ालबा किया और ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत के हुक़ूक़ जताए तो ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस मौक़अ़ पर जो तक़रीर की उस में ख़ास तौर पर अह्ले बैत की मह़ब्बत का बयान किया और कहा कि उस ज़ात की क़सम जिस के हाथ में मेरी जान है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ मुझे अपनी क़राबत से ज़ियादा है। उन लोगों को भी इन के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखने का हुक्म दिया।

(صحیح البخاری،کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب قرابۃ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم، الحدیث:٣٧١٢،ج٢،ص٥٣٨)

एक बार ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मुआ़मले में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्रार किया और कहा कि या अमीरल मोमिनीन! अगर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के चचा आप के पास मुसलमान हो कर आते तो आप क्या करते? बोले : उन के साथ ह़ुस्ने सुलूक करता। ह़ज़रते अ़ब्बास ने कहा : तो फिर मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चचा हूं, बोले : ऐ अबुल फ़ज़्ल! आप की क्या राए है, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम! आप के बाप मुझे अपने बाप से ज़ियादा मह़बूब हैं, क्यूंकि मुझे मा'लूम है कि

www.dawateislami.net

वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मेरे बाप से ज़ियादा महबूब थे और मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत को अपनी महब्बत पर तरजीह देता हूं।

हज़रते अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो बनू हाशिम ने अलग और हज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अलग अन्सार की तमाम आबादियों में इस का ए'लान करवा दिया। लोग इस कस्रत से जम्अ़ हुए कि कोई शख़्स ताबूत (जनाज़ए मुबारक) के पास नहीं जा सकता था, खुद बनू हाशिम के लोगों ने इस त़रह़ घेर लिया कि हज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिपाहियों के ज़रीए़ से उन को हटाया। (الطبقات الکبری،تذکرۃ عباس بن عبدالمطلب،ج٤،ص٢٣)

अ़रब में जब क़ह़त़ पड़ता था तो हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के वसीले से बारिश की दुआ़ मांगते थे और कहते थे कि खुदावन्दा! हम पहले अपने पैग़म्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वसीला बनाते थे और तू पानी बरसाता था और अब अपने पैग़म्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसीला बनाते हैं, हमारे लिये पानी बरसा।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی ، باب ذکر العباس بن عبدالمطلب رضی اللہ عنہ، الحدیث: ٣٧١٠،ج٢،ص٥٣٧)

एक बार हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह अल अ़दविया को बुला भेजा, वोह आईं तो देखा कि आ़तिका बिन्ते उसैद पहले से मौजूद हैं, कुछ देर के बा'द हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों को एक एक चादर दी, लेकिन शिफ़ा की चादर कम दरजे की थी, इस लिये उन्हों ने कहा कि मैं आ़तिका से ज़ियादा क़दीमुल इस्लाम और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चचाज़ाद बहन हूं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे ख़ास इस ग़रज़ के लिये बुलाया था और

www.dawateislami.net

आतिका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तो यूंही आ गई थीं। बोले : मैं ने येह चादर तुम्हें ही देने के लिये रखी थी, लेकिन जब आतिका आ गईं तो मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़राबत का लिहाज़ करना पड़ा।

(الاصابة فی تمییز الصحابة، کتاب النساء،تذکرة عاتکة بنت اسید، الحدیث: ١١٤٥٠، ج٨،ص٢٢٦۔٢٢٧)

हज़रते हिन्द बिन अबी हाला हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बेटे थे, सिर्फ़ इतने तअ़ल्लुक़ से कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की परवरिश फ़रमाई थी, जब उन के बेटे का बसरा में ब मरज़े ताऊ़न इन्तिक़ाल हुवा तो पहले उन का जनाज़ा निहायत कस्म पुरसी की ह़ालत में उठाया गया, लेकिन इस ह़ालत को देख कर एक औ़रत ने पुकारा :

واهند بن هنداه وابن ربيب رسول الله

(हाए हिन्द बिन हिन्द हाए परवर्दए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द)

येह सुनना था कि लोग अपने मुर्दों की तज्हीज़ो तक्फ़ीन छोड़ कर उन के जनाज़े में शरीक हो गए।

(الاستیعاب فی معرفة الصحابة،باب هند، تذکرة هندبن هالة التمیمی، ج٤،ص١٠٦)

क़बीलए बनू ज़हरा में चूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ननिहाल थी, इस लिये ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस क़बीले के पासे ख़ातिर का निहायत लिहाज़ करती थीं, चुनान्चे वोह ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से ख़फ़ा हुईं तो उन्हों ने इसी क़बीले के चन्द बुज़ुर्गों को शफ़ीअ़ बनाया।

(صحیح البخاری،کتاب المناقب، باب مناقب قریش، الحدیث:٣٥٠٣، ج٢،ص٤٧٥)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिन लोगों से मह़ब्बत रखते थे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم भी उन की निहायत तौक़ीर व इ़ज़्ज़त करते थे।

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का अ़तिय्या साढ़े तीन हज़ार और अपने बेटे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का तीन हज़ार मुक़र्रर फ़रमाया, तो उन्हों ने ए'तिराज़ किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुझ पर क्यूं तरजीह़ दी, वोह तो किसी जंग में मुझ से आगे न रहे। बोले : उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बाप तुम्हारे बाप से ज़ियादा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मह़बूब थे और उसामा हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुम से ज़ियादा मह़बूब थे, इस लिये मैं ने अपने मह़बूब पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मह़बूब को तरजीह़ दी।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب زید بن حارثۃ، الحدیث:۳۸۳۹،ج۵،ص۴۴۵)

एक बार ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने देखा कि एक शख़्स मस्जिद के गोशे में दामन घसीटता हुवा फिर रहा है, बोले : येह कौन शख़्स है? एक आदमी ने कहा : आप इन को नहीं पहचानते ? येह मुह़म्मद बिन उसामा हैं, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने येह सुन कर गरदन झुका ली और ज़मीन पर हाथ मार कर कहा : अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन को देखते तो इन से मह़ब्बत फ़रमाते।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب ذکر اسامۃ بن زید، الحدیث:۳۷۳۴،ج۲،ص۵۴۳)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ न सिर्फ़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करते थे बल्कि आप ने जिन ग़ुलामों को आज़ाद कर के अपना मौला (आज़ाद कर्दा ग़ुलाम) बना लिया था उन के साथ भी निहायत लुत़्फ़ो मुदारात के साथ पेश आते थे।

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिन गुलामों के नाक कान काट लिये गए हैं या उन को जला दिया गया है, वोह आज़ाद हैं और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मौला हैं। लोग येह सुन कर एक ख़्वाजा सरा को लाए जिस का नाम सन्दर था, आप ने उस को आज़ाद कर दिया, आप की वफ़ात के बा'द वोह ह़ज़रते अबू बक्र और ह़ज़रते उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ज़मानए ख़िलाफ़त में आता तो दोनों बुज़ुर्ग उस के साथ उ़म्दा सुलूक करते, उस ने एक बार मिस्र जाना चाहा तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़त़ लिख दिया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत के मुवाफ़िक़ इस के साथ उ़म्दा सुलूक करना।

(المسندلامام احمد بن حنبل، حدیث عبداللہ بن عمرو بن العاص، الحدیث : ٦٧٢٢، ج٢، ص٦٠٣)

दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की और उस के अह्लो इयाल की बैतुल माल से कफ़ालत करते थे और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गवर्नरे मिस्र को लिखा था कि इस को कुछ ज़मीन दे दी जाए। (المرجع السابق)

लेकिन इस रिवायत में उस के नाम की तस्रीह़ नहीं, मुमकिन है येह कोई दूसरा गुलाम हो।

शौक़े ज़ियारते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के दिल रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शौक़े ज़ियारत से लबरेज़ थे। इस लिये जब ज़ियारत का वक़्त क़रीब आता तो येह जज़्बा और भी उभर जाता और इस का इज़्हार मुक़द्दस नग़्मासन्जी की सूरत में होता।

हज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब अपने रुफ़क़ा के साथ मदीने पहुंचे तो सब के सब हम आहंग हो कर ज़बाने शौक़ से येह रज्ज़ पढ़ने लगे

غدا نلقى الاحبه محمدا وحزبه

हम कल अपने दोस्तों या'नी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के गुरौह से मिलेंगे।

मुसाफ़ह़े की रस्म सब से पहले इन ही लोगों ने ईजाद की जो इज़्हारे शौक़े महब्बत का एक लत़ीफ़ ज़रीआ़ है।

दरबारे नबुव्वत की ग़ैर ह़ाज़िरी सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के नज़्दीक बड़ा जुर्म था। एक दिन हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ने पूछा कि "तुम ने कब से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नहीं की?" बोले : "इतने दिनों से।" इस पर उन्हों ने उन को बुरा भला कहा तो बोले : छोड़ो, मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जाता हूं, उन के साथ नमाज़े मग़रिब पढ़ूंगा और अपने और तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार की दरख़्वास्त करूंगा।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب الحسن و الحسین رضی اللہ عنہما، الحدیث:۳۸۰۶،ج۵،ص۴۳۱)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द येही शौक़ था जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ार की त़रफ़ खींच लाता था। एक बार ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए और मज़ारे पाक पर अपने रुख़्सार रख दिये। मरवान ने देखा तो कहा : कुछ ख़बर है, येह क्या करते हो? फ़रमाया : मैं ईंट पथ्थर के पास नहीं आया हूं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में आया हूं।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ایوب انصاری، الحدیث:۲۳۶۴۶، ج۹، ص۱۴۸)

www.dawateislami.net

शौक़े दीदारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार ईमान का बाइस होता था इस बिना पर सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم इस के निहायत मुश्ताक़ रहते थे। जब सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हिजरत कर के मदीने तशरीफ़ लाए तो तिश्नगाने दीदार में जिन लोगों ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं देखा था वोह आप को पहचान न सके लेकिन जब धूप आई और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप के ऊपर अपनी चादर का साया किया, तो सब ने उस साए में आफ़्ताबे नबुव्वत की दीद से अपना ईमान ताज़ा किया।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الأنصار، باب ھجرۃ النبی صلی اللہ علیہ وسلم واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث:٣٩٠٦،ج٢،ص٥٩٣)

हिज्जतुल विदाअ़ में मुश्ताक़ाने दीदार ने आफ़्ताबे नबुव्वत को हाले की त़रह़ अपने ह़ल्क़े में ले लिया, बद्दू आ कर शरबते दीदार से सेराब होते थे और कहते थे : "येह मुबारक चेहरा है।"

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मरज़ुल मौत के ज़माने में जब हुजरए मुबारका का पर्दा उठाया और सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم को हालते नमाज़ में मुलाह़ज़ा फ़रमा कर मुस्कुराए तो उस आख़िरी दीदार से सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم पर मसर्रत की वोह कैफ़िय्यत त़ारी हुई कि सोचा नमाज़ ही तोड़ दें और इस जमाले बे मिसाल का आज जी भर कर नज़ारा कर लें। हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं :

كأن وجهه ورقة مصحف مارأينا منظرا كان اعجب الينا من وجه النبى صلى الله عليه وسلم حين وضح لنا

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب اھل العلم والفضل احق بالامامۃ، الحدیث:٦٨١،ج١،ص٢٤٣)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरा कुरआन के वरक़ की त़रह़ साफ़ था, हम ने कोई मन्ज़र ऐसा न देखा जो हमें रुखे़ अन्वर के इस मन्ज़र से ज़ियादा खुश गवार हो जब चेहरए मुबारक हम पर नमूदार हुवा ।

बा'ज़ सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को आंखें सिर्फ़ इस लिये अज़ीज़ थीं कि इन के ज़रीए़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार होता था । लेकिन जब खुदा عَزَّوَجَلَّ ने उन को इस शरफ़ से मह़रूम कर दिया तो, वोह आंखों से भी बे नियाज़ हो गए ।

एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखें जाती रहीं, लोग इयादत को आए तो उन्हों ने कहा कि इन से मक़्सूद तो सिर्फ़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार था । लेकिन जब आप का विसाल हो गया, तो अगर मेरे इवज़ तबाला की हिरनियां अन्धी हो जाएं और मेरी बीनाई लौट आए तब भी मुझे पसन्द नहीं ।

(الادب المفرد، باب العیادۃ من الرمد،الحدیث:٥٤٣،ص١٥٣)

शौके़ सोह़बते रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैज़ एक ऐसी दौलते जाविदानी था जिस पर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم हर क़िस्म के दुन्यवी मालो मताअ़ को कुरबान कर देते थे ।

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक मुहिम पर भेजना चाहता हूं, खुदा عَزَّوَجَلَّ माले ग़नीमत देगा तो तुम को मो'तद बेह ह़िस्सा दूंगा । बोले : मैं माल के लिये मुसलमान नहीं हुवा सिर्फ़ इस लिये इस्लाम लाया हूं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैज़े सोह़बत ह़ासिल हो । (الادب المفرد، باب المال الصالح للمرء الصالح،الحدیث:٣٠٢،ص٩٦)

www.dawateislami.net

जो सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात से आज़ाद हो जाते थे वोह सिर्फ़ आस्तानए नबुव्वत से वाबस्तगी पैदा कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत से फ़ैज़याब होते थे। ह़ज़रते क़ैलह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا बेवा हो गईं तो बच्चों को उन के चचा ने ले लिया। अब वोह तमाम दुन्यवी झगड़ों से आज़ाद हो कर एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के साथ ख़िदमते मुबारक में ह़ाज़िर हुईं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'लीमात व तल्क़ीनात से उ़म्र भर फ़ाएदा उठाती रहीं। (الطبقات الکبری،تذکرۃ قیلۃ بنت مخرمۃ،ج۸،ص۲۴۰)

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ किसी क़दर दूर मक़ामे आ़लिया में रहते थे इस लिये रोज़ाना आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैज़े सोह़बत से मुतमत्तेअ़ न हो सकते थे। ताहम येह मा'मूल कर लिया था कि एक रोज़ ख़ुद आते थे और दूसरे रोज़ अपने इस्लामी भाई ह़ज़रते उ़त्बान बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को भेजते थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'लीमात व इरशादात से मह़रूम न रहने पाएं। (صحیح البخاری،کتاب العلم، باب التناوب فی العلم، الحدیث:۸۹، ج۱، ص۵۰)

दुन्या में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़ैज़े सोह़बत उठाने के साथ बा'ज़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने ख़्वाहिश की, कि आख़िरत में भी येह दौलते जाविदानी नसीब हो, ह़ज़रते रबीआ़ बिन का'ब और ह़ज़रते सौबान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) ने येही तमन्ना ज़ाहिर की और मुज़्दए जां फ़िज़ा से भी सरफ़राज़ हुए।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत का असर

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم चूंकि निहायत ख़ुलूस व सफ़ाए क़ल्ब के साथ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इरशाद व हिदायत से फ़ैज़याब होने के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में

www.dawateislami.net

हाज़िर होते थे । इस लिये उन पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत का असर शिद्दत से पड़ता था, एक बार हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अर्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह क्या बात है कि जब हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास होते हैं तो हमारे दिल नर्म हो जाते हैं, ज़ोह्द व आख़िरत का ख़याल ग़ालिब हो जाता है, फिर जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से चले जाते हैं अहलो इयाल से मिलते जुलते हैं और बच्चों के पास जाते हैं तो वोह बात बाक़ी नहीं रहती ।" इरशाद हुवा कि अगर येही हालत क़ाइम रहती तो फ़िरिश्ते ख़ुद तुम्हारे घरों में तुम्हारी ज़ियारत को आते ।

(سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ماجاء فی صفة الجنةونعیمها، الحدیث: ٢٥٣٤، ج٤،ص٢٣٦)

एक बार हज़रते हन्ज़ला उसैदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से रोते हुए गुज़रे, दरयाफ़्ते हाल पर बोले "हन्ज़ला मुनाफ़िक़ हो गया, हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास होते हैं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नत व दोज़ख़ का ज़िक्र फ़रमाते हैं तो हमारे सामने उन की तस्वीर खिंच जाती है । फिर घर में आ कर अहलो इयाल से मिलते हैं और खेती बाड़ी के काम में मसरूफ़ होते हैं तो उस हालत को भूल जाते हैं ।" हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : हमारा भी येही हाल होता है, चलो ख़ुद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास चलें, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और वाक़िआ बयान किया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर वोह हालत क़ाइम रहती तो फ़िरिश्ते तुम्हारी मजलिसों में, तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में आ कर तुम से मुसाफ़हा करते । इस हालत का हमेशा क़ाइम रहना ज़रूरी नहीं ।

(سنن الترمذی، کتاب صفة الجنة،باب ١٢٤،الحدیث:٢٥٢٢، ج٤،ص٢٣٠)

www.dawateislami.net

इस्तिक़्बाले रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत की तो आप के साथ त़बलो अ़लम, लाव लश्कर ख़ैमा व ख़रगाह कुछ न था, सिर्फ़ सुवारी की दो ऊंटनियां थीं और साथ में एक जां निसार रफ़ीक़े सफ़र था लेकिन येह बे सरो सामान क़ाफ़िला जिस दिन मदीने पहुंचा, मदीना मसर्रत कदा बन गया। औ़रतों, बच्चों और लौंडियों की ज़बान पर येह फ़िक़रा था, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आए ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आए ! हिजरत की ख़बर पहले से मदीने में पहुंच गई थी इस लिये तमाम मुसलमान सुब्ह़ तड़के घर से निकल कर मदीने के बाहर इस्तिक़्बाल के लिये जम्अ़ होते, दोपहर तक इन्तिज़ार कर के वापस चले जाते।

एक दिन ह़स्बे मा'मूल लोग इन्तिज़ार कर के चले गए तो एक यहूदी ने क़ल्ए़ से देख कर बा आवाज़े बुलन्द पुकारा कि अह्ले अ़रब ! लो तुम्हारे साह़िब आ पहुंचे, तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم दफ़्अ़तन उमंड पड़े और हथियारों से सज सज कर घरों से निकल आए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुबा में तशरीफ़ लाए और ख़ानदाने बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के यहां उतरे तो तमाम ख़ानदान ने اَللّٰہُ اَکْبَر का ना'रा लगाया। अन्सार हर त़रफ़ से आते और जोशे अ़क़ीदत के साथ सलाम अ़र्ज़ करते।

(الطبقات الکبری،تذکرۃ خروج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم وابی بکر الی المدینۃ للھجرۃ ،ج١،ص١٨٠)

अन्सार में जिन लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अब तक नहीं देखा था, वोह शौक़े दीदार में बेताब थे। लेकिन आप को पहचान नहीं सकते थे। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने धूप से बचाने के लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सर पर चादर तानी, तो सब को उस के साए में आफ़्ताबे नबुव्वत नज़र आया।

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुबा से मदीने की ख़ास आबादी की त़रफ़ चले तो जां निसारों का झुरमट साथ था। एक मक़ाम पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ठहर गए और अन्सार को त़लब फ़रमाया। सब लोग ह़ाज़िर हुए, सलाम अ़र्ज़ किया और कहा कि सुवार हों, कोई ख़त़रा नहीं। हम लोग फ़रमां बरदारी के लिये ह़ाज़िर हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रवाना हुए और अन्सार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गिर्दा गिर्द हथियार बांधे हुए थे।

कुबा से मदीने तक दो रूया जां निसारों की सफ़ें थीं। राह में अन्सार के ख़ानदान आते तो हर क़बीला सामने आ कर अ़र्ज़ करता कि हु़ज़ूर येह घर है, येह माल है। कौकबे नबुव्वत शह्र के मुत्तसिल पहुंचा तो एक आ़म ग़ुल पड़ गया। लोग बालाख़ाने से झांक झांक कर देखते थे और कहते थे : "रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आए, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आए।"

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبی واصحابه الی المدینة، الحدیث:۳۹۱۱، ج۲، ص۵۹۶)

पर्दा नशीन ख़वातीन जोशे मसर्रत में येह तराना गाती थीं

طلع البدر علينا من ثنيات الوداع

وجب الشكر علينا ما دعا لله داع

"कोहे वदाअ़ की घाटियों के बुर्ज से बद्रे कामिल तुलूअ़ हुवा है। जब तक दुआ़ करने वाले दुआ़ करें हम पर शुक्र वाजिब है।"

जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के दरवाज़े पर बैठ गई तो क़बीलए बनू नज्जार की बच्चियां दफ़ बजा बजा कर येह शे'र गाने लगीं :

نحن جوار من بنی النجار يا حبذا محمد من جار

www.dawateislami.net

"हम ख़ानदाने नज्जार की लड़कियां हैं, मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कैसे अच्छे हमसाया हैं।"

(وفاء الوفا، الباب الثالث،الفصل الحادی عشر،ج ۱،ص ۲٦۲)

ज़ियाफ़ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अगर खुश क़िस्मती से कभी सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियाफ़त व मेज़बानी का शरफ़ ह़ासिल हो जाता तो वोह निहायत इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत और अदबो एह़तिराम के साथ इस फ़र्ज़ को बजा लाते थे।

एक बार एक अन्सारी ने ख़िदमते मुबारक में गुज़ारिश की, कि निहायत लह़ीम शह़ीम आदमी हूं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ में शरीक नहीं हो सकता, आप मेरे मकान पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ अदा फ़रमाइये ताकि मैं इस त़रह़ नमाज़ पढ़ा करूं, उन्हों ने पहले खाना भी तय्यार कर रखा था, चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई। (سنن ابی داود، ،الحدیث:٦٥٧، ج ۱، ص ٢٦٣)

एक रोज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते उ़मर और ह़ज़रते अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के साथ ह़ज़रते अबू हैसम बिन तैहान अल अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मकान पर तशरीफ़ ले गए, वोह बाहर गए हुए थे। आए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से लिपट गए और क़ुरबान होने लगे, फिर सब को बाग़ में ले गए, फ़र्श बिछाया और खजूरें तोड़ कर आप के सामने रख दीं कि खुद दस्ते मुबारक से चुन चुन कर तनावुल फ़रमाएं, इस के बा'द उठे और बकरी ज़ब्ह़ की और सब ने ख़ूब सेर हो कर खाना खाया।

(سنن الترمذی، کتاب الزهد،باب ماجاء فی معیشة اصحاب النبی صلی الله علیه وسلم، الحدیث:۳۲۷٦،ج٤،ص١٦٣)

एक रोज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर तशरीफ़ ले जाने का वा'दा किया, उन्हों ने निहायत एहतिमाम से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दा'वत का सामान किया। और ज़ौजा से कहा : देखो, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आने वाले हैं तुम्हारी सूरत नज़र न आए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई तक्लीफ़ न देना, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बातचीत न करना। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो बिस्तर बिछाया, तकिया लगाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मसरूफ़े ख़्वाबे इस्तिराहत हुए तो गुलाम से कहा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जागने से पेशतर बकरी के इस बच्चे को ज़ब्ह कर के पका लो, ऐसा न हो कि आप मुंह हाथ धोने के साथ ही रवाना हो जाएं।

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हो कर मुंह हाथ धोने से फ़ारिग़ हुए तो फ़ौरन दस्तर ख़्वान सामने आया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खाना खाते थे और क़बीलए बनू सलमह के तमाम लोग दूर ही दूर से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार से मुशर्रफ़ होते थे, कि क़रीब आते तो शायद आप को तक्लीफ़ होती, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खाने से फ़ारिग़ हो कर रवाना हुए, तो उन की ज़ौजा ने पर्दे में से अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर और मेरे शोहर पर नुज़ूले रह़मत की दुआ़ करते जाइये, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ तुम पर और तुम्हारे शोहर पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए।

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर तशरीफ़ ले गए। उन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गुस्ल कराया। नहाने के बा'द ज़ा'फ़रानी रंग की चादर ओढ़ाई, फिर खाना खिलाया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रुख़्सत हुए तो सुवारी हाज़िर की और अपने बेटे को साथ कर दिया कि घर तक पहुंचा आएं।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، با ب کم مرة یسلم الرجل فی الاستیذان، الحدیث: ٥١٨٥، ج٤، ص٤٤٥)

कभी कभी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुद किसी चीज़ की ख़्वाहिश ज़ाहिर फ़रमाते और सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم उस को तय्यार कर के पेश करते, एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : काश मेरे पास गेहूं की सफ़ेद रोटी घी और दूध में चिपड़ी हुई होती, एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन उठे और तय्यार करा के लाए।

(سنن ابی داود، کتاب الاطعمة ، باب فی الجمع بین لونین من الطعام،الحدیث: ٣٨١٨، ج٣، ص٥٠٣)

बा'ज़ सहाबियात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ खुद कोई नई चीज़ पका कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करती थीं। एक बार हज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आटा छाना और उस की चपातियां तय्यार कर के, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कीं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह क्या है ? बोलीं हमारे मुल्क में इस का रवाज है मैं ने चाहा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये भी इस क़िस्म की चपातियां तय्यार करूं। लेकिन आप ने कमाले ज़ोहदो वरअ़ से फ़रमाया कि आटे में चोकर मिला लो फिर गूंधो।

(سنن ابن ماجه، کتاب الاطعمة ، باب الحوّاری، الحدیث:٣٣٣٦، ج٤، ص٤٢)

www.dawateislami.net

ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कुरआने मजीद के मवाइज़ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कलिमाते त़य्यिबा ने अगर्चे अ़ह्दे सह़ाबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم में शाइ़री के दफ़्तर पर पानी फेर दिया था। ताहम बुलबुलाने बाग़े कुद्स आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ में कभी कभी ज़मज़मा ख़्वां हो जाते थे और चूंकि येह अश्आ़र सच्चे दिल से निकलते थे और सच्ची ता'रीफ़ पर मुश्तमिल होते थे, इस लिये दिलों पर असर डालते थे। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा, ह़ज़रते का'ब बिन ज़ुबैर और ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم का येह ख़ास मश्ग़ला था। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के चन्द मदह़िया अश्आ़र बुख़ारी में मज़्कूर हैं :

وفينا رسول الله يتلو كتاب

اذا انشق معروف من الفجر ساطع

"या'नी हम में खुदा عَزَّوَجَلَّ का पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है जब सुब्ह़ नमूदार होती है तो खुदा عَزَّوَجَلَّ की किताब की तिलावत करता है।"

ارانا الهدى بعد العمى فقلوبنا   به موقنات ان ماقال واقع

"गुमराही के बा'द इस ने हम को राहे रास्त दिखाई, इस लिये हमारे दिलों को यक़ीन है कि जो कुछ इस ने फ़रमाया वोह ज़रूर हो कर रहेगा।"

يبيت يجافى جنبه عن فراشهاذا   ستثقلت بالمشركين المضاجع

"वोह रातों को शब बेदारी करता है, ह़ालांकि उस वक़्त मुशरिकीन गहरी नींद सोते हैं।"

(صحيح البخارى، كتاب التهجد،باب فضل من تعارمن الليل فصلى،الحديث: ١١٥٥،ج١،ص٣٩١)

हज़रते का'ब बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपना मश्हूर क़सीदा "بانت سعاد" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने पढ़ा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को सुन कर सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से फ़रमाया कि इस को सुनो !

ग़ज़वए तबूक से वापसी पर हज़रते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ना'त सुनाने की इजाज़त त़लब की और उन्हों ने पेश की। इस त़रह़ बहुत से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने ना'ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कही, जिन में से बहुत सी ना'तें "अल मदीहुन्नबवी" में मुन्दरिज हैं।

रिज़ाए रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी से सख़्त घबराते थे और इस से पनाह मांगते थे।

एक बार किसी ने हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के आबाओ अजदाद में किसी को बुरा भला कहा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई तो फ़रमाया कि "अ़ब्बास मुझ से हैं और मैं अ़ब्बास से हूं, हमारे मुर्दों को बुरा भला न कहो जिस से हमारे ज़िन्दों के दिल दुखें।" येह सुन कर सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने कहा : हम आप की नाराज़ी से पनाह मांगते हैं, हमारे लिये इस्तिग़फ़ार कीजिये।

(سنن النسائی، کتاب القسامۃ، باب القود من اللطمۃ، ج٤، الجزء الثامن، ص٣٣)

एक बार किसी ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप के रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ पूछा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ना गवार गुज़रा। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह ह़ालत देखी तो कहा :

رضينا بالله ربا وبالاسلام دينا وبمحمد نبيا ، نعوذ بالله من غضب الله وغضب رسوله

तर्जमा : "हम ने खुदा عَزَّوَجَلَّ को अपना परवर दगार, इस्लाम को अपना दीन और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपना पैग़म्बर माना है और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और ख़ुदा के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ज़ब से पनाह मांगते हैं।"

इस फ़िक़रे को बार बार दोहराते रहे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी ख़त्म हो गई।

(سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب فی صوم الدھر،الحدیث:٢٤٢٥، ج٢، ص٤٧٣)

इस लिये अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी ना गवार वाक़िए से कबीदा ख़ातिर हो जाते थे तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم हर मुम्किन तदबीर से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करना चाहते थे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ से ईला किया तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करना चाहा और दरे दौलत पर तशरीफ़ ले गए। दरबान ने रोक लिया। समझे कि शायद हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह ख़याल है कि ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ख़ातिर आए हैं। इस लिये दरबान से कहा कि अगर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह ख़याल है तो कह दो कि खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप हुक्म दें तो ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की गरदन उड़ा दूं।

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले आ चुके थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हंसाने के लिये कहा अगर बिन्ते ख़ारिजा (ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा) मुझ से नानो नफ़क़ा त़लब करतीं तो मैं उठ के उन की गरदन तोड़ देता, आप हंस पड़े। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की

त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : येह लोग मुझ से नफ़क़ा ही तो मांग रही हैं। दोनों बुज़ुर्ग उठे और ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की गरदन तोड़नी चाही और कहा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से वोह चीज़ मांगती हो जो (इस वक़्त) आप के पास (मौजूद) नहीं है।

(صحیح مسلم، کتاب الطلاق، باب بیان أن تخییر امرأته لایکون طلاقا الا بالنیة، الحدیث ١٤٧٨، ص ٧٨٣)

ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़त्ए़ कलाम कर लिया और तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को भी येही हुक्म दिया, तो उन को सब से ज़ियादा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी की फ़िक्र थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ के बा'द थोड़ी देर तक मस्जिद में बैठा करते थे, इस ह़ालत में वोह आते और सलाम करते और दिल में कहते कि लबहाए मुबारक को सलाम के जवाब में ह़रकत हुई या नहीं ? फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के मुत्तसिल नमाज़ पढ़ते और कनअंखियों से आप की त़रफ़ देखते जाते।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث کعب بن مالک.....الخ، الحدیث: ٤٤١٨، ج٣، ص١٤٧)

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़िज्जतुल विदाअ़ के लिये तशरीफ़ ले गए तो तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ साथ थीं, सूए इत्तिफ़ाक़ से रास्ते में ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ऊंट थक कर बैठ गया, वोह रोने लगीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़बर हुई तो ख़ुद तशरीफ़ लाए और दस्ते मुबारक से उन के आंसू पोंछे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जिस क़दर उन को रोने से मन्अ़ फ़रमाते थे उस क़दर वोह और ज़ियादा रोती थीं। जब किसी त़रह़ चुप न हुईं तो उन को सरज़निश फ़रमाई और तमाम लोगों को मन्ज़िल करने का हुक्म दिया

www.dawateislami.net

और खुद भी अपना ख़ैमा नस्ब करवाया। ह़ज़रते सफ़िय्या को ख़याल हुवा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाराज़ हो गए, इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी की तदबीरें इख़्तियार कीं।

इस ग़रज़ से ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास गईं और कहा कि आप को मा'लूम है कि मैं अपनी बारी का दिन किसी चीज़ के मुआ़वज़े में नहीं दे सकती लेकिन अगर आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुझ से राज़ी कर दें तो मैं अपनी बारी आप को देती हूं। ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने आमादगी ज़ाहिर की और एक दूपट्टा ओढ़ा जो ज़ा'फ़रानी रंग में रंगा हुवा था, फिर उस पर पानी छिड़का कि ख़ुश्बू और फैले, इस के बा'द आप हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास गईं और ख़ैमे का पर्दा उठाया, तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا येह तुम्हारा दिन नहीं है। बोलीं : ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे। (پ٦،المائدة:٥٤)

(المسندللامام احمد بن حنبل،حديث صفية ام المؤمنين رضى الله عنها،الحديث: ٢٦٩٣٠،ج١٠،ص٢٥٣)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अक्सर अपनी नाराज़ी का इज़्हार अ़लानिया तौर पर नहीं फ़रमाते थे, लेकिन जब सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को आप के चश्मो अबरू से इस का एहसास हो जाता था तो फ़ौरन आप को राज़ी करते थे। एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक रास्ते से गुज़रे, राह में एक बुलन्द कुब्बा नज़र से गुज़रा तो फ़रमाया : येह किस का है ? लोगों ने एक अन्सारी का नाम बताया, आप को येह शानो शौकत ना गवार हुई, मगर इस का इज़्हार नहीं फ़रमाया, कुछ देर के बा'द अन्सारी बुज़ुर्ग आए और सलाम किया, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रुख़े अन्वर फेर लिया, बार बार येह वाक़िआ़ पेश आया तो उन्हों ने दूसरे

सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُم से हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी का ज़िक्र किया, सबब मा'लूम हुवा तो उन्हों ने कुब्बे को गिरा कर ज़मीन के बराबर कर दिया।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجاء فی البناء، الحدیث:۵۲۳۷،ج۴، ص ۴۶۰)

नाराज़ी के बा'द अगर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खुश हो जाते तो गोया सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُم को दौलते जावीद मिल जाती, एक बार आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र में थे, हज़रते अबू रुहम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ऊंटनी आप के नाक़े के पहलू ब पहलू जा रही थी, हज़रते अबू रुहम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पाउं में सख़्त चमड़े के जूते थे, ऊंटनियों में मुज़ाहमत हुई तो उन के जूते की नोक से सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साक़े मुबारक में ख़राश आ गई, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के पाउं में कोड़ा मार कर फ़रमाया : तुम ने मुझ को दुख दिया, पाउं हटाओ, वोह सख़्त घबराए कि कहीं मेरे बारे में कोई आयत नाज़िल न हो जाए।

मक़ामे जिइर्राना में पहुंचे तो गो कि उन की ऊंट चराने की बारी न थी, ताहम इस ख़ौफ़ से कि कहीं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ासिद मेरे बुलाने के लिये न आ जाए, सहरा में ऊंट चराने के लिये निकल गए, शाम को पलटे तो मा'लूम हुवा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तलब फ़रमाया था, मुज़्तरिबाना हाज़िरे ख़िदमत हुए, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मुझे तुम ने अज़िय्यत पहुंचाई और मैं ने भी तुम्हें कोड़ा मारा, जिस से तुम्हें अज़िय्यत पहुंची, इस के इवज़ में येह बकरियां लो, उन का बयान है कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह रिज़ामन्दी मेरे लिये दुन्या व मा फ़ीहा से ज़ियादा महबूब थी।

(الطبقات الکبری،تذکرۃ ابو رُھم الغفاری،ج۴،ص ۱۸۴)

www.dawateislami.net

ग़मे हिज्रे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को जो महब्बत थी, इस का असर आप की ज़िन्दगी में जिन तरीक़ों से ज़ाहिर होता था, इस का हाल ऊपर गुज़र चुका, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द इस महब्बत का इज़्हार सिर्फ़ गिर्या व बुका, आह व फ़रियाद और नाला व शेवन के ज़रीए से हो सकता था। और सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़म में येह दर्द अंगेज़ सदाएं इस ज़ोर से बुलन्द की, कि मदीना बल्कि कुल अ़रब के दरो दीवार हिल गए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मौत के आसार ब तदरीज तारी हुए। जुमे'रात के दिन अ़लालत में इश्तिदाद पैदा हुवा, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को जब येह दिन याद आता था तो कहते थे : जुमे'रात का दिन, हाए जुमे'रात का दिन, वोह जिस में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़लालत में शिद्दत आई, नज़्अ़ का वक़्त क़रीब आया तो ग़शी तारी हुई।

(صحيح البخاری، كتاب المغازی، باب مرض النبی ووفاته، الحديث:٤٤٣١، ج٣، ص١٥٢)

ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने येह ह़ालत देखी तो बे इख़्तियार पुकार उठीं "واكرباه"। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो येह अल्फ़ाज़ कह कर आप पर रोईं,

يااباتاه! اجاب ربا دعاه، يا ابتاه! من جنة الفردوس ماواه يا ابتاه!

الیٰ جبرئيل عليه السلام ننعاه۔

"लोग आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तदफ़ीन कर के आए तो उन्हों ने ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से निहायत दर्द अंगेज़

लहजे में पूछा, क्यूं अनस, कैसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मिट्टी देना तुम्हें गवारा हुवा ?" (المرجع السابق،الحديث:٤٤٦٢،ص١٦٠)

हज़रते आइशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द मुझे किसी का मरज़ुल मौत नहीं खिलता। (المرجع السابق،الحديث:٤٤٤٦،ص١٥٦)

येह तो अह्ले बैत की ह़ालत थी। अह्ले बैत के इलावा और तमाम सह़ाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ग़मो अलम की तस्वीर बने मस्जिदे नबवी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में गिर्या कुनां थे और ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه लोगों को यक़ीन दिला रहे थे कि अभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल नहीं हो सकता। ह़ज़रते अबू बक्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह ह़ालत आ कर देखी तो किसी से बातचीत नहीं की, सीधे आप के जसदे अत़्हर मुबारक तक चले गए, वज्हे अन्वर से कपड़ा हटा कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारक को बोसा दिया और रोए। वहां से निकल कर लोगों को समझाया तो सब को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौत का यक़ीन आया।

(المرجع السابق،الحديث:٤٤٥٣-٤٤٥٤،ج٣،ص١٥٨)

एक शख़्स सह़ाबा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के क़लक़ व इज़्तिराब का येह आ़लम देख कर मदीने से ओ़मान आया तो लोगों को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल की ख़बर दी और कहा कि मैं मदीने के लोगों को ऐसे ह़ाल में छोड़ कर आया हूं कि उन के सीने देगची की त़रह़ उबाल खा रहे हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी लैला अन्सारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के वक़्त मैं बच्चा था, लोग अपने सरों और कपड़ों पर ख़ाक डाल रहे थे। और मैं उन के गिर्या व बुका को देख कर रोता था। (اسد الغابة،تذكرة عبدالله بن ابى ليلى،ج٣،ص٣٨٣)

www.dawateislami.net

मदीने के बाहर जब येह ग़मनाक ख़बर पहुंची तो क़बीलए बाहिला के लोगों ने इस ग़म में अपने ख़ैमे गिरा दिये और मुत्तसिल सात रात तक उन को खड़ा नहीं किया। (الاصابة،تذکرة جهم بن کلدة الباهلی،ج١،ص٦٤٠)

तफ़्वीज़ इलर्रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने अपनी ज़ाती हैसिय्यत बिल्कुल फ़ना कर दी थी और अपनी ज़ात और अपनी आल औलाद को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दिया था। ह़ज़रते फ़ातिमा बिन्ते क़ैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا एक सहाबिया थीं, इन से एक त़रफ़ तो ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जो निहायत दौलत मन्द सह़ाबी थे निकाह़ करना चाहते थे, दूसरी त़रफ़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मुतअ़ल्लिक़ इन से गुफ़्तगू की थी, जिन की फ़ज़ीलत येह थी कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि जो मुझे दोस्त रखता है चाहिये कि उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को भी दोस्त रखे। लेकिन ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी क़िस्मत का मालिक बना दिया और कहा मेरा मुआ़मला आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ में है जिस से चाहे निकाह़ कर दीजिये।

(سنن النسائی، کتاب النکاح،باب الخطبة فی النکاح،ج٦،ص٧٠۔٧١)

ह़ज़रते अबू उमामा अस्अ़द बिन ज़ुरारह अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपनी तीन लड़कियों के निकाह़ के मुतअ़ल्लिक़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसिय्यत कर गए थे, जिन में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़रीआ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का निकाह़ नबीत़ बिन जाबिर से कर दिया।

(اسدالغابة،تذکرة فریعة بنت ابی امامة، ج٧،ص٢٥٣)

अन्सार का येह मा'मूल था कि आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ामन्दी जाने बिग़ैर अपनी बेवाओं की शादी नहीं करते थे।

एक दिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक अन्सारी से फ़रमाया : तुम अपनी लड़की का निकाह़ कर दो, वोह तो मुन्तज़िर ही थे, बाग़ बाग़ हो गए लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं अपने लिये नहीं बल्कि जुलैबीब के लिये पैग़ाम देता हूं, जुलैबीब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक ज़रीफ़ुत्तब्अ़ सह़ाबी थे जो औ़रतों के साथ ज़राफ़त और मज़ाक़ की बातें किया करते थे, इस लिये सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم इन को उ़मूमन ना पसन्द करते थे, उन्हों ने जुलैबीब का नाम सुना तो बोले : उस की मां से मश्वरा कर लूं, मां ने जुलैबीब का नाम सुना तो इन्कार कर दिया । लेकिन लड़की ने कहा : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बात ना मन्ज़ूर नहीं की जा सकती मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दो, आप मुझे ज़ाएअ़ न करेंगे ।

(المسندلامام احمد بن حنبل،مسند البصریین، حدیث ابی برزۃ الاسلمی، الحدیث: ١٩٨٠٥،ج٧،ص١٨٤)

हैबते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वक़ार व अ़ज़मत की बिना पर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم आप के सामने इस क़दर मरऊ़ब हो जाते थे कि जिस्म में रा'शा पड़ जाता था ।

एक बार एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप के साथ नमाज़ पढ़ी । लेकिन दो शख़्स जो मस्जिद के एक गोशे में थे, शरीके नमाज़ नहीं हुए । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को बाज़पुर्स के लिये त़लब फ़रमाया तो वोह इस क़दर मरऊ़ब हुए कि जिस्म में लरज़ा पड़ गया ।

(سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ،باب فیمن صلی فی منزلہ.....الخ،الحدیث: ٥٧٥، ج١،ص ٢٣٧)

एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर आप से बातचीत की लेकिन उन पर इस क़दर रो'ब त़ारी हुवा कि जिस्म में रा'शा पड़ गया,

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : घबराओ नहीं, मैं तो उस औरत का लड़का हूं जो गोश्त के सूखे टुकड़े खाया करती थी।

एक बार एक सहाबिया رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھَا ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मस्जिद में उकड़ूं बैठे हुए देखा। उन पर आप के इस ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ की ह़ालत का येह असर पड़ा कि कांप उठीं।

(سنن الترمذی، الشمائل، باب ماجاء فی جلسة رسول الله، الحدیث:١٢٦، ج٥، ص٥٢٥)

इस रो'बो दाब का येह असर था कि सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने लब कुशाई की जुरअत न कर पाते थे। एक बार आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़स्र या ज़ोहर की नमाज़ में सिर्फ़ दो रक्अ़तें अदा फ़रमाईं, बहुत से सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم मस्जिद से येह कहते हुए निकल आए कि रक्आ़ते नमाज़ में कमी कर दी गई। जमाअ़त में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ और उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ भी शरीक थे। लेकिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हैबत से कुछ पूछ नहीं सकते थे। बिल आख़िर ह़ज़रते ज़ुल यदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि आप भूल गए या नमाज़ में कमी हुई ? तमाम सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने उन की ताईद की लेकिन ज़बान न हिल सकी, बल्कि इशारों में ह़ज़रते ज़ुल यदैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की तस्दीक़ की।

(سنن ابی داود، کتاب الصلوة، باب السهو فی السجدتین، الحدیث: ١٠٠٨، ج١، ص٣٧٧)

ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े पाए के सह़ाबी थे। लेकिन उन का बयान है कि मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुल्या नहीं बयान कर सकता। क्यूंकि मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कभी आंख भर कर देखने की जुरअत नहीं की।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب کون الاسلام یهدم ماقبله.....الخ،الحدیث: ١٢١، ص٧٤)

सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के बच्चों तक के रगो रेशे में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रो'बो दाब सरायत कर गया था। एक बार ह़ज़रते अयाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ बचपन में बाप के साथ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गए, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा तो उन के बाप ने पूछा कि जानते हो कि कौन हैं? बोले : नहीं। कहा कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।" येह सुनने के साथ ही उन के बदन के रौंगटे खड़े हो गए। उन का ख़याल था कि आप की शक्लो सूरत आदमियों से मुख़्तलिफ़ होगी, लेकिन आप को नज़र आया कि आप भी आदमी ही हैं और आप के सर पर ज़ुल्फ़ें हैं।

(المسند لامام احمد بن حنبل،مسند ابی رمثة،الحدیث ۷۱۳۱،ج۲،ص ۶۹۸)

इत़ाअ़ते रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھُم जिस त़ौअ़ व रिज़ा के साथ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करते थे इस के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस में निहायत कस्रत से वाक़िआ़त मज़्कूर हैं। ज़ैल के चन्द वाक़िआ़त से इस का अन्दाज़ा हो सकेगा।

एक बार ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا अपने कपड़े रंगवा रही थीं, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर में आए, तो उलटे पाउं वापस हो गए, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अगर्चे मुंह से कुछ नहीं फ़रमाया था, ताहम ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡھَا आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे इताब को जान गईं और तमाम कपड़ों के रंग को धो डाला।

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को एक रंगीन चादर ओढ़े हुए देखा तो फ़रमाया : येह क्या है? वोह

www.dawateislami.net

समझ गए कि आप ने येह ना पसन्द फ़रमाया। फ़ौरन घर में आए और उस को चूल्हे में डाल दिया।

(سنن ابی داود،کتاب اللباس،باب فی الحمرة، الحدیث:٤٠٧١،ج٤،ص٧٤)

हज़रते ख़ुरैम असदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक सहाबी थे जो नीचा तहबन्द बांधते थे और लम्बे लम्बे बाल रखते थे, एक रोज़ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ख़ुरैम असदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितना अच्छा आदमी था अगर लम्बे बाल न रखता और नीचा तहबन्द न बांधता। उन को मा'लूम हुवा तो फ़ौरन कैंची मंगाई, उस से बाल कतरे और तहबन्द ऊंचा कर लिया।

(سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب ماجاء فی اسبال الازار، الحدیث:٤٠٨٩، ج٤، ص ٨٠)

बीवी सब को अ़ज़ीज़ होती है लेकिन जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तख़ल्लुफ़े ग़ज़्वए तबूक की बिना पर तमाम मुसलमानों को हज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने का हुक्म दिया और आख़िर में उन को ज़ौजा से अ़लाहि़दगी इख़्तियार करने की हिदायत फ़रमाई तो बोले : त़लाक़ दे दूं या और कुछ ? लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ासिद ने कहा सिर्फ़ अ़लाहि़दगी मक़्सूद है, चुनान्चे उन्हों ने फ़ौरन ज़ौजा को मैके में भेज दिया।

(صحیح البخاری،کتاب المغازی ،باب حدیث کعب بن مالك.....الخ، الحدیث: ٤٤١٨،ج٣،ص١٤٨)

शादी का मुआ़मला निहायत नाज़ुक होता है, लेकिन सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को इत़ाअ़ते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन मुआ़मलात में ग़ौरो फ़िक्र करने से बे नियाज़ बना दिया था, हज़रते रबीआ़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक निहायत मुफ़्लिस सहाबी थे। एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को निकाह़ करने का मश्वरा दिया और फ़रमाया : जाओ अन्सार के फुलां क़बीले में निकाह़ कर लो, वोह आए और कहा : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ने मुझे तुम्हारे यहां फ़ुलां लड़की से निकाह़ करने के लिये भेजा है, सब ने उन का ख़ैर मक़्दम किया और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ासिद नाकाम नहीं जा सकता। चुनान्चे फ़ौरन उन्हों ने उन की शादी करवाई और तह़ाइफ़ भी दिये।

(المسند لامام احمد بن حنبل، حديث ربيعة بن كعب الاسلمى رضى الله عنه، حديث:١٦٥٧٧، ج٥، ص٥٦٩)

पाबन्दिये अह़कामे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जो अह़काम वक़्ती होते थे। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم फ़ौरन उन की ता'मील करते थे। और जो दाइमी होते हमेशा उस के पाबन्द रहते थे और उस के ख़िलाफ़ कभी उन से कोई ह़रकत सादिर नहीं होती थी। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में औ़रतें भी शरीके जमाअ़त होती थीं। इस ह़ालत में इक़्तिज़ाए कमाले इ़फ़्फ़त व इ़स्मत येह था कि उन के लिये मस्जिद का एक दरवाज़ा मख़्सूस कर दिया जाए। इस बिना पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक रोज़ इरशाद फ़रमाया :

لو تركنا هذا الباب للنسآء

"काश ! हम येह दरवाज़ा सिर्फ़ औ़रतों के लिये छोड़ देते।"

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस शिद्दत के साथ इस की पाबन्दी की, कि ता दमे मर्ग उस दरवाज़े से मस्जिद में दाख़िल ही नहीं हुए।

(سنن ابى داود، كتاب الصلوة، باب التشديدفى ذالك،الحديث:٥٧١، ج١، ص٢٣٥)

एक बार आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस शख़्स ने ग़ुस्ले जनाबत में एक बाल को भी ख़ुश्क छोड़ दिया उस पर दोज़ख़ में अ़ज़ाब होगा। ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इस पर जिस शिद्दत से अ़मल किया इस को ख़ुद उन्हों ने बयान किया

www.dawateislami.net

है । فَمِنْ ثَمَّ عادَيتُ رَأسِی "या'नी उस दिन से मैं ने अपने सर से दुश्मनी कर ली" और बराबर बाल तरश्वाते रहे । ह़दीस में है कि येह फ़िक़रा उन्हों ने तीन बार फ़रमाया ।

(سنن ابی داود، کتاب الطھارۃ، باب فی الغسل من الجنابۃ، الحدیث:۲۴۹، ج۱، ص۱۱۷)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शोहर के इलावा दीगर अइ़ज़्ज़ा के सोग के लिये तीन दिन मुक़र्रर फ़रमाए थे, सह़ाबियात رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ ने इस की इस शिद्दत से पाबन्दी की, कि जब ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के भाई का इन्तिक़ाल हो गया तो ग़ालिबन चौथे दिन उन्हों ने ख़ुश्बू लगाई और कहा कि "मुझ को ख़ुश्बू की ज़रूरत न थी लेकिन मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मिम्बर पर सुना है कि किसी मुसलमान औ़रत को शोहर के सिवा तीन दिन से ज़ियादा किसी का सोग जाइज़ नहीं, इस लिये येह उसी हुक्म की ता'मील थी ।"

जब ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के वालिद ने इन्तिक़ाल किया तो उन्हों ने तीन रोज़ के बा'द अपने रुख़्सारों पर ख़ुश्बू मली और कहा : मुझे इस की ज़रूरत न थी, सिर्फ़ इस हुक्म की ता'मील मक़्सूद थी । (سنن ابی داود، کتاب الطلاق،باب احداد المتوفی عنھازوجھا،الحدیث:۲۲۹۹، ج۲،ص۴۲۲)

पहले येह दस्तूर था कि जब सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم सफ़रे जिहाद में किसी मन्ज़िल पर क़ियाम फ़रमाते थे तो इधर उधर फैल जाते थे, एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह तफ़र्रुक़ व तशत्तुत शैत़ान का काम है । इस के बा'द सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने इस की इस शिद्दत से पाबन्दी की, कि जब भी मन्ज़िल पर उतरते थे तो इस क़दर सिमट जाते थे कि अगर एक चादर तान ली जाती तो सब के सब उस के नीचे आ जाते । (سنن ابی داود، کتاب الجھاد، باب مایؤمر من انضمام العسکر،الحدیث:۲۶۲۸، ج۳،ص۵۸)

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तिजारत के मुतअ़ल्लिक़ जो अह़काम जारी फ़रमाए थे उन में एक येह था :

“لایبع حاضر لباد” शह्‌री आदमी बदवियों का माल न बिकवाए (या'नी उस का दलाल न बने)

(سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ،باب فی النھی ان یبیع حاضرلباد،الحدیث:۳۴۴۲،ج۳،ص۳۷۱)

एक बार एक बदवी कुछ माल ले कर आया तो ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन ड़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के यहां उतरा लेकिन उन्हों ने कहा कि मैं ख़ुद तो तुम्हारा सौदा नहीं बिकवा सकता, अलबत्ता बाज़ार में जाओ, बाएअ़ की तलाश करो, मैं सिर्फ़ मश्वरा दे दूंगा।

(سنن ابی داود، کتاب الاجارۃ، باب فی النھی أن یبیع حاضر لباد، الحدیث: ۳٤٤١، ج۳، ص۳۷۱)

ह़ज़रते हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने मदाइन के एक रईस ने चांदी के बरतन में पानी पेश किया, उन्हों ने उस को उठा कर फेंक दिया और फ़रमाया कि मैं ने इस को मन्अ़ किया था, येह बाज़ न आया, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की मुमानअ़त फ़रमाई है। (سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ، باب فی الشرب فی آنیۃ الذھب والفضۃ، الحدیث:۳۷۲۳، ج۳، ص٤۷۳)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहले यमन की गवर्नरी पर ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना फ़रमाया, उन के बा'द ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा, ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने एक मुजरिम को देखा, ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुवारी से उतरने के लिये कहा लेकिन उन्हों ने मुजरिम की त़रफ़ इशारा कर के पूछा : येह कौन है? बोले : यहूदी था, इस्लाम लाया, फिर मुरतद हो गया है। फ़रमाया : जब तक ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुत़ाबिक़ क़त्ल न कर दिया जाएगा, मैं न बैठूंगा। उन्हों ने बैठने पर इस्रार किया, लेकिन उन का येही

www.dawateislami.net

जवाब था, चुनान्चे जब वोह क़त्ल हो चुका तो सुवारी से उतरे ।

(سنن ابی داود ، کتاب الحدود، باب الحکم فی من ارتد، الحدیث:٤٣٥٤، ج٤،ص١٦٩)

लेकिन इस के बा'द की रिवायत में है कि ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस को तक़रीबन बीस दिन तक समझाया, लेकिन जब वोह राहे रास्त पर न आया तो क़त्ल कर दिया ।

(المرجع السابق،الحدیث:٤٣٥٦،ج٤،ص١٧٠)

एक बार ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मजलिस में आए । एक शख़्स ने उठ कर उन के लिये अपनी जगह ख़ाली कर दी तो उन्हों ने उस की जगह बैठने से इन्कार किया और कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमाया है ।

(سنن ابی داود،کتاب الصلوۃ،باب فی الرجل یقوم للرجل من مجلسہ،الحدیث: ٤٨٢٧،ج٤،ص٣٣٩)

एक बार ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास एक साइल आया, उन्हों ने उस को रोटी का एक टुकड़ा दे दिया, फिर इस के बा'द एक ख़ुश लिबास शख़्स आया तो उन्हों ने उस को बिठा कर खाना खिलाया । लोगों ने इस तफ़रीक़ पर ए'तिराज़ किया तो बोलीं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : "انزلوا الناس منازلھم" हर शख़्स से उस के दरजे के मुत़ाबिक़ बरताव करो ।

(سنن ابی داود، کتاب الادب ،باب فی تنزیل الناس منازلھم، الحدیث:٤٨٤٢، ج٤، ص٣٤٣)

एक बार आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद से निकल रहे थे देखा कि रास्ते में मर्द औ़रतें मिल जुल कर चल रहे हैं । औ़रतों की त़रफ़ मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : पीछे रहो तुम वस्त़े राह से नहीं गुज़र सकतीं । इस के बा'द येह ह़ाल हो गया कि औ़रतें इस क़दर गली के कनारे से चलती थीं कि उन के कपड़े दीवारों से उलझ जाते थे । (المرجع السابق،باب فی مشی النساء مع الرجال فی الطریق، الحدیث:٥٢٧٢، ج٤،ص٤٧٠)

www.dawateislami.net

हज़रते मुहम्मद बिन अस्लम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत कबीरुस्सिन सहाबी थे। लेकिन जब बाज़ार से पलट कर घर आते और चादर उतारने के बा'द याद आता कि उन्हों ने मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में नमाज़ नहीं पढ़ी तो कहते कि खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने मस्जिदे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में नमाज़ नहीं पढ़ी, हालांकि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया था कि जो शख़्स मदीने में आए तो जब तक इस मस्जिद में दो रक्अ़त नमाज़ न पढ़ ले घर वापस न जाए, येह कह कर चादर उठाते और मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ के घर वापस आते।

(اسدالغابة،تذكرة محمد بن اسلم الانصارى،ج٥،ص ٨٠)

ग़ज़्वए अहज़ाब में सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि कुफ़्फ़ार की ख़बर लाएं, लेकिन उन से छेड़छाड़ न करें, वोह आए तो देखा कि अबू सुफ़्यान आग ताप रहे हैं, कमान में तीर जोड़ लिया और निशाना लगाना चाहा, लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म याद आ गया और रुक गए। (صحيح مسلم، كتاب الجهادو السير،باب غزوة الأحزاب،الحديث:١٧٨٨، ص٩٨٨)

जो सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم अबू राफ़ेअ़ बिन अबिल हुक़ैक़ को क़त्ल करने गए थे उन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया था कि उस के बच्चों और औ़रतों को क़त्ल न करें। उन लोगों ने इस शिद्दत के साथ इस हुक्म की पाबन्दी की, कि इब्ने अबिल हुक़ैक़ की औ़रत ने बा वुजूद येह कि इस क़दर शोर किया कि क़रीब था उन का राज़ फ़ाश हो जाता, लेकिन उन लोगों ने सिर्फ़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म की बिना पर उस पर हाथ उठाना पसन्द न किया। (المؤطا للامام مالك، كتاب الجهاد، باب النهى عن قتل النساء، والولدان فى الغزو، الحديث:١٠٠٢،ج٢،ص٨)

www.dawateislami.net

अदबे ह़रमे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तअ़ल्लुक़ से सहा़बए किराम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ का इस क़दर अदब करते थे कि जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक ज़ौजए मोह़तरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इन्तिक़ाल किया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا सज्दे में गिर पड़े, लोगों ने कहा आप इस वक़्त सज्दा करते हैं ? बोले : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : जब क़ियामत की कोई निशानी देखो तो सज्दा कर लिया करो, फिर अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की मौत से बढ़ कर क़ियामत की कौन सी निशानी होगी ।

(سنن ابی داود، کتاب صلاۃ الاستسقاء، باب السجود عندالآیات، الحدیث:١١٩٧، ج١،ص ٤٤٠)

मक़ामे सरफ़ में ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जनाज़ा उठाया गया तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी साथ थे । बोले कि "येह मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं इन का जनाज़ा उठाओ तो मुत़्लक़ ह़रकत व जुम्बिश न दो ।"

(سنن النسائی، کتاب النکاح، باب ذکرامر رسول اللّٰہ صلی اللہ علیہ وسلم فی النکاح.....الخ،ج٣،الجزء السادس،ص٥٣)

बा'ज़ सहा़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इ़ज़्ज़त व मह़ब्बत की वज्ह से अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ पर अपनी जाएदादें वक़्फ़ करते थे । चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को जाएदाद दी थी जो 40 हज़ार दीनार में फ़रोख़्त की गई और एक बाग़ भी वक़्फ़ किया था जो चार लाख दिरहम में फ़रोख़्त किया गया ।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبدالرحمن بن عوف.....الخ، الحدیث: ٣٧٧٠۔٣٧٧١،ج٥،ص٤١٧)

खुलफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के अदबो एह़तिराम का इस क़दर लिह़ाज़ रखते थे कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने ज़मानए ख़िलाफ़त में अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ता'दाद के लिह़ाज़ से नव प्याले तय्यार कराए थे, जब उन के पास मेवा या और कोई चीज़ आती तो उन प्यालों में तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ख़िदमत में भेजते थे।

(المؤطالامام مالك ، كتاب الزكوة، باب جذية اهل الكتاب والمجوس، الحديث:٦٣٠،ج١،ص٢٥٧)

सि. 23 हि. में जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज किया तो अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ को भी निहायत अदबो एह़तिराम के साथ हमराह ले गए, ह़ज़रते उ़स्मान और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को सुवारियों के साथ कर दिया था। येह लोग आगे आगे चलते थे और किसी को सुवारियों के क़रीब नहीं आने देते थे। अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ मन्ज़िल पर उतरती थीं, तो ख़ुद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की निगरानी में क़ियाम करती थीं। ह़ज़रते उ़स्मान और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) किसी को क़ियाम गाह के मुत्तसिल आने की इजाज़त नहीं देते थे।

(الطبقات الكبرى،تذكرة تولية عبدالرحمن الشورى والحج،ج٣،ص٩٩)

www.dawateislami.net

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल का सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم पर रद्दे अ़मल

हा़लते तहय्युर : मुसलमानों को जब आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिह़लत की इत्तिलाअ़ मिली तो वोह शशदरो साकित रह गए, इन में से ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़याल था कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ौत नहीं हुए, सिर्फ़ ह़ालते बेहोशी में हैं, चुनान्चे उन्हों ने मस्जिद में ख़ित़ाब करते हुए कहा :

बा'ज़ मुनाफ़िक़ीन येह ख़बर उड़ा रहे हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ौत हो गए, लेकिन येह बात बिल्कुल ग़लत़ है। वोह ह़ज़रते मूसा बिन इमरान عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास गए हैं। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام भी अपनी क़ौम में चालीस दिन मौजूद न रहे थे और उन की ग़ैर ह़ाज़िरी में लोगों ने कहना शुरूअ़ कर दिया था कि वोह फ़ौत हो गए, लेकिन जिस त़रह़ ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام वापस आ गए इसी त़रह़ मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस आएंगे और वोह लोग जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात की ख़बर मशहूर कर रहे हैं उन के हाथ पाउं क़लम करेंगे।

इन्किशाफ़े ह़क़ीक़त : इतने में ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने की कोशिश की और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : ख़ामोश हो जाओ, लेकिन वोह अपनी तक़रीर में मुन्हमिक रहे। तब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने लोगों से कहा : जो कुछ मैं कहता हूं उसे ग़ौर से सुनो ! सब लोग मुतवज्जेह हुए, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

“ऐ लोगो ! तुम में से जो शख़्स मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की परस्तिश करता था वोह सुन ले कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो फ़ौत हो गए लेकिन जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करता था तो यक़ीनन **अल्लाह** तआ़ला ज़िन्दा है उसे मौत नहीं । इस के बा'द सूरए आले इमरान की येह आयत तिलावत फ़रमाई :

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝ (پ۴،اٰل عمران:۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मुह़म्मद तो एक रसूल हैं इन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो उलटे पाउं फिरेगा* ***अल्लाह*** *का कुछ नुक़्सान न करेगा और अ़न क़रीब* ***अल्लाह*** *शुक्र वालों को सिला देगा ।*

अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब येह आयत पढ़ी तो लोग ऐसे हो गए कि गोया उन्हों ने कभी पहले येह आयत सुनी ही न थी । उस वक़्त लोगों ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस आयत को सुन कर अपनी याद ताज़ा कर ली और ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपना बयान है जिस वक़्त अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान से मैं ने येह आयत सुनी मुझ को ऐसा मा'लूम हुवा कि गोया मेरे पाउं कट गए, मैं खड़ा न रह सका, उसी वक़्त ज़मीन पर गिर पड़ा और मैं ने जाना हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया । (مدارج النبوت،باب دوم،درذکر وقائع...الخ، ج۲،ص ٤٣٣،٤٣٤)

ग़मो अलम के बादलों का छा जाना

﴾1﴿ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहि़ब ज़ादी ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस ग़मो अलम के मौक़अ़ पर येह अल्फ़ाज़ इरशाद फ़रमाए : “मेरे प्यारे बाप ने दा'वते ह़क़ को क़बूल फ़रमाया और फ़िरदौसे बरीं में नुज़ूल फ़रमाया, आह !

जिब्रईल عَلَيۡهِ السَّلَام को आं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल की ख़बर कौन पहुंचाए ? इलाही عَزَّوَجَلَّ ! रूहे फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا) को रूहे मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा दे । इलाही عَزَّوَجَلَّ मुझे दीदारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मस्रूर कर दे । इलाही عَزَّوَجَلَّ मुझे इस मुसीबत को झेलने के सवाब से बे नसीब न रखना और रोजे़ महशर मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से महरूम न फ़रमाना ।"

﴾2﴿ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोहतरमा हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا ने इस सानिहए अ़ज़ीम पर अपने रन्जो ग़म का इज़्हार करते हुए कहा : हाए अफ़्सोस ! वोह नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस ने फ़क्र को ग़िना पर और मिस्कीनी को दौलत मन्दी पर तरजीह दी, अफ़्सोस ! वोह मुअ़ल्लिमे दीन जो गुनाहगार उम्मत की फ़िक्र में कभी पूरी रात आराम से न सोया, हम से रुख़्सत हो गया । जिस ने हमेशा सब्रो सबात से अपने नफ़्स के साथ मुक़ाबला किया, जिस ने बुराइयों पर कभी तवज्जोह न की, जिस ने नेकी और एह्सान के दरवाज़े कभी ज़रूरत मन्दों पर बन्द न किये, जिस रोशन ज़मीर के दामन पर दुश्मनों की ईज़ा रसानी का गर्दो गुबार कभी न बैठा ।

﴾3﴿ हज़रते अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने आं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी गुस्ल देते हुए जो तारीख़ी अल्फ़ाज़ कहे वोह सारी उम्मत के जज़्बाते रन्जो ग़म के तर्जुमान हैं ।

"मेरे मां-बाप आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर निसार, आप की मौत से वोह चीज़ जाती रही जो किसी दूसरे की वफ़ात से न गई थी, या'नी ग़ैब की ख़बरों और वहि्ये आस्मानी का सिलसिला मुन्क़ते़अ़ हो गया । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौत सदमए अ़ज़ीम है । अगर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब्र का हुक्म न दिया होता और आहो ज़ारी से मन्अ़ न किया होता तो हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर आंसू बहा देते फिर भी इस दर्द का इलाज और ज़ख़्म का इन्दिमाल न होता ।" (السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، باب جهاز رسول صلى الله عليه وسلم ودفنه، ج٤، ص٥٥٥)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस रोज़ हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीने में तशरीफ़ लाए थे, इस की हर चीज़ रोशन हो गई थी और जिस रोज़ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात हुई है, इस की हर चीज़ उदास हो गई है और बा'दे तदफ़ीन अभी मिट्टी से हाथ भी न झाड़े थे कि हम ने अपने कुलूब में तग़य्युर पाया। (क्यूंकि अब इन्हें मुर्शिदे कामिल की सोह़बत के अन्वारे कामिला दिखाई न पड़ते थे) (شرح العلامة الزرقانی، الفصل الاول فی اتمامه تعالیٰ .....الخ،ج۱۲،ص۱۷۶)

﴾5﴿ दरबारे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के शाइर ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो मरसिया लिखा, उस के चन्द पुरदर्द अश्आ़र का तर्जमा दर्जे ज़ैल है, जिस से उन के रन्जो ग़म के गहरे और सच्चे जज़्बात का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

"तेरी नींद के उचाट होने का सबब उस अ़ज़ीम इन्सान की जुदाई है जो हमारा हादी व रहनुमा है, सद अफ़्सोस ! कि वोह जो ज़मीन पर बेहतरीन हस्ती थी, आज ज़ेरे ज़मीन मदफ़ून है। ऐ मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! काश ऐसा होता कि मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पहले बक़ीउ़ल ग़रक़द में दफ़्न हो जाता। मेरे मां-बाप उस नबिये कामिल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़िदा हों जो पीर के रोज़ हमें दाग़े मुफ़ारक़त दे गया। मदीने की सर ज़मीन मुझे वीरान व सुनसान दिखाई देती है। काश ! मैं आज के दिन के लिये पैदा ही न हुवा होता। ऐ मेरे मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मैं आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिग़ैर मदीने में रह सकता हूं ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल मेरे लिये जामे ज़हर से तल्ख़ तर है। मेरे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप का पाक वुजूद ऐसा नूर था जिस ने तमाम रूए ज़मीन को रोशन कर रखा था। जिस ने भी इस नूर से फ़ैज़ पाया उस ने हिदायत पाई।"

www.dawateislami.net

“ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ जन्नतुल फ़िरदौस में इकठ्ठा कर दे। खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब तक मैं ज़िन्दा रहूंगा अपने महबूब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये रोता और तड़पता रहूंगा।”

(السيرة النبوية، شعر حسان بن ثابت فى مرثيته، ج٤، ص٥٥٨ـ٥٦٢)

﴾7﴿ ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को याद कर के रोने लगीं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने अ़र्ज़ किया : आप क्यूं रोती हैं ? क्या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये खुदा तआ़ला के पास (यहां से) बेहतर ने'मतें मौजूद नहीं ? उन्हों ने तस्दीक़ की, लेकिन अपने रोने का येह सबब बतलाया कि वह़िये आस्मानी का सिल्सिला मुन्क़तेअ़ हो गया है। इस पर अबू बक्र और उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी शरीके गिर्या व ग़म हो गए।

(الوفا فی احوال المصطفی صلی اللہ علیہ وسلم(مترجم)باب وصال مصطفی اور کیفیت صحابہ،ص۸۱۷)

अल ग़रज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم और उम्मते मुह़म्मदिय्या में से हर शख़्स आं ह़ज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात पर सोगवार था और यास व ह़िरमान की तस्वीर बना हुवा था।

फ़िराक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के तअस्सुरात

ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ का ख़ित़ाब सुन कर जब फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को यक़ीन हो गया कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हो चुका तो एक वक़्त देखा गया कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रो रहे हैं और येह कलिमात अ़र्ज़ कर रहे हैं :

السلام علیك یارسول الله بابی انت وامی لقد کنت تخطبنا علی جذع نخلة فلما کثر الناس اتخذت منبرًا لتسمعهم فحن الجذع لفراقك حتی جعلت یدك علیه فسکت فامتك اولی بالحنین الیك لما فَارَقتها بابی انت و امی یارسول الله لقد بلغ من فضیلتك عنده ان جعل طَاعتك طَاعته فقال عزوجل: **مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ج** (پ٥،النساء:٨٠)

بابی انت و امی یارسول الله لقد بلغ من فضیلتك عنده ان بعثك آخر الانبیاء و ذکرك فی اولهم فقال عز و جل: **وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ص وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًاۙ** (پ٢١،الاحزاب:٧)

بابی انت و امی یارسول الله لقد بلغ من فضیلتك عنده ان اهل النار یودون ان یکونوا قد اطاعوك و هم بین اطباقها یعذبون؛ **يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا** o (پ٢٢،الاحزاب:٦٦)

بابی انت و امی یارسول الله لئن کان موسی بن عمران اعطاه الله حجرا تفجر منه الانهار فلیس ذلك باعجب من اصابعك حین نبع منها الماء صلی الله علیك یاسیدی یارسول الله ۔

بابی انت و امی یارسول الله لئن کان عیسٰی بن مریم اعطاه الله احیاء الموتی فما هذا باعجب من الشاة المسمومة حین کلمتك و هی مشویة فقالت لك الذراع لا تاکلنی فانی مسمومة۔

بابی انت و امی یا رسول الله لقد دعا نوح علی قومه فقال:**رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا**o (پ٢٩،نوح:٢٦)

ولو دعوت علینا بمثلها لھلکنا کلنا فلقد وطئ ظھرك عقبة ابن ابی معیط و

انت تصلی و ادمی وجھك و کسرت رباعیتك یوم احد فابیت ان تقول ال

ا خیرا فقلت اللھم اغفر لقومی فانھم لایعلمون

بابی انت و امی یا رسول اللہ لقد بلغ من تواضعك انك جالستنا و

تزوجت منا واکلت معنا ولبست الصوف ورکبت الدواب واردفت خلفك

ووضعت طعامك علی الارض تواضعا منك صلی اللہ علیك وسلم رضی اللہ

عنك یا عمر یا من احببت رسول اللہ واحبك اللہ ورسولہ.

तर्जमा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर सलाम हो। आप पर मेरे मां-बाप कुरबान हों। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खजूर के एक तने पर हमें खुत़बा दिया करते थे, जब लोगों की कसरत हुई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मिम्बर बनवाया ताकि सब तक आवाज़ पहुंचा सकें। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो तना आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई के सबब नाला कनां हुवा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक रखा तो वोह सुकूं पज़ीर हुवा। जब खजूर के तने का येह ह़ाल है तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ पर नालए शौक़ करने का ज़ियादा ह़क़ पहुंचता है। या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां-बाप कुरबान ! खुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत इस ह़द को पहुंची हुई है कि उस ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त को अपनी इत़ाअ़त क़रार दिया। इरशादे बारी عَزَّوَجَلَّ हुवा :

www.dawateislami.net

مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ج
(پ ۵،النساء: ۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां-बाप कुरबान हों ! खुदा عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़ज़ीलत यहां तक पहुंची हुई है कि उस ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी बना कर मबऊ़स किया और ज़िक्र में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से अव्वल रखा कि इरशाद फ़रमाया :

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِیّٖنَ مِیْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِیْسَى ابْنِ مَرْیَمَ ص وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّیْثَاقًا غَلِیْظًاۙ
(پ ۲۱،الاحزاب:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ महबूब याद करो जब हम ने नबियों से अ़हद लिया और तुम से और नूह़ और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से और हम ने उन से गाढ़ा अ़हद लिया ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां-बाप कुरबान हों ! खुदा عَزَّوَجَلَّ के यहां आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह फ़ज़ीलत भी है कि अहले दोज़ख़ जब त़बक़ाते जहन्नम में अ़ज़ाब दिये जाते होंगे उस वक़्त येह आरज़ू करेंगे कि काश उन्हों ने इत़ाअ़त की होती !

یَقُوْلُوْنَ یٰلَیْتَنَاۤ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ۝ (پ ۲۲،الاحزاب:۶۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कहते होंगे हाए किसी त़रह़ हम ने **अल्लाह** का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता ।*

या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मेरे मां-बाप कुरबान हों ! अगर ह़ज़रते मूसा बिन इमरान عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा पथ्थर अ़त़ा किया जिस से

नहरें फूटतीं, तो येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक उंगलियों से ज़ियादा अ़जीब नहीं जब कि उन से पानी का चश्मा रवां हुवा।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां-बाप कु़रबान हों ! अगर ह़ज़रते ईसा बिन मरयम عَلَیْہِ السَّلَام को **अल्लाह** तआ़ला ने मुर्दे जिलाने का ए'जाज़ बख़्शा था तो येह ज़ियादा अ़जीब नहीं उस ज़ह्र आलूद बकरी से, जिस ने भुनी हुई हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कलाम किया, उस बकरी की दस्ती ने अ़र्ज़ किया : "मुझे न खाएं क्यूंकि मैं ज़ह्र आलूद हूं।"

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां-बाप फ़िदा ! बेशक ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ दुआ़ फ़रमाई तो अ़र्ज़ किया :

رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ۝ (پ۲۹،نوح:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ मेरे रब ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़।*

अगर कहीं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी हम पर ऐसी दुआ़ए ज़रर कर देते तो यक़ीनन हम सारे के सारे हलाक हो जाते। बेशक उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते मुबारक पर बोझ डाला जब कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ालते नमाज़ में थे। जंगे उहुद के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए पाक ज़ख़्मी व ख़ूंरेज़ किया गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबारक शहीद किये गए फिर भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैर के सिवा कुछ कहना गवारा न किया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्ज़ किया : ख़ुदाया عَزَّوَجَلَّ ! मेरी क़ौम को मुआ़फ़ फ़रमा कि वोह मुझे जानती नहीं।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मेरे मां-बाप कु़रबान ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तवाज़ोअ़ व इन्किसार इस ह़द को पहुंचा हुवा था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

हमारी हम नशीनी इख़्तियार की, हम में निकाह़ किया, हमारे साथ खाना तनावुल फ़रमाया, भेड़ के बालों (ऊन) का कपड़ा पहना, जानवरों की सुवारी की, किसी को अपने पीछे भी सुवार करना पसन्द कर लिया और अपना खाना ज़मीन पर रखना गवारा किया, येह सब कुछ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तवाज़ोअ़ था, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ से राज़ी हो ऐ उ़मर ! ऐ वोह जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की और ऐ वोह ! जिस से खुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मह़ब्बत रखी ।

ग़मे हिज्र : ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बड़ी मह़ब्बत थी, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जब विसाल हो गया तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मदीने की गलियों में येह कहते फिरते थे कि लोगो ! तुम ने कहीं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा है तो मुझे भी दिखा दो या मुझे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पता बता दो । फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इस ग़मे हिज्र में मदीने को छोड़ कर मुल्के शाम के शह्‌र ह़लब में चले गए। एक साल के बा'द आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया कि ऐ बिलाल (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) ! तुम ने हम से मिलना क्यूं छोड़ा ? क्या तुम्हारा दिल हम से मिलने को नहीं चाहता ?

ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه येह ख़्वाब देख कर, लब्बैक या सय्यिदी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐ आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! गुलाम ह़ाज़िर है, कहते हुए उठे और उसी वक़्त रात ही को ऊंटनी पर सुवार हो कर मदीने को चल पड़े । रात दिन बराबर चल कर मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुए । ह़ज़रते बिलाल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

पहले सीधे मस्जिदे नबवी (عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) पहुंचे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ढूंडा, मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देखा, फिर हुजरों में तलाश किया जब वहां भी न मिले तब मज़ारे अन्वर पर हाज़िर हुए और रो कर अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ह़लब से गुलाम को येह फ़रमा कर बुलाया कि हम से मिल जाओ और जब बिलाल ज़ियारत के लिये हाज़िर हुवा तब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर्दे में छुप गए। येह कह कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हो कर क़ब्रे अन्वर के पास गिर गए, बहुत देर में जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को होश आया तो लोग क़ब्रे अन्वर से उठा कर बाहर लाए।

इस अ़र्से में ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आने का सारे मदीने में गुल हुवा कि आज रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुअज़्ज़िन बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए हैं। सब ने मिल कर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरख़्वास्त की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दफ़्अ़ा वोह अज़ान सुना दो जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सुनाते थे। बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे, दोस्तो ! येह बात मेरी ताक़त से बाहर है, क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में अज़ान देता था तो जिस वक़्त اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहता था तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सामने आंखों से देख लेता था। अब बताओ कि किसे देखूंगा ? मुझे इस ख़िदमत से मुआफ़ रखो। हर चन्द लोगों ने इस्रार किया मगर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्कार ही किया।

बा'ज़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की येह राए हुई कि बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी का कहना नहीं मानेंगे तुम किसी को भेज कर ह़ज़रते ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को बुला लो, अगर वोह आ कर बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अज़ान की फ़रमाइश करेंगे तो बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़रूर मान जाएंगे, क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के

www.dawateislami.net

अह्ले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم से बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को इ़श्क़ है। येह सुन कर एक साहि़ब जा कर ह़ज़रते ह़सन और हु़सैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُمَا) को बुला लाए। ह़ज़रते हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने आ कर बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ! आज हमें भी वोही अज़ान सुना दो जो हमारे नानाजान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सुनाया करते थे। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने इमामे हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को गोद में उठा कर कहा : तुम मेरे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जिगर पारे हो, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बाग़ के फूल हो, जो कुछ तुम कहोगे मन्ज़ूर करूंगा, तुम्हें रन्जीदा न करूंगा कि इस त़रह़ हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मज़ारे मुबारक में रन्ज पहुंचेगा और फिर फ़रमाया : हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मुझे ले चलो जहां कहोगे अज़ान कह दूंगा।

ह़ज़रते हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का हाथ पकड़ कर आप को मस्जिद की छत पर खड़ा कर दिया। बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अज़ान कहना शुरूअ़ की اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ ! मदीनए मुनव्वरा में येह वक़्त अ़जब ग़म और सदमे का वक़्त था। आज महीनों के बा'द अज़ाने बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की आवाज़ सुन कर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुन्यवी ह़याते मुबारक का समां बंध गया। बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की अज़ान सुन कर मदीनए मुनव्वरा के बाज़ार व गली कूचों से लोग आ कर मस्जिद में जम्अ़ हुए, हर एक शख़्स घर से निकल आया। पर्दे वाली औ़रतें बाहर आ गईं, अपने बच्चों को साथ लाईं। जिस वक़्त बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने اَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوۡلُ اللّٰہِ मुंह से निकाला हज़ारहा चीख़ें एक दम निकलीं उस वक़्त रोने का कोई ठिकाना न था। औ़रतें रोती रहीं, बच्चे अपनी माओं से पूछते थे कि तुम बताओ : बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ मुअज़्ज़िने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो आ गए, मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना कब तशरीफ़ लाएंगे ?

www.dawateislami.net

हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ मुंह से निकाला और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आंखों से न देखा तो ग़मे हिज्र में बेहोश हो कर गिर गए और बहुत देर के बा'द होश में आ कर उठे और रोते रहे। फिर मुल्के शाम चले गए।

(مدارج النبوت،باب دھم،درذکر مؤذنین...الخ،ج ۲،ص ۵۸۳)

रौज़ए रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पर :** हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में एक औ़रत हाज़िर हुई और आ कर अ़र्ज़ किया कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत करा दो, हज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हुजरए शरीफ़ा खोला, उन्हों ने ज़ियारत की और ज़ियारत कर के रोती रहीं और रोते रोते इन्तिक़ाल फ़रमा गईं। رضی اللہ تعالٰی عنہا وارضاھا عنا

(الشفاء للقاضی عیاض، کتاب فی لزوم محبتہ علیہ السلام، فصل فیما روی....الخ، ج۲،ص ٤٤)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की नज़र में

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा बा वक़ार थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर अदा पुर वक़ार थी।

(हज़रते ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ामोशी, हिल्म और कुव्वत, तफ़क्कुर और तदब्बुर की आईनादार थी।

(हज़रते इब्ने अबी हाला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कलाम में तरतील व तरसील की सिफ़त थी या'नी ठहर ठहर कर गुफ़्तगू फ़रमाते थे।

(हज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

www.dawateislami.net

रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर्दा नशीन कंवारी लड़कियों से ज़ियादा बा हया थे, जब आं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी चीज़ से कराहत फ़रमाते तो हम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर से पहचान लेते। (हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हया की वज्ह से किसी के चेहरे पर नज़रें जमा कर बात न करते थे। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्रूह बातों का ज़िक्र इशारे किनाए में फ़रमा देते।

(हज़रते अम्र बिन अल आस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से ख़ुश कलामी फ़रमाते, उन में मिल जुल कर बैठते और उन के बच्चों को गोद में बिठाते और प्यार करते।

(हज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

आं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मुसाफ़हा फ़रमाते और जो कोई हाज़िरे ख़िदमत होता उस की इ़ज़्ज़त करते। (हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

सहाबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم आं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाजत मन्द बन कर हाज़िर होते, शिकम सेर हो कर रुख़्सत होते और फ़क़ीह बन कर निकलते। (हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

ज़मानए जाहिलिय्यत में भी लोग आं हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास अपने मुक़द्दमात फ़ैसले के लिये ले जाते।

(हज़रते रबीअ़ इब्ने ख़ुसैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

(نسیم الریاض،القسم الاول،فصل واما عدله،ج۲،ص۳۷۸)

आं हज़रत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसे हाल में विसाल फ़रमाया कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले ख़ाना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने कभी जव से पेट न भरा था। (हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ)

www.dawateislami.net

हम आले मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का येह ह़ाल था कि एक एक महीना घर में आग तक रोशन न होती थी, सिर्फ़ खजूर और पानी पर गुज़ारा होता था। (ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا)

(شمائل الترمذی،باب ماجاء فی عیش النبی ،الحدیث:۳۷۱، ج۵،ص ۵۷۳)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी इबादत फ़रमाया करते थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पाए मुबारक मुतवर्रिम हो जाते। (ह़ज़रते मुग़ीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

(صحیح البخاری،کتاب التھجد،باب قیام النبی حتی ترم قدماہ، الحدیث: ۱۱۳۰،ج۱ص ۳۸۴)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया गया : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इतनी नमाज़ क्यूं पढ़ा करते हैं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ? (ह़ज़रते अबू सलमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

(المرجع السابق)

एक दफ़्आ़ मैं ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवा। आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ रहे थे और आप के सीनए मुबारक से ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे हंडिया पक रही हो। (ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन शख़्ख़ीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों में से बेहतरीन शख़्स को मुन्तख़ब किया जो सब से ज़ियादा आ़ली नसब, रास्त गुफ़्तार और शरीफ़ुन्नफ़्स था और वोह तमाम आ़लम का इन्तिख़ाब था صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। (ह़ज़रते साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

आं ह़ज़रत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न फ़ोह़्श गो थे, न ला'नत करने वाले थे और न गाली देने वाले थे। (ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

www.dawateislami.net

आं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीमार की इयादत करते, जनाज़े के साथ चलते, अगर कोई गुलाम दा'वत करता तो उसे क़बूल फ़रमाते । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब लोगों से बेहतर, सब से ज़ियादा सख़ी और सब से ज़ियादा शुजाअ़ थे ।

(हज़रते अनस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

आं हज़रत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तवाज़ोअ़ व इन्किसारी देख कर मुझे यक़ीन हो गया कि आप पैग़म्बर हैं बादशाह नहीं ।

(हज़रते अ़दी बिन हातिम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम लोगों से ज़ियादा सख़ी और फ़य्याज़ थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत का ज़ुहूर रमज़ानुल मुबारक में सब से ज़ियादा होता था ।

(हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (रिह़लत के वक़्त) न कोई दीनार छोड़ा न कोई दिरहम, न बकरी न ऊंट ।

(हज़रते उम्मुल मुअमिनीन आइशा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا)

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तर्के में सिवाए हथियारों और एक ख़च्चर के कुछ न छोड़ा ।

(हज़रते उ़मर बिन हारिस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

मैं ने मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक ऐसा शख़्स पाया जो नेकियों के करने का और शर से बचने का हुक्म देता है ।

(हज़रते अनीस رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ, बरादरे अबू ज़र गिफ़ारी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

जब घमसान का रन पड़ता और लड़ने वालों की आंखों में ख़ून उतर आता, उस वक़्त हम नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ओट लिया करते थे और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम सब से आगे दुश्मन की जानिब हुवा करते थे । (हज़रते अ़ली رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ)

(نسیم الریاض، القسم الاول، فصل واما الشجاعة...الخ، ج۲، ص۳۰۱)

जो आं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अव्वल नज़र देख लेता, मरऊ़ब हो जाता और जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजालिस में बैठता उस को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत हो जाती। अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मद्ह़ ख़्वां येह कह दे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा न कभी पहले देखा और न आयिन्दा देखने की उम्मीद है तो कुछ मुबालग़ा नहीं।

(ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

अ़क़्ल मन्दों पर वाज़ेह़ हो चुका है कि जनाबे मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم न शाइर हैं न जादूगर, इन का कलाम रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ की वह़ी है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त हर शख़्स पर वाजिब है।

(ह़ज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

वोह हर ख़ूबी से आरास्ता हैं, हर ख़ुल्क़े करीम से मुम्ताज़ हैं, त़मानिय्यत उन का लिबास, नेकी उन का शिआ़र है। उन का ज़मीर तक़्वा है, उन का कलाम ह़िक्मत है, सिद्क़ो वफ़ा उन की फ़ित़रत है, अ़फ़्वो एह़सान उन की आ़दत है, अ़द्ल उन की सीरत है, सच्चाई उन की शरीअ़त है हिदायत उन की रहनुमा है, मज़हब उन का इस्लाम है और अह़मद उन का नाम है। صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। (सह़ाबिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ)

बारगाहे रिसालत में सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का ख़िराजे अक़ीदत

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

لما رأیت نبینا متجدلا ضاقت علی بعرضهن الدور

فارتاع قلبی عند ذاك لهلکه و العظم منی ما حییت کسیر

یالیتنی من قبل مهلك صا غیبت فی جدث علی صخور

(شرح العلامة الزرقانی،المقصد العاشر،الفصل الاول فی اتمامه ...الخ،ج۱۲،ص۱۵۱)

तर्जमा :

﴿1﴾ जब मैं ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वफ़ात याफ़्ता देखा तो मकानात अपनी वुस्अ़त के बा वुजूद मुझ पर तंग हो गए।

﴿2﴾ उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात से मेरा दिल लरज़ उठा और ज़िन्दगी भर मेरी हड्डी शिकस्ता रहेगी।

﴿3﴾ काश ! मैं अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल से पहले क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया होता और मुझ पर पथ्थर होते।

हज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

وقد بدأنا فکذب بنا فقال لنا صدق الحدیث نبی عنده الخبر

وقد ظلمت ابنة الخطاب ثم هدیٰ ربی عشیة قالوا قد صبا عمر

لما دعت ربها ذاالعرش جاهدة والدمع من عینها عجلان یبتدر

فقلت اشهد ان الله خالقنا وأن احمد فینا الیوم مشتهر

نبی صدق اتیٰ بالحجة من ثقة وافی الاما نة مافی وعده خور

(سیرت ابن اسحاق،ج۲،ص۱۵۳)

www.dawateislami.net

तर्जमा :

﴾1﴿ और हम पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आग़ाज़े तब्लीग़ की जिस की हम ने तक्ज़ीब की तो ख़बर रखने वाले नबी ने हम से सच्ची बात कही।

﴾2﴿ मैं ने बिन्ते ख़त्ताब पर ज़ियादती की फिर मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने उस शाम को मुझे हिदायत दी जब लोगों ने कहा कि उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) आबाई दीन से निकल गया है।

﴾3﴿ और फिर जब उस ने दिलसोज़ी से अपने रब عَزَّوَجَلَّ को पुकारा और उस की आंखों से आंसू बड़ी तेज़ी से रवां थे।

﴾4﴿ तो मैं ने कहा कि मैं इस बात की गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा ख़ालिक़ है और अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज हमारे दरमियान मश्हूर व मुतआ़रिफ़ हैं।

﴾5﴿ कि वोह सच्चे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं जो मुस्तनद दलील व बुरहान लाए और वोह अमानत दार हैं उन के वा'दे कमज़ोर नहीं।

ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

رسول عظیم الشان یتلو کتابه　　له کل من یبغی التلاوة وامق

محب علیه کل یوم حلاوة　　وان قال قولا فالذی قال صادق

(سیرت ابن اسحاق، ج۲، ص۱۵۹)

तर्जमा :

﴾1﴿ वोह अ़ज़ीमुल मर्तबत रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उस किताब की तिलावत फ़रमाते हैं कि हर पढ़ने वाला उस का आ़शिक़ हो जाए।

﴾2﴿ वोह मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं उन पर हर रोज़ ह़लावत व ताज़गी है और अगर कोई बात कहें तो यक़ीनन वोह सच्ची है।

हज़रते अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم

فامسى رسول الله قد عز نصره　　وكان رسول الله ارسل با لعدل
فجاء بفرقان من الله منزل　　مبينة آيا ته لذوى العقل
فآ من اقوام بذاك ايقنوا　　فامسوا بحمدالله مجتمعى الشمل
وانكر اقوام فزاغت قلوبهم　　فز ادهم ذوالعرش خبلا على خبل

(السيرة النبوية لابن هشام،ماقيل من الشعر فى يوم بدر، ج٣،ص١٢)

तर्जमा :

﴾1﴿ यौमे बद्र रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ूब ताईद व नुस्रत हुई और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़द्लो इन्साफ़ के साथ मबऊ़स किये गए ।

﴾2﴿ वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल कर्दा फ़ुरक़ाने ह़मीद ले कर आए जिस की आयात अरबाबे दानिश के लिये रोशन व वाज़ेह़ हैं ।

﴾3﴿ तो इस पर बहुत से लोग ईमान लाए और इस का यक़ीन किया जिस की वज्ह से वोह بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰی मरबूत़ व मुनज़्ज़म हो गए ।

﴾4﴿ और कुछ लोग इस से मुन्किर हुए तो उन के दिलों में कजी आ गई और रब्बे अ़र्श عَزَّوَجَلَّ ने भी उन की तबाहियों में इज़ाफ़ा कर दिया ।

ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

حمدت الله حين هدىٰ فؤادى　　الى الا سلام و الدين الحنيف
لدين جاء من رب عزيز　　خبير بالعباد بهم لطيف
اذا تليت رسائله علينا　　تحدر دمع ذى اللب الحصيف
واحمد مصطفى فينا مطاع　　فلا تغشوه بالقول العنيف
فلا والله نسلمه لقوم　　ولما نقض فيهم بالسيوف

(سيرت ابن اسحاق، ج٢،ص١٥٣)

www.dawateislami.net

तर्जमा :

﴾1﴿ मैं ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द की जब उस ने इस्लाम और दीने ह़नीफ़ की राह दिखाई ।

﴾2﴿ वोह दीन जो बन्दों पर लुत़्फ़ फ़रमाने वाले और उन की ख़बर रखने वाले रब्बे अ़ज़ीज़ का है ।

﴾3﴿ जब उस के पैग़ाम हमें सुनाए गए तो दूर अन्देश व अ़क़्ल वालों के आंसू रवां हो गए ।

﴾4﴿ अह़मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे दरमियान फ़रमां रवा हैं तो उन के ह़ुज़ूर सख़्त कलामी से न पेश आओ ।

﴾5﴿ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम उन्हें मुख़ालिफ़ीन के सिपुर्द नहीं करेंगे अभी तो हम ने उन के दरमियान तलवारों का फ़ैसला भी जारी न किया ।

ह़स्सान बिन साबित अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

واحسن منك لم ترقط عينى و اجمل منك لم تلد النساء

خلقت مبرأ من كل عيب كانك قد خلقت كما تشاء

तर्जमा :

﴾1﴿ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा ह़सीन न कभी मेरी आंखों ने देखा और न ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ज़ियादा ख़ूब सूरत किसी मां ने जना ।

﴾2﴿ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर ऐ़ब से पाक पैदा फ़रमाए गए गोया आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तख़्लीक़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ हुई ।

وشق له من اسمه كى يجله فذو العرش محمود و هذا محمد

نبى اتانا بعد ياس و فترة من الرسل والا وثان فى الارض تعبد

www.dawateislami.net

فامسیٰ سراجاً مستنیراًوھادیا یلوح کما لاح الصقیل المھند

وانذرنا نارا و بشر جنة وعلمنا الاسلام فاللہ نحمد

तर्जमा :

﴾1﴿ उस ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इज्लालो इक्राम के लिये अपने नाम से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम मुश्तक़ किया तो रब्बे अ़र्श عَزَّوَجَلَّ मह़मूद है और येह मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।
﴾2﴿ येह नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बड़ी ना उम्मीदी और रसूलों عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के एक त़वील वक़्फ़े के बा'द हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि ज़मीन पर बुतों की परस्तिश हो रही थी।
﴾3﴿ तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोशन चराग़ और हादी व रहबर बन कर इस त़रह़ चमके जैसे सैक़ल कर्दा हिन्दी तलवार चमकती है।
﴾4﴿ हमें जहन्नम का डर सुनाया और जन्नत की बिशारत दी और हमें इस्लाम की ता'लीम दी तो हम ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ही की ह़म्द बयान करते हैं।

ھجوت محمدًا واجبت عنہ وعند اللہ فی ذاك الجزاء

اتھجوہ ولست لہ بکفء فشر کما لخیرکما الفداء

ھجوت مبارکا برا حنیفا امین اللہ شیمتہ الوفاء

امن یھجو رسول اللہ منکم و یمدحہ و ینصرہ سواء

فان ابی و والدہ وعرضی لعرض محمد منکم وقاء

(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام،شعر حسان فی فتح مکۃ،ج ٤،ص ٣٥٩)

तर्जमा :

﴾1﴿ तूने मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिज्व की तो मैं ने उन की त़रफ़ से तुम्हें जवाब दिया और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के यहां इस में अज्रो सवाब है।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ तू इन की हिजू करता है जब कि तू इन के बराबर नहीं। तुम में का बुरा (या'नी तू) भले पर (या'नी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर) क़ुरबान हो।

﴾3﴿ तूने ऐसे को बुरा कहा जो मुबारक, पाक बाज़, हनीफ़, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के अमीन हैं जिन की ख़स्लत वफ़ादारी है।

﴾4﴿ क्या तुम में का जो रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हिजू करे और जो इन की मद्हो सिताइश और इन की हिमायत करे दोनों बराबर हैं ?

﴾5﴿ मेरे बाप दादा, मेरी इज़्ज़त व आबरू मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इज़्ज़त व हुरमत के लिये ढाल है।

و هل عدلت يوما رزية هالك — رزية يوم مات فيه محمد

فبوركت يا قبر الرسول و بوركت — بلاد ثوى فيها الرشيد المسدد

وما فقد الماضون مثل محمد — ولا مثله حتى القيامة يفقد

وليس هوای نازعا عن ثنائه — لعلی به فی جنة الخلد اخلد

مع المصطفى ارجو بذاك جواره — وفی نیل ذاك اليوم اسعى و اجهد

(السيرة البنوية لابن هشام،شعرحسان بن ثابت فى مرثيته، ج٤،ص٥٥٩-٥٦١)

तर्जमा :

﴾1﴿ क्या किसी मरने वाले की मुसीबत का दिन उस दिन के बराबर है जिस में मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इन्तिक़ाल हुवा।

﴾2﴿ तुझे मुबारक बाद है ऐ क़ब्रे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और उस शहर को भी जिस में हिदायत व दुरुस्ती वाले रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आसूदए ख़ाक हैं।

www.dawateislami.net

﴾3﴿ न ज़मानए माज़ी वालों को मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसे (अ़ज़ीम व जलील) की वफ़ात का सदमा हुवा न क़ियामत तक किसी को ऐसा सदमा होगा।

﴾4﴿ मेरा दिल उन की ना'त से बाज़ रहने वाला नहीं शायद इसी के सदक़े मुझे जन्नतुल ख़ुल्द में दवाम नसीब हो।

﴾5﴿ इसी के सबब तो मैं मुहम्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब का उम्मीद वार हूं और वोही दिन पाने के लिये मैं कोशिश व मेह़नत कर रहा हूं।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

روحی الفداء لمن اخلاقه شهدت   بانه خیر مولود من البشر

عمت فضائله کل العباد کما   عم البریة ضوء الشمس و القمر

انی تفرست فیك الخیر اعرفه   و الله یعلم عن ماخاننی البصر

انت النبی فمن یحرم شفاعته   یوم الحساب فقد ازری به القدر

فثبت الله ماآتاك من حسن   تثبیت موسیٰ و نصراکا لذی نصر

(وسیلة الاسلام، ج۱، ص۸۷۔الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ج۳، ص۴۰۰)

तर्जमा :

﴾1﴿ मेरी रूह़ उस पर क़ुरबान जिस के अख़्लाक़ इस बात के गवाह हैं कि वोह ख़ैरुल बशर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है।

﴾2﴿ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह़सानात सारे बन्दों पर आ़म हैं जैसे आफ़्ताब व माहताब की रोशनी सारी मख़्लूक़ को आ़म है।

﴾3﴿ मैं ने ग़ौर कर के आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दर भलाई देख ली जिसे मैं पहचानता हूं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जानता है कि मेरी आंखों ने मुझ से ख़ियानत नहीं की।

﴿4﴾ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नबी हैं जो शख़्स बरोज़े क़ियामत आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से महरूम हुवा उसे क़िस्मत ने ज़लीलो रुस्वा कर दिया।

﴿5﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जो भलाई दी उसे क़ाइम रखे जैसे मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के साथ हुवा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद करे जैसे उन की मदद हुई।

हज़रते का'ब बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

نبئت ان رسول الله اوعدنی — والعفو عند رسول الله مأمول

فقد اتیت رسول الله معتذرا — والعذر عند رسول الله مقبول

ان الرسول لنور یستضاء به — مهند من سیوف الله مسلول

(السیرة البنویة لابن هشام،امر کعب بن زهیر، ج٤،ص٤٣٣، ٤٣٥)

तर्जमा :

﴿1﴾ मुझे ख़बर दी गई कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे क़त्ल की वईद फ़रमाई है और रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यहां तो (मुझे) अ़फ़्वो दर गुज़र की ही उम्मीद है।

﴿2﴾ तो मैं रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यहां मा'ज़िरत के साथ ह़ाज़िर हो गया हूं और मा'ज़िरत रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मक़्बूल है।

﴿3﴾ बेशक रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसे नूर हैं जिस से रोशनी ह़ासिल की जाती है और वोह ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की तलवारों में से एक बे नियाम हिन्दी तलवार हैं।

हज़रते अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

یا خاتم النبآء انك مرسل — بالحق کل هدی السبیل هدا کا

ان الاله بنی علیك محبة فی — خلقه و محمدا سما کا

(السیرة النبویة لابن هشام،غزوة حنین فی سنة ثمان بعد الفتح،شعر اخر لعباس بن مرداس، ج٤،ص٣٩٠)

तर्जमा :

﴾1﴿ ऐ ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हक़ के साथ मब्ऊ़स हुए । राहे हक़ की हिदायत आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की हिदायत है ।

﴾2﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ऊपर अपनी मख़्लूक़ में महब्बत की बुन्याद रखी और आप का नाम मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) रखा ।

ह़ज़रते मालिक बिन औफ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

ما ان رایت ولا سمعت بمثله   فی الناس کلھم بمثل محمد

اوفی و اعطی للجزیل اذا اجتدیٰ   ومتی تشاء یخبرك عما فی غد

(المقتفی فی سیرت المصطفی، ج ۱، ص ۲۱٤)

तर्जमा :

﴾1﴿ सारे इन्सानों में मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा किसी को न देखा और न सुना ।

﴾2﴿ जब उन से मांगा जाए तो ख़ूब देने वाले हैं और तुम जब चाहो वोह तुम्हें आयिन्दा की ख़बर दे दें ।

ह़ज़रते अबू सुफ्यान बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

لقد عظمت مصیبتنا و جلت   عشیة قیل قد قبض الرسول

فقد نالوحی و التنزیل فینا   یروح به و یغدو جبرئیل

نبی کان یجلو الشك عنا   بما یوحی الیه وما یقول

و یھدینا فلانخشی ضلالاً   علینا و الرسول لنا دلیل

أ فاطم! ان جزعت فذاك عذر   و ان لم تجزعی ذاك السبیل

فقبر ابیك سید کل قبر   وفیه سید الناس الرسول

(روض الانف مع سیرت ابن ھشام(مترجم)، ج ٤، ص ٦٨١)

www.dawateislami.net

तर्जमा :

﴾1﴿ उस शाम हम पर बड़ी मुसीबत आई जब कहा गया कि रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वफ़ात पा गए ।

﴾2﴿ वही व तन्ज़ील जिसे जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام सुब्ह़ो शाम लाते थे हम उस से मह़रूम हो गए ।

﴾3﴿ वोह नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की वही और अपने अक़्वाल के ज़रीए़ हमारे शुकूक दूर फ़रमाते थे ।

﴾4﴿ और हमारी रहबरी करते थे तो हमें अपने ऊपर गुमराही का ख़ौफ़ न होता जब कि ख़ुद रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे रहबर व रहनुमा हैं ।

﴾5﴿ ऐ फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ! आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रोईं तो मा'ज़ूर हैं और न रोईं तो येह भी बेहतर राह है ।

﴾6﴿ आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के वालिदे गिरामी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र हर क़ब्र की सरदार है और इस में तमाम लोगों के सरदार रसूले बा वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा हैं ।

आ'राबी

يا خير من دفنت بالقاع اعظمه　　　فطاب من طيبهن القاع والاكم

نفسى الفداء بقبر انت ساكنه　　　فيه العفاف وفيه الجود والكرم

तर्जमा :

﴾1﴿ ऐ सब से बेहतर उन में जिन की हड्डियां ज़मीन में दफ़्न हुई तो इन की ख़ुश्बू से चटयल मैदान और टीले ख़ुश्बूदार हो गए और महक उठे ।

﴾2﴿ मेरी जान क़ुरबान हो उस क़ब्र पर जिस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा हैं कि उसी में इफ़्फ़त व पाक दामनी और जूदो करम है ।

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا

فلو سمعوا فی مصر اوصاف خده لما بذلوا فی سوم یوسف من نقد

لواحی زلیخا لورأین جبینه لآثرن بالقطع القلوب علی الایدی

(شرح العلامة الزرقانی،عائشةام المؤمنین،ج٤،ص٣٩٠)

तर्जमा :

﴾1﴿ अगर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़्सारे मुबारक के औसाफ़ अह्ले मिस्र सुन पाते तो जनाबे यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ीमत लगाने में सीमो ज़र न बहाते।

﴾2﴿ अगर ज़ुलेख़ा को मलामत करने वाली औ़रतें आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जबीने अन्वर देख पातीं तो हाथों के बजाए अपने दिल काटने को तरजीह़ देतीं।

हज़रते फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا

ماذا علی من شم تربة احمد ان لایشم مدی الزمان غوالیا

صبت علی مصائب لو انّها صبت علی الایام صرن لیالیا

(الوفا باحوال المصطفی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلم(مترجم)،باب٤٠،بعدازوصال حضرت فاطمہ رضی اللہ عنہا کی کیفیت،ص٨٣١)

तर्जमा :

﴾1﴿ जिस ने क़ब्रे रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ाक सूंघ ली अगर वोह ज़माने भर गिरां क़ीमत इ़त्रों और ख़ुश्बूओं को न सूंघे तो कोई नुक़्सान की बात नहीं (या'नी उसे वोही ख़ुश्बू काफ़ी है और किसी ख़ुश्बू की अब उसे कोई ज़रूरत नहीं)।

﴾2﴿ मुझ पर ऐसे मसाइब टूटे कि अगर वोह दिनों पर टूटते तो वोह रातें बन जाते।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

الا یارسول اللہ کنت رجاء نا　　وکنت بنا براً ولم تك جافیا

وکنت رحیما ھادیا ومعلما　　لیبك علیك الیوم من کان باکیا

فدی لرسول اللہ امی وخالتی　　وعمی وآبائی ونفسی ومالیاً

(حجۃاللہ علی العلمین، قسم الرابع،الباب الاول،ص۵۱۰)

तर्जमा :

﴾1﴿ या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी उम्मीद और हमारे साथ अच्छा सुलूक करने वाले थे बद सुलूकी वाले न थे।

﴾2﴿ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेह्रबान, राहनुमा और मुअ़ल्लिम थे, रोने वाले को चाहिये कि आज आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर रोए।

﴾3﴿ मेरी मां, मेरी ख़ाला, मेरे चचा, मेरे आबाओ अज्दाद, मेरी जानो माल सब कुछ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान हों।

बनाते मदीना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ

طلع البدر علینا　　من ثنیات الوداع

وجب الشکر علینا　　ما دعا للہ داع

ایھا المبعوث فینا　　جِئت بالامر المُطاع

(الوفاء الوفا،الفصل الحادی عشر،ج۱،ص۲۶۲)

तर्जमा :

﴾1﴿ वदाअ़ की घाटियों से बद्रे कामिल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुलूअ़ हुवा।

﴾2﴿ हम पर शुक्र बजा लाना वाजिब हुवा जब तक खुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये कोई दा'वत देने वाला दा'वत देता रहे।

﴾3﴿ ऐ हमारे दरमियान मबऊ़स होने वाले आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह हुक्म ले कर तशरीफ़ लाए जिस की इत़ाअ़त की जाए।

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

نمبرشمار	نام کتاب	مطبوعہ
۱	التفسیر الکبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت
۲	الدرالمنثور	دارالفکربیروت
۳	صحیح البخاری	دارالکتب العلمیة بیروت
۴	صحیح مسلم	دارابن حزم بیروت
۵	سنن ابی داود	داراحیاء التراث العربی بیروت
۶	سنن الترمذی	دارالفکربیروت
۷	سنن النسائی	دارالجیل بیروت
۸	سنن ابن ماجه	دارالمعرفة بیروت
۹	المسند للامام احمد بن حنبل	دارالفکر بیروت
۱۰	المؤطا للامام مالک	دارالمعرفة بیروت
۱۱	مشکاة المصابیح	دارالفکر بیروت
۱۲	حلیة الاولیاء	دارالکتب العلمیة بیروت
۱۳	فتح الباری شرح صحیح البخاری	دارالکتب العلمیة بیروت
۱۴	اشعة اللمعات شرح مشکاة المصابیح	المکتبة الرشیدیة کوئٹه
۱۵	شرح العلامة الزرقانی علی المواهب	دارالکتب العلمیة بیروت
۱۶	الوفا باحوال المصطفٰی	حامد اینڈ کمپنی لاهور
۱۷	شواهد النبوة (فارسی)	مکتبة الحقیقة ترکی

۱۸	السيرة النبوية لابن هشام	دارالمعرفة بيروت
۱۹	الطبقات الكبرى لابن سعد	دارالكتب العلمية بيروت
۲۰	الاستيعاب فى معرفة الاصحاب	دارالكتب العلمية بيروت
۲۱	الاصابة فى تمييز الصحابة	دارالكتب العلمية بيروت
۲۲	اسد الغابة	داراحياء التراث العربى بيروت
۲۳	الخصائص الكبرى	دارالكتب العلمية بيروت
۲۴	وفاء الوفا باخبار دار المصطفى	داراحياء التراث العربى بيروت
۲۵	مدارج النبوة	دارالكتب العلمية بيروت
۲۶	روض الانف (مترجم)	ضياء القرآن لاهور
۲۷	المواهب اللدنية للقسطلانى	مركز اهلسنت بركات رضا
۲۸	دلائل النبوة لابى نعيم (مترجم)	ضياء القرآن لاهور
۲۹	الادب المفرد	دارالحديث ملتان
۳۰	شرح الشفاء مع شرحه للملاعلى القارى	دارالكتب العلمية بيروت
۳۱	المقتفى فى سيرة المصطفى	دار الحديث قاهره
۳۲	سيرت ابن اسحاق	معهد الدراسات والابحاث للتعريب بيروت
۳۳	وسيلة الاسلام	دارالعرب اسلامى بيروت

हर सहाबिये नबी

“जन्नती–जन्नती”

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इल्मिय्या शो'बए इस्लाही कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा 33 कुतुबो रसाइल

01...... गौसे पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ के हालात (कुल सफ़हात : 106)	02...... तकब्बुर (कुल सफ़हात : 97)
03...... फ़रामीने मुस्तफ़ा صلّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم (कुल सफ़हात : 87)	04...... बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)
05...... तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)	06...... नूर का खिलौना (कुल सफ़हात : 32)
07...... आ'ला ह़ज़रत की इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 49)	08...... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
09...... इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात :32)	10......रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)
11...... क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 262)	12...... उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़हात : 48)
13...... तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)	14...... फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)
15...... अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)	16...... तरबियते औलाद (कुल सफ़हात : 187)
17...... काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : 63)	18...... टीवी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
19...... त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)	20...... मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
21..... फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़हात : 120)	22...... शर्ह़ शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)
23...... नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)	24...... ख़ौफ़े ख़ुदा عزّ وجلّ (कुल सफ़हात : 160)
25...... तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)	26...... इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
27...... आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)	28...... क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़हात : 115)
29...... फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)	30...... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)
31...... जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)	32...... काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
33...... आदाबे मुर्शिदे कामिल (कुल सफ़हात : 275)	

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إن شاء الله عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

याद दाश्त

दौराने मुताआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إن شاء الله عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

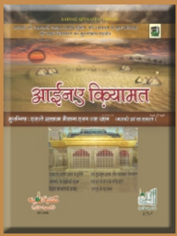

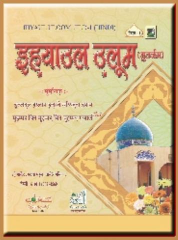

0148627

DAWAT-E-ISLAMI

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

۞ **देहली** :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

۞ **अह़मदाबाद** :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

۞ **मुम्बई** :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

۞ **हैदराबाद** :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net